प्रभात

अंदर के पन्नों में...

★ शहीदों की जीवनियां 02
★ पूर्वी रीजनल ब्यूरो का वक्तव्य 31
★ किसानों की जीत 33
★ कैंप विरोधी संघर्षों का सिलसिला 35
★ सुरजागढ़ आंदोलन 40
★ नरसंहार के दोषियों को सजा दो 41
★ कोबड घैंडी का बहिष्कार 48
★ 24 नवंबर, वैश्विक कार्यदिवस 53

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र

वर्ष–32 अंक–3 अक्टूबर–दिसंबर 2021 सहयोग राशि–15 रुपए

भाकपा (माओवादी) के केंद्रीय कमेटी के सदस्यों कामरेड्स अक्किराजू हरगोपाल व मिलिंद बाबूराव तेलतुमड्डे को लाल सलाम!

पारेवा अमर शहीदों को शत शत नमन!

भारत की क्रांति के आदर्श नेता व भाकपा (माओवादी) के पोलित ब्यूरो सदस्य

कामरेड अक्किराजू हरगोपाल (साकेत) को लालसलाम!

भारत की उत्पीड़ित जनता के प्यारे नेता व भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी के पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड अक्किराजू हरगोपाल की (श्रीनिवास, रामकृष्णा, साकेत, मधु) 14 अक्टूबर, 2021 को किडनी फेल होने के चलते शहादत हुई. उनके निधन से भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को एक बड़ा धक्का लगा. उनके अस्तमय ने क्रांतिकारी शिविर को शोक में डुबा दिया. उन्हें 'प्रभात' विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करता है. उनके परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है. उनके दर्शाए आदर्शों को ऊंचा उठाता है.

राज्यलक्ष्मी और सच्चिदानंदाराव दंपति की चार संतान में से कामरेड हरगोपाल दूसरे बेटे थे. गुंटूर जिले का गुत्तिकोंडा उनके पूर्वजों का गांव था. गुत्तिकोंडा एक ऐतिहासिक गांव है जिसमें भाकपा (माओवादी) के संस्थापक नेताद्वय में से एक कामरेड चारू मजुमदार ने 1969 में आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारियों के साथ गुप्त रूप से बैठक की. उस गुत्तिकोंडा गांव में ही 19 अप्रैल, 1958 को कामरेड हरगोपाल का जन्म हुआ था. उनकी एक बड़ी बहन हैं और एक बड़े भाई और एक छोटे भाई हैं. सदानंदेश्वरराव शिक्षक थे. उनकी नौकरी की वजह से उनका परिवार गुंटूर जिला, पलनाडू क्षेत्र के तुमृकोटा में बस गया था. जनवादी व प्रगतिशील विचारधारा से लैस सदानंदेश्वरराव का प्रभाव बचपन में ही कामरेड हरगोपाल पर पड़ा था. तुमृकोटा में हाइस्कूल पढ़ाई हासिल करने के बाद माचर्ला शहर के एस.के.बी.आर. कॉलेज से उन्होंने स्नातक की पढ़ाई की.

70 दशक में आंध्रप्रदेश में नक्सलबाड़ी राजनीति का प्रभाव जोरों पर था. 1977 में रैडिकल छात्र संगठन के क्रियाकलाप सक्रिय हो गए. पहले से ही प्रगतिशील विचारधारा से प्रभावित हरगोपाल स्वाभाविक रूप से ही क्रांतिकारी क्रियाकलापों के प्रति आकर्षित हो गए. 1977 में उन्होंने 'चलो गांवों की ओर' अभियान में शामिल हुए. 1978 में गुंटूर में आयोजित रैडिकल युवजन संगठन की प्रथम महासभा में शामिल होकर वॉलनटिअर के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएं दी थीं. 1980 से उनका परिवार हैदराबाद में बस गया. वहां एक निजी स्कूल में अपने पिता के साथ शिक्षक बन कर वे बच्चों को गणित पढ़ाते थे. साथ ही ओपन यूनिवर्सिटी में राजनीतिक शास्त्र में एम.ए. करने लगे थे. कुछ वक्त के लिए उन्होंने एक निजी दफ्तर में नौकरी की. उस वक्त कामरेड हरगोपाल ने किडनी समस्या का सामना किया. कुछ वक्त के बाद उनका ऑपरेशन हुआ. उसके बाद क्रांतिकारी आंदोलन के आह्वान के मुताबिक 1982 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. तब से लेकर आखिरी सांस तक वे क्रांति के रास्ते पर अडिग रह कर आगे चलते रहे. उस क्रम में वे पार्टी के सर्वोन्नत ढांचा (केंद्रीय कमेटी) के पोलित ब्यूरो सदस्य बन गए.

1982 से 1986 तक सेंट्रल ऑर्गनाइजर के रूप में गुंटूर जिला, दाचेपल्ली क्षेत्र के गामालपाडू गांव को केंद्र बना कर उन्होंने काम किया. उस गांव में गोपाल के नाम पर शिक्षक के कव्हर में उन्होंने अपने क्रियाकलाप जारी किए. उस क्षेत्र में 'गोपाल गुरूजी' नाम से वे लोकप्रिय हो गए. उस गांव की दलित बस्ती (क्रिष्टियन पालेम) उनके गतिविधियों का केंद्र बन गयी. वे दिन में बच्चों को और रात में बड़ों को पढ़ाते थे. क्रांतिकारी पाठ पढ़ाते हुए उन्होंने जनता में क्रांतिकारी विचारधारा जगा दी. गांवों में दलितों की जिंदगी देख कर वे विचलित होते थे. अपनी क्रांतिकारी जिंदगी में उन्होंने शुरूआत से लेकर आखिरी तक दलित समस्या यानी जातिमुक्ति पर विशेष ध्यान दिया.

दाचेपल्ली क्षेत्र में दलित जनता पर जारी उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष करने के अलावा उनके नेतृत्व में जमीन समस्या, मजदूरी बढ़ाने आदि मांगों को लेकर संघर्ष किए गए. गामालापाडू गांव की बगल में रहे सिमेंट फैक्टरी के मजदूरों को एकत्रित करके उन्होंने कई संघर्षों का नेतृत्व किया. 1983 में माचर्ला में धनलक्ष्मी व नरसारावपेट में अंजम्मा नामक महिलाओं के साथ किए गए अत्याचारों और फिलिप नामक मजदूर की लॉकप हत्या के खिलाफ आरएसयू और आरवाईएल के नेतृत्व में तमाम गुंटूर जिले में जनांदोलन उभर गए. उन आंदोलनों को मार्गदर्शन देने में कामरेड हरगोपाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही. 1985 में कारमचेडू गांव में दबंग जाति के जमींदारी वर्गों द्वारा अंजाम दिए गए दलितों के कत्लेआम के खिलाफ जनता, खासकर दलितों को गोलबंद करके उन्होंने आंदोलनों को संचालित किया.

दिसंबर, 1986 में संपन्न गुंटूर जिले की पार्टी प्लीनम में कामरेड हरगोपाल को जिला कमेटी में लिया गया. जिला कमेटी सदस्य की हैसियत से उन्होंने दाचेपल्ली व बेल्लमकोंडा केंद्रों को मार्गदर्शन देते हुए विशेष कर शहरी व छात्र आंदोलन की जिम्मेदारी निभाई. 1986–87 में नल्लमला जंगली क्षेत्र में आंदोलन का विस्तार करने के लिए योजना बनाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

1988–89 में गुंटूर जिले में कुछ मुख्य संघर्ष सामने आए. गोल्लापेटा में वन विभाग के गार्ड के उत्पीड़न के विरोध में कामरेड हरगोपाल संघर्ष का नेतृत्व किया, जिसके फलस्वरूप उस गार्ड को सजा दी गई. उसके बाद वन विभाग के खिलाफ तमाम पलनाडू (गुंटूर जिला का एक हिस्सा) क्षेत्र में संघर्षों का उभार आया. शराब बंदी संघर्ष, तेंदूपत्ता तोड़ाई की मजदूरी बढ़ानी, मछवारों की समस्याओं का हल आदि मांगों को लेकर संघर्ष किए गए. वन विभाग की जमीन व अनुपजाऊ जमीन व फर्श के पत्थर की खदानों पर भूमिहीन किसानों और उत्पीड़ित जनता का कब्जा कायम करने के लिए संघर्ष किए गए. इन तमाम संघर्षों के चलते विशाल देहाती क्षेत्र में पार्टी का संगठितीकरण हुआ.

1989 तक जिले के छह केंद्रों – दाचेपल्ली, बेल्लमकोंडा, वेल्दुर्ति, दुर्गी, बोल्लापल्ली व पुल्ललचेरुवु इलाकों में 1+1, 1+2, 1+3 दस्तों का गठन किया गया. लगभग 300 गांवों में पार्टी के क्रियाकलापों का विस्तार हुआ. इस तरह पार्टी के विस्तार में कामरेड हरगोपाल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. फरवरी 1989 में कामरेड हरगोपाल ने जिला कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठायी. उस वक्त वे 'श्रीनिवास' के नाम पर लोकप्रिय हो गए. फरवरी 1993 में जिला कमेटी सचिव की जिम्मेदारी से रिलीव होकर दक्षिण तटवर्ती जिलों को मिलाकर गठित किए गए रीजियन कमेटी के सचिव का दायित्व उठाया. उसके बाद संपन्न राज्य प्लीनम में वे राज्य कमेटी के वैकल्पिक सदस्य चुन गए. 1995 में वे राज्य कमेटी सदस्य बन गए.

उन्होंने सूखा ग्रसित पलनाडू क्षेत्र की जनता को सूखा के खिलाफ जारी संघर्षों में संगठित किया. 1990–91 में ऊपरी भाग के पलनाडू क्षेत्र में पानी की समस्या का हल करने के मकसद से दोम्मुर्लागोंदी लिफ्ट इरिगेशन (उत्थान सिंचाई) योजना के लिए संयुक्त मोर्चे के नेतृत्व में संचालित संघर्ष का उन्होंने मार्गदर्शन किया.

चूंकि दाचेपल्ली एरिया के रामापुरम के जमींदारी लोग संशोधनवादी भाकपा में रहते थे, इसलिए वे रामापुरम गांव में क्रांतिकारी नेतृत्व में उभर रहे वर्गसंघर्ष को बर्दाश्त नहीं कर पाए. क्रांतिकारी संघर्ष को रोकने के लिए उन्होंने दलितों पर हमलें करने की योजना बनाई. इसका पहले ही अंदाजा लगाने वाली क्रांतिकारी पार्टी ने प्रतिरोध करने का निर्णय लिया. इसके हिस्से के तौर पर 1993 में उस गांव के अच्चिरेड्डी व अंकिरेड्डी नामक जमींदारों को गुरिल्ला बलों ने खतम किया. इसके बाद 'तुम लोग कारमचेडू को पैदा करें, तो जनता रामापुरमों को जरूर पैदा करेगी' नारा गूंज उठा. इन कार्रवाइयों ने न सिर्फ गुंटूर जिले में बल्कि दक्षिण तटवर्ती इलाके में दलितों के आत्मसम्मान के संघर्षों को जोर दिया.

गुंटूर जिले में विकसित हो रहे क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने के मकसद से एसपी मीना के नेतृत्व में पुलिस बलों ने दाचेपल्ली दस्ते के सदस्य कामरेड कोटेश्वरराव और संगठन के सदस्य कामरेड जयपाल की निर्मम हत्या की. 1 अप्रैल, 1992 को की गई चंद्रवंका मुठभेड़ में कामरेड्स एसन्ना (राजन्ना), रामकृष्णा व माधवीलता के साथ–साथ चार मछुआरों की हत्या की गई. इस मुठभेड़ से कामरेड श्रीनिवास बाल–बाल बच गए. इन हत्याओं के खिलाफ जनांदोलन को बढ़ाने के लिए उन्होंने बेहद प्रयास किया.

1990 में दक्षिण तेलंगाना में संचालित राज्य स्तरीय मिलिटरी कैंप में उन्होंने प्रशिक्षण लिया. बाद में 1992 में गुंटूर, प्रकाशम व कृष्णा जिलों के कमांडरों व ऑर्गनाइजरों के लिए संचालित मिलिटरी प्रशिक्षण शिविर में उन्होंने प्रशिक्षक की जिम्मेदारी निभाई. तटवर्ती जिलों में गुरिल्ला दस्ताओं को सैनिक व सांगठनिक रूप से मजबूत करने के लिए उन्होंने प्रयास किया. मिलिटरी ज्ञान बढ़ाने, गुरिल्ला नियमों पर अमल करने व गुरिल्ला दस्ते के कामकाज में बेहतर बदलाव लाने के लिए वे निरंतर प्रयासरत रहे. एक ओर ग्रामीण क्षेत्र में वर्ग संघर्ष को विकसित करते हुए दूसरी ओर मजदूरों, महिलाओं, छात्रों, युवाओं व बुद्धिजीवियों में क्रांतिकारी आंदोलन के निर्माण के लिए उन्होंने अपनी भूमिका निभाई. ग्रामीण आंदोलन व शहरी आंदोलन का

तालमेल के साथ संचालन करने के लिए उन्होंने दृढ़संकल्प के साथ प्रयास किया.

इंटेलिजेंस सीआई इमान्युएल राजु ने सायी नामक पार्टी के कोरियर को कोवर्ट बना कर राज्य स्तरीय नेतृत्व को गिरफ्तार करवाया. इम्मान्युएल राजु को विजयवाडा होटल में ऑक्शन टीम द्वारा खतम करवाने में कामरेड श्रीनिवास की भूमिका रही.

1993–94 से लेकर 1998 तक पलनाडू क्षेत्र में जमीन आंदोलन जोरों पर जारी रहा था. उसके पीछे कामरेड श्रीनिवास का मार्गदर्शन रहा.

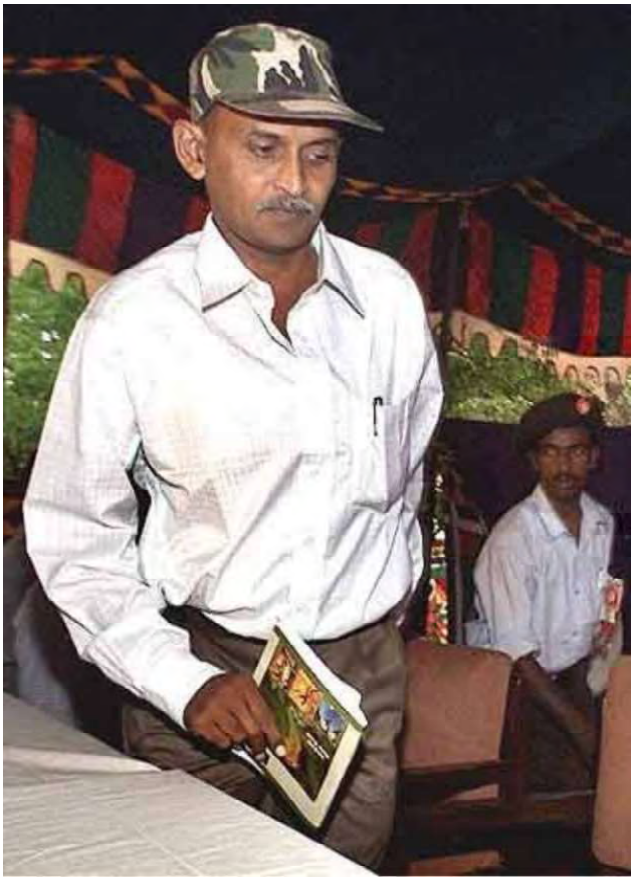

1997 में तत्कालीन राज्य कमेटी सदस्य कमरेड मेकला दामोदर (संजीव) के शहीद होने के बाद एपी राज्य कमेटी के निर्णय के मुताबिक दक्षिण तेलंगाना की जिम्मेदारी को कामरेड श्रीनिवास ने अपने कंधों पर उठाया. उस वक्त दक्षिण तेलंगाना में भीषण दमन जारी था. बड़े पैमाने पर कामरेड्स शहीद होने लगे थे. ऐसे वक्त जनता पर दृढ़ विश्वास के साथ उन्होंने उस अनजान इलाके में कदम रखा. कुछ ही वक्त में वहां की कतारों और जनता का विश्वास व प्यार उन्होंने हासिल किया. आंदोलन के क्रम में वहां सामने आई चुनौतियों का स्वीकार करके उनके हल के लिए वे प्रयासरत रहे.

1997 से 2000 तक उन्होंने दक्षिण तेलंगाना रीजनल कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी निभाई. 1995 में एपी राज्य के अधिवेशन में उत्तर तेलंगाना को अलग किया गया. बाद में एपी राज्य के बाकी क्षेत्र के लिए निर्देशित गुरिल्ला जोन कार्यभारों की परिपूर्ति के लिए उन्होंने अविरल प्रयास किया. लुटेरे शासक वर्गों की राजसत्ता को ध्वस्त करने के मकसद से वर्ग संघर्ष को तेज करते हुए गुरिल्ला जोनों में गुरिल्ला बेसों का निर्माण करने के लिए उन्होंने दृढ़संकल्प के साथ काम किया.

राज्यभर में महिला आंदोलन को मजबूत करने व उसका विस्तार करने के लक्ष्य के साथ 1990 से पार्टी द्वारा विशेष प्रयास की शुरुआत हुई. 1990 के बाद से गुंटूर जिले में महिला आंदोलन को विकसित करने के लिए कामरेड श्रीनिवास ने अधिक प्रयास किया. 1995 से राज्य कमेटी की ओर से उन्होंने महिला क्षेत्र पर विशेष ध्यान देकर पूरे राज्य में महिला आंदोलन को मजबूत करने के लिए उन्होंने प्रयास किया. महिलाओं की समस्याओं का हल करने में पितृसत्ता के सोच विचार का शिकार होने से वे बचते थे. लिंग समानता को ऊंचा उठाते हुए महिला कामरेडों के साथ आत्मीयता के साथ पेश आते हुए उनमें आत्मविश्वास बढ़ाते थे.

आंदोलन में सामने आए गैर सर्वहारा रुझानों के बारे में जनवरी 1999 में संपन्न आंध्र प्रदेश की राज्य प्लीनम में चर्चा करके तमाम पार्टी को सुधारने के लिए राज्य कमेटी ने शिक्षा व भूलसुधार कार्यक्रम बनाया. उसे सफल बनाने में कामरेड श्रीनिवास ने सक्रिय भूमिका निभाई.

2 दिसंबर, 1999 को हमारे प्यारे नेता व केंद्रीय कमेटी के सदस्य कामरेड्स श्याम, महेश व मुरली की चंद्रबाबू के नेतृत्व वाली तत्कालीन तेलुगू देशम सरकार ने एक कोवर्ट ऑपरेशन में हत्या की. उससे तमाम पार्टी को बेहद बड़ा झटका लगा. शहादत के समय कामरेड महेश आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी के सचिव रहे थे और जबकि कामरेड मुरली तेलंगाना राज्य कमेटी के सचिव रहे थे. इसलिए दोनों राज्यों के क्रांतिकारी आंदोलनों को अपुर्णीय क्षति पहुंची. ऐसी कठिन परिस्थिति में आंध्रप्रदेश राज्य के क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए कामरेड श्रीनिवास उस राज्य कमेटी की सचिव जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठायी. राज्य कमेटी के सचिव की हैसियत से उन्होंने उस कमेटी के मुख पत्र 'क्रांति' को तीव्र दमन में भी प्रकाशित करने के लिए कोशिश की.

2001 में संपन्न तत्कालीन पीपुल्सवार पार्टी की 9वीं कांग्रेस में कामरेड श्रीनिवास केंद्रीय कमेटी सदस्य चुन गए.

तत्कालीन मुख्यमंत्री चंद्रबाबू के कार्यकाल में संयुक्त आंध्रप्रदेश विश्व बैंक की नीतियों की प्रयोगशाला बन गया. राज्य को साम्राज्यवादियों के पास गिरवी रखा गया. अपने एजेंडे को आगे ले जाने में कोई अड़चन न आए, इसलिए

क्रांतिकारी आंदोलन पर सरकार द्वारा भीषण दमन का इस्तेमाल किया गया. कामरेड श्रीनिवास के नेतृत्व में उस दमन का राजनीतिक व सैनिक रूप से प्रतिरोध किया गया. उस प्रतिरोध के हिस्से के तौर पर एक्शन टीम द्वारा पुलिस के खूंखार आला अधिकारी उमेश चंद्रा को हैदराबाद में खतम किया गया. मार्च 2000 में आंध्रप्रदेश के गृहमंत्री माधव रेड्डी का खात्मा किया गया. 2003 में तत्कालीन मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायुडू के ऊपर हमला किया गया जिसमें वह घायल होकर बाल–बाल बच गया.

पार्टी द्वारा किए गए राजनीतिक व सैनिक प्रयास के फलस्वरूप राज्य में जनहित बुद्धिजीवियों व मानवाधिकार कार्यकर्ताओं द्वारा मांग उठाई गई कि चूंकि नक्सलवादी समस्या सामाजिक व राजनीतिक समस्या है इसलिए क्रांतिकारी पार्टी के साथ बातचीत करनी चाहिए. हालांकि चंद्रबाबू की सरकार ने उस मांग को नजरअंदाज किया. 2004 में आयोजित विधानसभा चुनावों को नक्सलवादियों पर जनमत संग्रह के तौर पर चंद्रबाबू सरकार द्वारा जोर–शोर से प्रचार किया गया. उसी चुनाव के दौरान कांग्रेस पार्टी द्वारा क्रांतिकारी पार्टी के साथ बातचीत का वादा किया गया. इसका नतीजा यह हुआ कि उन चुनावों में चंद्रबाबू को करार हार का सामना करना पड़ा. जबकि कांग्रेस पार्टी को जीत मिली. राजशेखर रेड्डी के नेतृत्व में सत्तारूढ़ हुई कांग्रेस पार्टी के ऊपर बातचीत के लिए विभिन्न तबकों द्वारा दबाव डाल दिया गाया. उससे मजबूरी में कांग्रेस पार्टी को तत्कालीन पीपुल्सवार व जनशक्ति पार्टियों के साथ बातचीत करने के लिए आगे आना ही पड़ा. बातचीत के लिए दोनों पार्टियों से चुनी गई टीम का कामरेड हरगोपाल ने रामकृष्णा नाम से नेतृत्व किया. बातचीत के दौरान उन्होंने जनता की मूलभूत समस्याओं को सरकार के सामने रखा था. बातचीत के प्रति सरकार की बेईमानदारी रवैये को उन्होंने पर्दाफाश किया. बातचीत से क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में कार्यनीति के तौर पर एक नया अनुभव मिला. उस दौरान दोनों क्रांतिकारी पार्टियों का विलय होकर आविर्भाव होने वाली भाकपा (माओवादी) के गठन के बारे में हैदराबाद में प्रेस वार्ता करके उन्होंने घोषणा की.

एक ओर बातचीत के प्रति सरकार का रैवया जनता में पर्दाफाश होने लगा, दूसरी ओर क्रांतिकारी पार्टी की प्रतिष्ठा बढ़ने लगी. पार्टी के प्रति जनता का विश्वास व प्यार बढ़ने लगा. इसका सहन न करने वाली सरकार बातचीत से मुकर गई. जनवरी 2005 से क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने के लिए सरकार ने अभूतपूर्व ढंग से दमन का सहारा लिया. कामरेड श्रीनिवास को निशाना बना कर कई ऑपरेशन्स किए गए. हालांकि इस भीषण दमन में जनता व पार्टी की कतारों ने उन्हें बचा लिया लेकिन विभिन्न स्तरों के लगभग 150 कामरेडों व क्रांतिकारी जनता की मौतें हुईं. उस वक्त पार्टी द्वारा सही दांवपेंच नहीं अपनाने की वजह से आंध्रप्रदेश राज्य का आंदोलन तात्कालिक सेटबैक का शिकार हुआ. पार्टी के नेतृत्व व कतारों को बचाने के मकसद से राज्य के सचिव सहित कई कामरेडों को पार्टी ने रणनीतिक क्षेत्रों में भेज दिया. उस तरह कामरेड श्रीनिवास 2006 में एओबी पहुंच गए. वहां उनका परिचय साकेत के नाम से हुआ.

विकसित शहरों व मैदानी क्षेत्रों में विभिन्न सामाजिक तबकों की जनता के संघर्षों का मार्गदर्शन करने में अनुभव हासिल करने वाले कामरेड साकेत ने अब एक आदिवासी इलाके में जारी आंदोलन की जिम्मेदारी को उठा लिया. पूर्वी घाटी क्षेत्र एक रणनीतिक इलाका है. आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से पिछड़ा हुआ इलाका है. वहां विभिन्न भाषाओं व विभिन्न जनजातियों की जनता निवासरत है. एओबी की ठोस परिस्थिति व विशिष्टताओं को समझते हुए, आंदोलन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए, निर्देशित कार्याभारों की रोशनी में भविष्य की गति का आकलन करते हुए आंदोलन के पुरोगमन के लिए कामरेड साकेत ने प्रयास किया. 2006 में आयोजित एओबी के तीसरी अधिवेशन में एओबी आंदोलन के तात्कालिक सेटबैक में पहुंचने का आकलन किया गया और अधिवेशन ने आंदोलन के पुनरविकास के लिए कार्यभार बनाए. बदलती परिस्थितियों के अनुरूप पार्टी की कार्यशैली को सुधारने के लिए पार्टी में जारी गैरसर्वहारा रुझानों के खिलाफ भूलसुधार अभियान का संचालन किया गया जिसका कामरेड साकेत ने नेतृत्व किया. एओबी आंदोलन पर जारी एलआईसी हमले का सामना करते हुए उस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ा. जिन परिस्थितियों व दांवपेंचों के चलते उत्तर तेलंगाना व आंध्रप्रदेश आंदोलन सेटबैक में पहुंच गए उनका अध्ययन करते हुए उन अनुभवों व सबकों से सीखते हुए एओबी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने कोशिश की.

2008 में तत्कालीन एओबी एसजेडसी के सचिव का क्रांतिकारी जरूरतों के लिए दूसरी इलाके में तबादला किया गया. इसकी वजह से 2008 आखिरी में कामरेड साकेत ने एओबी एसजडसी के सचिव का दायित्व भी उठाया. कामरेड साकेत के मार्गदर्शन में 2009 में जोन के आंदोलन की गहराई से समीक्षा करके राजनीतिक व सांगठनिक समीक्षाओं को तैयार करके तीसरी अधिवेशन की पहली प्लीनम को आयोजित किया गया. उस दौरान आंदोलन द्वारा सामना की जा रही समस्याओं व लेनेवाले कार्यभारों के बारे में सभी स्तरों की कमेटियों के विचार में एकरूपता हासिल करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

2006 में कोरापुट जिले के नारायणपट्ना व बंदुगांव ब्लॉकों के बोरिगी व नागुलाबेडा क्षेत्रों की जनता ने संशोधनवादी पार्टियों के साथ अपना नाता तोड़ कर माओवादी

पार्टी के नेतृत्व में संगठित होकर जमीन आंदोलन को आरंभ किया. खूंखार जमींदार मार्कंडेया चौधरी के जनविरोधी हथकंडों का पर्दाफाश करते हुए उसका खात्मा किया गया. जनता ने पार्टी के नेतृत्व में ऐसे क्रूर जन विरोधी जमींदारों की जमीनों को अपने कब्जे में लेकर पीएलजीए की मदद से उन जमीनों में खेतीबाड़ी शुरू की. 2009 में नारायणपट्ना क्षेत्र में पीएलजीए द्वारा किए गए नाल्को हमला व पालूर एंबुश सफल करके न सिर्फ दुश्मन को धक्का पहुंचाया गया बल्कि हथियार जब्त किए गए. ऐसी कार्रवाइयों ने जनता को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया. जनांदोलनों को भी प्रभावित किया. इस तरह कामरेड साकेत ने नारायणपट्ना सशस्त्र किसान संघर्ष को दिशा–निर्देशन देकर भ्रूण रूप से राजसत्ता की स्थापना करके पार्टी को नया अनुभव दिया.

नारायणपट्ना किसान आंदोलन पर केंद्रीकरण करते हुए उन्होंने विशाखा–पूर्व गोदावरी डिविजन में बाक्साइट खदानों के खिलाफ संघर्ष का मार्गदर्शन किया. सरकार व जमींदारों के अधीनस्थ कॉफी बगीचें जनता को दखल करने के लिए जन संघर्ष छेड़ दिया. देवमाली में बाक्सइट खदान के खिलाफ जारी विस्थापन विरोधी आंदोलन को सही दिशा–निर्देशन दिया.

उन्होंने आंदोलन में विभिन्न संदर्भों में सामने आयी दक्षिणपंथी व वामपंथी अवसरवादी लाइन को हरा कर पार्टी लाइन को ऊंचा उठाया. नारायणपट्ना आंदोलन के नेता नाचिका लिंगा ने जब दुश्मन के हमले का सामना करते हुए आंदोलन को आगे बढ़ाने के बजाय फिर चुनाव का रास्ता चुना था, तब दीर्घकालीन जन युद्ध की लाइन को ऊंचा उठाते हुए नाचिका लिंगा के खिलाफ नारायणपट्ना की जनता को सही लाइन में आगे बढ़ाया.

एओबी एसजडसी सदस्य श्रीरामुलु श्रीनिवास ने राजनीतिक रूप से कमजोर होकर पार्टी से बाहर होने का निर्णय लेकर पार्टी के ऊपर कीचड़ उछालने की कोशिश की, तो उसकी वामपंथी व अवसरवादी दलीलों का कामरेड साकेत के नेतृत्व में जोन प्लीनम ने कड़ा विरोध करते हुए उन्हें हराया.

एक और एओबी एसजडसी सदस्य विजय गिरफ्तार होकर राजनीतिक रूप से कमजोर होकर स्थानीय संस्थाओं के चुनावों में शामिल होने की बात सामना लाया, तो कामरेड साकेत के नेतृत्व में एसजडसी ने न सिर्फ उसकी आलोचना की बल्कि उसका सही जवाब दिया. ओडिशा राज्य कमेटी के सचिव सव्यसाची पंडा द्वारा सामने लायी गई दक्षिणपंथी व अवसरवादी राजनीति को एम–एल–एम की रोशनी में हराते हुए पार्टी की लाइन को ऊंचा उठाते हुए सीसी ने एक पुस्तिका जारी की. पंडा की अवसरवादी राजनीति को हराने में कामरेड साकेत ने अपनी भूमिका निभाई.

सिद्धांत को व्यवहार के साथ और सामान्यता को विशिष्टता के साथ जोड़ कर दांव–पेंचों को विकसित करने के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया. 'भारत देश के उत्पादन संबंधों में बदलाव–हमारा रणनीतिक कार्यक्रम' दस्तावेज को अंतिम रूप देकर दांव–पेंचों को विकसित करने में कामरेड साकेत ने सक्रिय भूमिका निभाई. सिद्धांत को व्यवहार के साथ जोड़ कर बनाए गए दांव–पेंचों पर निर्भर होकर वर्ग संघर्ष को तेज करते हुए गुरिल्ला युद्ध को विकसित करने के मकसद से सभी स्तरों की पार्टी कमेटियों को फील्ड प्रशिक्षण देने में उन्होंने मार्गदर्शन दिया.

2013 से एओबी एसजडसी के मुख पत्र 'बोल्शेविक' को नियमित रूप से प्रकाशित करके पार्टी कतारों, जन संगठनों के कार्यकर्ताओं व जनता की राजनीतिक चेतना बढ़ाने में कामरेड साकेत ने राजनीतिक रूप से सराहनीय भूमिका निभाई. वे एक अच्छे लेखक थे. तेलुगू भाषा, कला व साहित्व पर उनकी अच्छी–खासी पकड़ होती थी. उनकी लेखन शैली सरल, आकर्षनीय व धारदार होती थी. जन नट्य मंडली के 50 वर्षीय इतिहास को समग्र रूप से प्रकाशित करने में उन्होंने अपनी भूमिका निभाई.

केंद्र कार्यभार के अनुरूप आधार इलाके के लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहे दंडकारण्य आंदोलन को उनके नेतृत्व में एओबी एसजडसी ने कई तरह मदद पहुंचाई.

हालांकि आंध्रप्रदेश के आंदोलन पर दुश्मन द्वारा संचालित भीषण दमन के पृष्ठभूमि में उनकी सुरक्षा को ध्यान में रख कर उनका तबादला एओबी में किया गया. लेकिन एओबी में भी दुश्मन ने उनका पीछा नहीं छोड़ा. उन्हें निशाना बना कर कई हमलें जारी किए गए. रामगुडा गांव के पास किए गए एक भीषण हमलें में 31 कामरेडों ने अपनी जानें गवाईं. तब तक के क्रांतिकारी आंदोलन में वह सबसे बड़ा नुकसान था. उस भीषण हमलें में से भी पार्टी व पीएलजीए की कतारों के बहादुराना प्रतिरोध व क्रांतिकारी जनता की मदद से वे सुरक्षित रूप से रिट्रीट हो गए. लेकिन उस घटना में वे घायल हो गए. अस्वस्थता से जूझते हुए भी एओबी के कठिन टेरेइन में निचले स्तर की कतारों के साथ जुड़ कर रहते हुए फील्ड में आने वाली समस्याओं का गहराई से अध्ययन करते हुए आखिरी सांस तक उनके हल के लिए वे आवश्यक मार्गदर्शन देते रहे.

विभिन्न कठिन परिस्थितियों में उन्हांने विभिन्न कमेटियों के सचिव की जिम्मेदारी निभायी. 1997–2000 में दक्षिण तेलंगाना रीजियन कमेटी, 2000–2006 में एपीएससी और 2008–2017 में एओबी एसजडसी के सचिव की जिम्मेदारियां निभाते हुए भीषण दमन में मार्गदर्शन देते हुए आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए वे प्रयासरत रहे. जो भी कमेटियों का उन्होंने नेतृत्व किया उनकी राजनीतिक एकता बढ़ाते हुए प्रतिरोध के दांव–पेंच बना कर आंदोलन को बचाने के लिए कोशिश की. क्रांति के प्रति जनता का विश्वास बढ़ाने कई

जन संघर्षों में बड़े पैमाने पर जनता को गोलबंद करने में उन्होंने मूल्यवान अनुभव हासिल किया.

हालांकि वे पीड़क जाति में पैदा हुए थे, लेकिन उस जाति का प्रभाव उनमें लेश मात्र भी नहीं दिखता था. जातिगत भेदभाव का विरोध करने में वे हर हमेशा आगे रहते थे. वे साथी कामरेडों के स्वास्थ्य का ख्याल रखते थे. अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में वे किसी को नहीं बताते थे.

भारत की क्रांति में सर्वोच्च स्तर के नेता के रूप में उभरने के बावजूद उन्होंने कभी अपने बड़ापन का प्रदर्शन नहीं किया. आत्मस्तुति नहीं की. सीधासादा जीवन शैली अपनाई. स्वार्थ भावना को अपने दूर–दूर तक भी भटकने नहीं दिया. जनता व क्रांति के फायदाओं को उन्होंने सर्वोच्च महत्व दिया. 40 वर्षीय लंबे क्रांतिकारी जीवन में कई उतार–चढ़ावों, टेढ़े–मेढ़ों, हार–जीतों में उन्होंने हिस्सा लिया. वे कभी जीत में फूलकर कुप्पा नहीं हो गए और हारों में हताश–निराश नहीं हुए. जीत का श्रेय लेने के लिए उन्होंने कभी प्रयास नहीं किया. लेकिन हर हार में अपनी जिम्मेदारी को चिह्नित करने में वे आगे रहते थे. पार्टी के आंतरिक चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए सीदे तौर पर अपनी बात रखते थे.

निजी जिंदगी में भी उन्होंने अपने परिवार को क्रांतिकारी मार्ग में ढाल दिया. उनकी युवा अवस्था में एक हमदर्द परिवार की युवती – शिरीषा के साथ उनकी शादी हुई. बाद में उन्होंने एक बेटा को जन्म दिया. अपने इकलौते बेटे पृथ्वी की शिरीषा ने लाड़–प्यार से परवरिश की. जब पृथ्वी ने अपनी किशोरावस्था पार की उसमें समाजिक चेतना बढ़नी लगी. स्वाभाविक रूप से ही अपने पिता का रास्ता ने उसे आकर्षित कर दिया. नतीजतन वह पीएलजीए में भर्ती हुआ. मुन्ना के नाम पर सीआरसी कंपनी–1 में उसने काम किया. एक पिता के बतौर कामरेड साकेत ने एक आदर्श मिसाल पेश की. उन्होंने अपने बेट के प्रति कोई पक्षपात नहीं दिखाया. कामरेड मुन्ना को एक पिता के तौर पर नहीं बल्कि एक नेता के तौर पर मार्गदर्शन दिया. कामरेड मुन्ना में कोई गैर सर्वहारा रुझान दिखता था आलोचना के जरिए उसे सुधारने की कामरेड साकेत कोशिश करते थे. पार्टी, वर्गसंघर्ष व क्रांतिकारी जनता ने मुन्ना को एक आदर्श क्रांतिकारी के रूप में ढाल दिया. 24 अक्टूबर, 2016 को रामगुडा हमले में अपने पिता सहित पार्टी नेतृत्व को बचाने के लिए दुश्मन के साथ डट कर लड़ते हुए मुन्ना ने अपनी अनमोल जान की कुरबानी दी.

रामगुडा घटना में अपने बेटे के अलावा कई स्तरों के कामरेडों के शहीद होने से स्वाभाविक रूप से ही कामरेड साकेत को बहुत बड़ा दुख पहुंच गया. लेकिन उस दुख का उन्होंने हिम्मत से सामना किया. हालांकि बेटे की शहादत की खबर से शिरीषा को बड़ा सदमा पहुंच गया लेकिन उन्होंने अपने बेटे की शहादत पर गर्व प्रकट किया. उस वक्त कामरेड साकेत ने अपनी पत्नी के दुख को साझा करते हुए उन्हें संत्वना देते हुए पत्र लिखा है कि 'मैं सिर्फ मुन्ना की मां हूं' ऐसा सोचने से दुख को झेलना पड़ेगा. लेकिन मैं कइयों बच्चों की मां हूं, ऐसा सोचने से दुख से उबर सकती हो. कामरेड साकेत की शहादत के बाद शिरीषा ने अपनी अकथनीय व्यथा, दुख व त्रासदी को दरकिनार करते हुए मीडिया में चेतनापूर्वक घोषणाएं की थीं. उनके द्वारा दर्शायी गई मानसिक दृढ़ता व हिम्मत के पीछे कामरेड साकेत की दी गई राजनीति, प्रेरणा व उनके आदर्शों को हम देख सकते हैं.

कामरेड साकेत ने अपनी क्रांतिकारी जिंदगी में हर वक्त कम्युनिस्ट मानव संबंधों व मूल्यों के बारे में बोधन करते हुए उन उच्च मूल्यों का पालन करते हुए नए मानव की मिसाल को पेश किया. उत्पीड़ित जनता, खासकर आज की पीढ़ी के युवाओं व छात्रों पर उन्होंने अमिट छाप छोड़ दी. इसीलिए सभी लोग उन्हें प्यार करते थे. सर्वहारा वर्ग के उत्तम सपूत कामरेड साकेत हमेशा हमें जागरूक करते रहते हैं.

क्रांतिकारी आंदोलन में सामने आने वाले उतार–चढ़ाव, तकलीफों व नुकसानों का दृढ़ संकल्प के साथ मुकाबला करना, उच्च आत्मबलिदानी भावना, निस्वार्थ, सीधा–सादा जीवनशैली, जनता व क्रांति के फायदों के लिए अथक परिश्रम करना, सभी स्तरों के कामरेडों के साथ जनवादी तरीके से व्यवहार करना, कठिन परिस्थिति में भी कैडरों व जनता से जुड़ कर रहना आदि कई उत्तम क्रांतिकारी आदर्शों की स्थापना करने वाले कामरेड साकेत अब भौतिक रूप से हमारे बीच में नहीं रहे हैं. लेकिन उनके द्वारा दर्शाए गए कम्युनिस्ट मूल्य व क्रांतिकारी रास्ता हमें प्रेरणा देते रहेंगे. हमारे मन में वे सदा जीवित रहेंगे.

कामरेड साकेत अमर रहें!

पीएलजीए की 20वीं वर्षगांठ के ऐतिहासिक मौके पर भकपा (माओवादी) ने एक सावनियर प्रकाशित किया. इसके द्वारा विगत 20 वर्षीय समयावधि में दीर्घकालीन जनयुद्ध में जनमुक्ति छापामारा सेना के विकास के क्रम को हम समझ सकते हैं. इसमें प्रकाशित शहीदों और जनयुद्ध से संबंधित कई आकर्षणीय तसवीरें, जीवनियां, संदेश, लेख व साक्षात्कार पीएलजीए के कई पार्श्वों से हमें रूबरू करते हैं. पीएलजीए के इस लंबे सफर से प्राप्त सीख हमें और दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है.

उत्पीड़ित जनता के प्यारे नेता व भाकपा (माओवादी) के केंद्रीय कमेटी सदस्य

कामरेड मिलिंद बाबूराव तेलतुमब्डे (दीपक) को लालसलाम!

13 नवंबर, 2021 को महाराष्ट्र व छत्तीसगढ़ राज्यों के सीमावर्ती ग्राम पारेवा के पास ठहरे गुरिल्ला बलों पर गढ़चिरोली के सी–60 कमांडों द्वारा किए गए एक भीषण हमले का सामना करते हुए 27 कामरेडों ने अपनी जान की कुरबानी दी. शहीदों में भाकपा (माओवादी) के केंद्रीय कमेटी सदस्य कामरेड मिलिंद बाबूराव तेलतुमब्डे भी शामिल थे. 'प्रभात' उन्हें विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करता है. उनके परिजनों के प्रति गहरा शोक व्यक्त करता है. आएं! उनकी आदर्शवान जिंदगी से रूबरू होंगे.

दीपक, जीवा, प्रवीण, अरुण, सुधीर, सह्याद्री आदि नामों से क्रांतिकारी शिविर में अपनी छाप छोड़ने वाले कामरेड मिलिंद ने 5 फरवरी, 1964 को महाराष्ट्र राज्य, यवतमाल जिला, वणी तहसील, राजूरा गांव के एक गरीब दलित महर जाति के मजदूर परिवार में जन्म लिया. अनसूया व बाबूराव तेलतुमब्डे दंपति की आठ संतान में कामरेड मिलिंद एक थे. उनकी 92 वर्षीय मां हैं, जबकि उनके पिता नहीं रहे. मां ईंटभट्ठी में काम करते थे जबकी पिता दैनिक मजदूर थे. बेहद गरीबी के बावजूद उन दोनों ने अपने बच्चों को अच्छी तरह पढ़ाया. ज्ञात है कि कामरेड मिलिंद के बड़े भाई, जाने–माने दलित बुद्धिजीवि व मानवाधिकार कार्यकर्ता प्रोफेसर आनंद तेलतुमब्डे को भीमा कोरेगांव फर्जी केस में फंसा कर मुंबई के तलोजा जेल में दो वर्ष से बंधक बना दिया गया. शासक वर्गों की अमनवीयता यह है कि जब प्रोफेसर आनंद ने अपने छोटे भाई की शहादत की खबर सुनी थी, तब उन्होंने अपनी बुजुर्ग मां के साथ फोन पर बात करने के लिए एनआईए कोर्ट की अनुमति मांगी. हालांकि अदालत ने अनुमति दी लेकिन जेल प्रशासन ने अभी तक ऐसा मौका नहीं दिया. कामरेड मिलिंद के छोटे भाई जब उनके पीएचडी के तहत आदिवासियों के बारे में शोध करने गढ़चिरोली आए थे तब वहां मलेरिया का शिकार होने की वजह से उनकी मौत हुई.

ऐसे दमित, उत्पीड़ित, श्रमिक व प्रगतिशील परिवार में पलने–बढ़ने वाले कामरेड मिलिंद ने इस दुनिया पर शोषण और उत्पीड़न को मिटाने के महान लक्ष्य के लिए अपनी पूरी जिंदगी को समर्पित किया. उस क्रम में वह भाकपा (माओवादी) की उच्चतम कमेटी में हिस्सा लेकर एक लोकप्रिय नेता बन गए. उनकी हत्या के खिलाफ महाराष्ट्र–मुंबई में क्रांतिकारियों, मानवाधिकार व दलित संगठनों द्वारा कई आंदोलन किए गए.

कामरेड मिलिंद ने अपनी हाई स्कूल पढ़ाई पूरी होने के बाद आईटीआई ज्वाइन करके फिट्टर कोर्स में प्रशिक्षण लिया. बाद में उन्होंने बल्लारपुर पेपर मिल में अप्रेंटिस (शिक्षार्थी) बन गए. उसके बाद पश्चिमी कोयला खदान में मजदूर बन गए. मजदूरों के बुरी हालातों ने उन्हें संघर्ष का रास्ता दिखाया. मजदूरों की समस्याओं के हल के लिए संघर्ष करने के क्रम में वे मजदूरों के नेता बन गए. पहले खदान श्रमिक ट्रेड यूनियन के नेता के रूप में बाद में इंडियन माइन वर्कर्स फेडरेशन के नेता के रूप में विकसित होकर उन्होंने मजदूरों की कई समस्याओं के हल के लिए संघर्ष का नेतृत्व किया. 1982 तक तत्कालीन भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के साथ उनका परिचय हुआ. मजदूर आंदोलन में क्रांतिकारी राजनीति को ऊंचा उठाते हुए काम करने के क्रम में 1992 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. चंद वक्त के लिए उन्होंने महाराष्ट्र में कार्यरत 'नवजवान भारत सभा' के अध्यक्ष की जिम्मदारी निभायी. इस तरह आंदोलन में आगे बढ़ने के क्रम में 1994 में अपनी पसंदीदा कामरेड एंजिला के साथ उन्होंने शादी कर ली.

सन् 2000 में आयोजित महाराष्ट्र राज्य की पार्टी के अधिवेशन में वे राज्य कमेटी में चुन गए. विदर्भा के कई शहरों के श्रमिक, छात्रों व युवाओं को उन्होंने संगठित किया. मुंबई के बिजली क्षेत्र के श्रमिकों व सूरत के कपड़े

करखाने के मजदूरों के साथ उनके विस्तारपूर्वक संबंध होते थे. वहां के 'नवजावन भारत सभा' के कार्यकर्ताओं के साथ मिल कर उन्होंने कई हड़तालों में न सिर्फ भाग लिया बल्कि उनका नेतृत्व किया. 2005 तक विदर्भा के चंद्रपुर को मजदूरों, छात्रों व युवाओं की संगठित शक्ति के केंद्रबिंदु के रूप में खड़ा करने में कामरेड मिलिंद की विशिष्ट भूमिका रही. विदर्भा में क्रांतिकारी आंदोलन को मजबूत होने से रोकने के लिए चंद्रपुर पुलिस द्वारा 'मिशन–मृत्युंजय' अभियान छेड़ा गया. इस अभियान के तहत छात्राओं–छात्रों पर निगरानी बढ़ायी गयी. उसके बावजूद उन्होंने अपनी निपुणता को दर्शाते हुए काम किया. नतीजतन चंद्रपुर, बल्लारपुर, राजूरा आदि शहरों से कई मजदूर, छात्र व युवती–युवक क्रांतिकारी राजनीति में संगठित हो गए.

एक ओर शहरी क्षेत्र की जिम्मेदारी निभाते हुए दूसरी ओर जंगली क्षेत्र के आंदोलन पर अपनी समझदारी बढ़ाते हुए 2008 में उन्होंने जंगली क्षेत्र की जिम्मेदारी भी उठायी. बाद में दीपक के नाम पर वे लोकप्रिय हो गए.

दक्षिण व पश्चिम रीजनल ब्यूरो में 2009 में पहली बार संचालित एलटीपी अध्ययन कक्षाओं में शामिल होकर गहराई से विचार–विमर्श करने वाले कामरेड दीपक ने बाद में महाराष्ट्र के पार्टी निर्माण में मौजूद दक्षिणपंथी रुझान के खिलाफ अपनी आलोचना पेश की. इस पृष्ठभूमि में 2010 में महाराष्ट्र राज्य कमेटी द्वारा लिए गए विदर्भा परस्पेक्टिव के तहत आंदोलन के विस्तरण का नेतृत्व करते हुए बालाघाट जाकर उन्होंने काम किया. उसी कार्यभार को पूरा करने के तहत ही एमएमसी का गठन हुआ जिसकी जिम्मेदारी उन्होंने उठायी.

2006 सितंबर में महाराष्ट्र के खैरलांजी के दलित परिवार के ऊपर दबंग जाति के लोगों द्वारा किए गए घृणित हत्याकांड ने देश को झकझोर कर दिया. इसके खिलाफ महाराष्ट्र धधक गया. दलित और जनवादी संगठनों व व्यक्तियों द्वारा बड़े पैमाने पर आंदोलन किए गए. उन आंदोलनों में शामिल होने वाले कामरेड मिलिंद ने उन्हें और जुझारू रूप दिया. चंद्रपुर में एक बस को आग के हवाले कर दिया गया. इससे शासकों के दिल में डर पैदा हुआ. इन आंदोलनों के सामने झुकने वाली सरकार ने पीड़ित परिवार की सुरक्षा प्रदान करने और उसे मुआवजा देने के लिए अनुमोदन किया. यह आंदोलन एक ऐसी मिसाल बन गई जिसने कामरेड मिलिंद के संघर्षरत जज्बा व जुझारूपन का परिचय दिया.

2007 में संपन्न भाकपा (माओवादी) की ऐतिहासिक एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस में शामिल होकर उन्होंने देशभर के आंदोलन के बारे में अच्छी समझदारी हासिल की.

2008 से महाराष्ट्र आंदोलन को लगातार भारी नुकसानों को उठाना पड़ा. कई नेतृत्वकारी कामरेडों की गिरफ्तारी हुई. 2011 में उनकी जीवन संगिनी कामरेड एंजेला की गिरफ्तारी हुई. कई फर्जी मामलों में फंसा कर उन्हें लगभग 6 वर्ष तक जेल में बंधक बना दिया गया. हालांकि सितंबर 2016 में दी गई जमानत पर उनकी रिहाई हुई लेकिन कामरेड दीपक को निशाना बना कर लगातार किए जा रहे हमलों के बीच में इन दोनों कामरेडों को साथ में रहने का मौका नहीं मिला. बेहद दुखद बात यह है कि जीवनसाथी को मिलने के इंतजार में रही कामरेड एंजेला को उनकी लाश देखनी पड़ी.

महाराष्ट्र के क्रांतिकारी आंदोलन को पुनरविकसित करने के लिए कामरेड दीपक ने आखिरी सांस तक परिश्रम किया. लेकिन यह लक्ष्य अधूरा रह गया. उनकी दी गई राजनीतिक चेतना से लैस सैकड़ों मजदूर व छात्र, उनके मित्र व हितैषियों को उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए.

कामरेड दीपक को 2013 में केंद्रीय कमेटी में लिया गया. 2016 में नव गठित एमएमसी जोन का प्रभारी बन कर उन्होंने क्षतिग्रस्त हुए महाराष्ट्र आंदोलन को फिर मजबूत करने के लिए प्रयास किया.

कामरेड दीपक ने कई बार दुश्मन का सामना किया. 2016 में वे क्रांतिकारी जरूरतों के अनुसार ओडिशा गए थे और चार महीने वहां पर रुक गए. इसकी सूचना मिलने पर पुलिस बलों ने लगातार गश्ती अभियान चलाए. उन चार महीनों में उनके ऊपर तीन बार पुलिस बलों ने हमलें किए. उन हमलों का कामरेड दीपक ने हिम्मत से प्रतिरोध किया. उन हमलों से पीएलजीए बलों ने अपनी जान की कुरबानी देकर उन्हें बचा लिया. विगत तीन वर्षों में उनके ऊपर दुश्मन बलों ने कई बार हमलें किए. उन सभी हमलों का सामना करने में उन्होंने गुरिल्ला बलों का नेतृत्व किया और सुरक्षित रूप से रिट्रीट होने में वे सफल हुए.

वे एक निरंतर अध्ययनशीली थे. मार्क्सवादी रचनाओं के अलावा उन्होंने अंबेडकर रचनाओं का भी गहराई से अध्ययन किया. भारत देश के लिए खास कर जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिए अंबेडकर द्वारा किए गए प्रयास के बारे में वे साथी कामरेडों को समझाते थे. न सिर्फ भारत देश की दलित जनता की मुक्ति के लिए बल्कि तमाम जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिए आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में संचालित किए जाने वाले आंदोलनों के बारे में उनकी अच्छी समझदारी होती थी. पार्टी के 'भारत देश में जाति का सवाल हमारा दृष्टिकोण' दस्तावेज को समृद्ध करने में उन्होंने अपनी भूमिका निभाई. मजदूरों की समस्याओं के प्रति भी उनकी अच्छी खासी पकड़ होती थी. देश के संविधान के तहत आदिवासियों को प्राप्त हुए कानूनन अधिकारों के अमल की मांग पर आदिवासी जनता को संघर्षरत करने में उन्होंने अच्छा–खासा अनुभव हासिल किया. कृषि संकट व किसानों की समस्याओं का उन्होंने गहराई से अध्ययन किया. कृषि संकट पर 2019 में सीसी द्वारा जारी की गई बुकलेट का मसौदा उन्होंने बनाया. इस तरह कई विषयों के प्रति स्पष्ट समझदारी हासिल करके उन्होंने क्रांति के पुरोगमन में अपना योगदान दिया.

वे एक अच्छे लेखक भी थे. कई विषयों का गहराई से

अध्ययन करके उन्होंने कई लेख लिखे थे. कृषि समस्या के बारे में उन्होंने कई लेख लिखे थे. पर्यावरण संबंधित विषयों के बारे में भी उन्होंने अध्ययन शुरू किया और कुछ लेख लिखे थे. उनका अध्ययन अब अधूरा रह गया. मराठा समाज के आरक्षण के बारे में भी अच्छे विश्लेषण के साथ उन्होंने लेख लिखा जिसे 'प्रभात' में छापा गया.

कभी महाराष्ट्र कमेटी का नेतृत्व करके, भाकपा (माओवादी) केंद्रीय कमेटी के पोलित ब्यूरो सदस्य रहे कोबड घैंडी ने राजनीतिक रूप से पतन होकर 'फ्राक्चर्ड् फ्रीडम ए प्रिजन मेमोयर' नाम से एक किताब लिखी. उस किताब में प्रकट हुए दक्षिण पंथी, आध्यात्मिक व क्रांति विरोधी विचारों की कड़ी आलोचना करते हुए कामरेड दीपक ने एक पुस्तिका लिख कर पार्टी के सामने रखी थी.

अध्ययन व लेखन में पकड़ हासिल करने वाले कामरेड दीपक ने अलग–अलग समयों में दो पत्रिकाओं –पहाट और जनपथ– को संचालित किया. महाराष्ट्र राज्य कमेटी के मुखपत्र पहाट और एमएमसी एसजडसी के मुख पत्र जनपथ के संचालन में संपादक मंडल के सदस्य और प्रधान संपादक के रूप में उन्होंने प्रधान भूमिका निभायी. इन पत्रिकाओं में उनके कई लेख छापे गए. राजनीतिक व सैद्धांतिक विषयों के अलावा साहित्य के प्रति भी वे दिलचस्पी रखते थे. ज्वालामुखी, अनसूया (अपनी मां का नाम) आदि कई कलम नामों से वे अक्सर कविताएं और गानें लिखते थे. वे एक अच्छे गायक भी थे.

कामरेड दीपक एक अच्छे अध्यापक थे. वे जितनी गहराई से राजनीतिक व सैद्धांतिक अध्ययन किया करते थे, उतनी गहराई से अध्यापन भी करते थे. विभिन्न अवसरों पर निचले स्तर से लेकर एसजडसी स्तर तक संचालित अध्ययन कक्षाओं के दौरान शिक्षक के रूप में शामिल होकर उन्होंने अपना योगदान दिया था. पढ़ने, नोट्स बनाने व संबंधित विषयों के बारे में साथी कामरेडों के साथ चर्चा करने के प्रति वे दिलचस्पी रखते थे. हाल ही में मोदी सरकार द्वारा लाए गए किसान विरोधी व देशद्रोही तीन कृषि कानूनों का उन्होंने गहराई से अध्ययन किया और कई लेख लिखे. उतना ही नहीं इन कानूनों के बारे में एसजेडसी से लेकर निचले स्तर के कामरेडों तक उन्होंने अध्ययन कक्षाओं को संचालित किया.

वे एक अच्छे वक्ता भी थे. देशीय व अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के बारे में समग्र समाचार व अच्छे विश्लेषण देते हुए वे भावात्मक व धाराप्रवाह भाषण देते थे.

डीके आंदोलन में भी उनका अविस्मरणीय योगदान रहा. डीके के पश्चिम सब जोन आंदोलन को कुचलने के लिए दुश्मन द्वारा संचालित भीषण दमन में वहां के आंदोलन को भारी नुकसान हुआ. ऐसी परिस्थिति में वहां के आंदोलन को बचाने के लिए नए रूपों में जनता को संगठित करने के लिए वहां की पार्टी को तैयार करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा. जल, जंगल, जमीन के लिए संघर्षरत आदिवासी जनता को क्रांतिकारी राजनीति तले संगठित करके कोरची तहसील के जेंडेपार, अग्री व मसेली में प्रस्तावित खदानों के खिलाफ जनांदोलन संचालित किया गया. लगभग 40 हजार एकड़ की जमीन में 25 जगहों पर प्रस्तावित उन खदानों के खिलाफ वहां के युवाओं को मिलिशिया में संगठित किया गया. दूसरी ओर ग्राम पंचायतों के सरपंचों को गोलबंद करके जंगलों को बचाने के लिए संघर्षरत होने का आह्वान किया गया. उस आह्वान के तहत सरपंचों ने भूख हड़ताल की. उनका संघर्ष महाराष्ट्र की विधानसभा में चर्चित विषय बन गया. सरकार ने तुरंत ही हस्तक्षेप करके प्रस्तावित खदानों पर तात्कालिक ही सही रोक लगायी. इस संघर्ष में कामरेड दीपक की उल्लेखनीय भूमिका रही. इस प्रयास के फलस्वरूप गढ़चिरोली जिले के सभी आदिवासी गांवों में पेसा कानून के तहत ग्रामसभाओं का आविर्भाव होकर जंगलों पर आदिवासियों को कुछ हद तक अधिकार हासिल हुए. गढ़चिरोली आदिवासियों के संघर्ष के चलते महाराष्ट्र के नंदुरबार सहित कई जिलों के आदिवासियों को कई फायदें मिलें. दूसरी ओर देशभर के आदिवासियों को पेसा–ग्रामसभा के विषय में जागरूक करने में उस जिले का आंदोलन दिक्सूचक बन गया. नतीजतन 2018 तक देश के प्रबल आदिवासी अंचल में खासकर छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड व मध्यप्रदेश में पत्थलगड़ी आंदोलन ने जनसंघर्ष का रूप ले लिया.

एक मार्क्सवादी शिक्षक के रूप में भी कामरेड दीपक ने डीके आंदोलन में अविस्मरणीय भूमिका निभाई. पश्चिम ब्यूरो में कई स्तरों के कामरेडों के लिए संचालित अध्ययन कक्षाओं में शामिल होकर कैडर की राजनीतिक व सैद्धांतिक स्तर को बढ़ाने के लिए उन्होंने सराहनीय भूमिका निभाई. स्थानीय समस्याओं के अलावा 5वीं व 6वीं अनुसूची, पेसा कानून व ग्रामसभाओं के बारे में उनकी समझदारी बढ़ा कर उनका आत्मविश्वास बढ़ाने में कामरेड दीपक का योगदान रहा. कई अवसरों पर डीके एसजडसी सदस्यों को भी उन्होंने पढ़ाया. डीके एसजडसी, विभिन्न सब जोनल व डिविजनों के बैठकों व प्लीनमों में शामिल होकर उनका सही मार्गदर्शन देने में भी उन्होंने अपनी भूमिका निभाई. इस तरह डीके आंदोलन से उनका आत्मीय रिश्ता बन गया. डीके कैडर के लिए वे प्यारे 'दीपक दादा' बन गए.

अध्ययन व अनुभवों से हासिल चेतना को आत्मसात करने वाले कामरेड दीपक आंदोलन के क्रम में सामने आए उतार–चढ़ावों में डटे रह कर एक ऐसे नेता के रूप में विकसित हुए कि क्रांतिकारी आंदोलन में कई क्षेत्रों का वे नेतृत्व कर सकें. अब जब कई इलाकों व क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिस्थितियां विकसित हो रही हैं कामरेड दीपक जैसे अनुभवी, योग्य व कर्मठ नेता को खोना भारत की क्रांति के लिए निश्चित रूप से बड़ा नुकसान होगा. इस नुकसान से उबरने के लिए कामरेड दीपक के द्वारा स्थापित आदर्शों को ऊंचा उठाते हुए उनके दिखाए रास्ते पर आगे बढ़ेंगे. उनके अधूरे सपनों को पूरा करेंगे. वह ही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी.

कामरेड दीपक अमर रहें!

दुश्मन के साथ बहादुराना ढंग से लड़ कर अपनी जान की कुरबानी देने वाले

पारेवा अमर शहीदों को शत् शत् नमन!

13 नवंबर, 2021 का दिन भारत के क्रांतिकारी इतिहास में एक बेहद दुखद दिन था. खासकर एमएमसी व दंडकारण्य आंदोलनों को उस दिन एक बड़ा धक्का लगा था. महाराष्ट्र व छत्तीसगढ़ राज्यों के सीमावर्ती ग्राम पारेवा के पास ठहरे गुरिल्ला बलों पर उस दिन की सुबह गढ़चिरोली के सी-60 कमांडो द्वारा सुनियोजित ढंग से किए गए एक भीषण हमले का सामना करते हुए 27 कामरेडों ने अपनी जान की कुरबानी दी. लगभग दस घंटों तक हुए इस घमासान में भाकपा (माओवादी) के केंद्रीय कमेटी सदस्य कामरेड मिलिंद बाबूराव तेलतुमड्डे (दीपक, प्रवीण), उत्तर गढ़चिरोली डिविजनल कमेटी के सचिव कामरेड रामसाय परचापी (सुखलाल), उत्तर गढ़चिरोली कमांडर इन चीफ कामरेड शिवाजी गोटा (महेश), 4वीं कंपनी के सीवाईपीसीएम कामरेड पोडियम जोगाल (लोकेश), 4वीं कंपनी के सीवाईपीसीएम कामरेड कलमू मंगू (धर्मु), 4वीं कंपनी के सीवाईपीसीएम कामरेड नवलूराम तुलावी (दिलीप), उत्तर गढ़चिरोली डिविजनल कमेटी के वैकल्पिक सदस्य कामरेड उरसाम कमलू (रमलू, अरुण), उत्तर गढ़चिरोली डिविजनल कमेटी के और एक वैकल्पिक सदस्य कामरेड कोवासी जोगाल (सन्नू), पीपीसीएम व एक्शन टीम के सदस्य कामरेड दलसू गोटा (बंडू), पीपीसीएम व कोरची एलजीएस कमांडर कामरेड सोनू कोर्राम (जयमन, किसान), पीपीसीएम व गार्ड टीम कमांडर कामरेड तिलक झाड़े (भगत, प्रदीप), एसीएम कामरेड मुचाकी मूये, पीपीसीएम व टिपागढ़ एलजीएस कमांडर कामरेड पद्दा कल्लू (चेतन), पीपीसीएम कामरेड अन्सो बोगा (योगिता), पीपीसीएम व एक्शन टीम सदस्य कामरेड साधू बोगा (प्रकाश), पीपीसीएम कामरेड मुचाकी कोसा (रिमन), पीपीसीएम कामरेड मासा तलांडी (सावन), एसीएम कामरेड पोडियम हिडमे, कसनसूर एलजीएस के पार्टी सदस्य कामरेड पोडियम अडमा (संजू), एमएमसी में कार्यरत पार्टी सदस्या कामरेड मडकम सोमडी (संतीला), उत्तर गढ़चिरोली में कार्यरत पार्टी सदस्य कामरेड हेमला साईनाथ (भूमा), एमएमसी में कार्यरत पार्टी सदस्या कामरेड पूनेम शांति, कंपनी-4 के पार्टी सदस्य कामरेड कोवासी हिडमा (लच्छू), पार्टी सदस्य कामरेड कलमू हडमा (सूरज), पार्टी सदस्य व गार्ड कामरेड उइका सोमडा (मोटू), पीएलजीए सदस्या कामरेड माडवी मासे (रंजू), पीएलजीए सदस्य कामरेड माडवी शीनू की शहादत हुई. इन सभी शहीदों को 'प्रभात' विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है. उनके आशयों को ऊंचा उठाता है. उनके परिजनों व मित्रों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करता है.

कामरेड रामसाय परचापी (सुखलाल) को लाल सलाम!

उत्तर गढ़चिरोली के क्रांतिकारी आंदोलन में सुखलाल के नाम से लोकप्रिय हुए कामरेड रामसाय परचापी का जन्म गढ़चिरोली जिला, धनोरा तहसील, कोसमी गांव के एक भूमिहीन परिवार में 1986 में हुआ. वे मां मेहरीबाई, बाप बिसराम परचापी दंपति के प्यारे बेटे थे. उनके दो भाई और एक बहन है. कामरेड सुखलाल की मां मेहरीबाई पार्टी सदस्या थी. 2019 में उनका निधन हो गया. कामरेड सुखलाल ने 8वीं तक पढ़ाई की.

कोसमी गांव क्रांतिकारी गढ़ माना जाता है. अभी तक उस गांव में 8 कामरेडों ने भारत की क्रांति के लिए अपनी अनमोल जानें कुरबान की. ऐसे गांव में पलने-बढ़ने की वजह से स्वाभाविक रूप से ही कामरेड सुखलाल क्रांति के प्रति आकर्षित हो गए. बचपन में ही मां के साथ आने-जाने के क्रम में गुरिल्ला दस्ते के साथ उनका लगाव बढ़ गया. 2001 में उनकी भर्ती मिलिशिया में हुई थी. 2003 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. 2006 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. 2007-2009 में उन्होंने पीएल-15 में अपना योगदान दिया. मार्च 2008 में उन्हें पीपीसी में लिया गया. कुछ वक्त के लिए डीके कम्युनिकेशन टीम में उन्होंने अपना योगदान दिया. छह महीने तक धनोरा एलओएस में सिविल ऑर्गनाईजर के रूप में अपना योगदान दिया. 2010-12 के बीच में महाराष्ट्र राज्य कमेटी द्वारा लिए गए विदर्भा परस्पेक्टिव के तहत गठित पीएल के कमांडर की जिम्मेदारी उन्होंने निभायी. 2012 जुलाई में उनका तबादला 4वीं कंपनी में किया गया. नवंबर 2015 तक वह उस कंपनी में कार्यरत थे. नवंबर 2015 से 2017 तक उन्होंने चातगांव एसी सचिव की जिम्मेदारी निभायी. 2016 में आयोजित उत्तर गढ़चिरोली डिविजन प्लीनम में वे डीवीसीएम चुन गए. 2019 के बाद कोरची एसी सचिव की जिम्मेदारी उन्होंने उठायी. मार्च 2021 में खोब्रामेंडा में दुश्मन द्वारा किए गए हमले में तत्कालीन उत्तर गढ़चिरोली डीवीसी

सचिव व एसजेडसी सदस्य कामरेड रुषि हिचामी (पवन) की शहादत के बाद अगस्त 2021 में कामरेड सुखलाल डीवीसी सचिव चुन गए.

कामरेड सुखलाल अपनी लंबी क्रांतिकारी जिंदगी में जनता व कैडर के साथ घुलमिल होकर एक विश्वसनीय नेता के रूप में उभर गए. डिविजन में संचालित कई जन आंदोलनों का उन्होंने नेतृत्व किया. विस्थापन विरोधी आंदोलनों का उन्होंने नेतृत्व किया. जिले में प्रस्तावित 25 खदानों के खिलाफ जन संघर्ष का संचालन करने में उनकी भागीदारी थी. तेंदूपत्ता तोड़ाई व बांस कटाई की मजदूरी बढ़ाने की मांग पर जनता को संघर्ष के रास्ते में उन्होंने गोलबंद किया. जल, जंगल, जमीन पर जनता का अधिकार कायम करने के मकसद से जारी जन युद्ध व जन संघर्ष में जनता की भागीदारी बढ़ाने के लिए उन्होंने अथक परिश्रम किया. छात्र व कर्मचारी आदि तबकों को भी क्रांति के रास्ते में लाने के लिए उन्होंने प्रयास किया. कामरेड सुखलाल को गोंडी के अलावा मराठी, छत्तीसगढ़ी व हिंदी में अच्छी पकड़ होती थी. इसीलिए विभिन्न तबकों के लोगों के साथ संबंध साधते हुए पार्टी की राजनीति से उन्हें लैस करते हुए उन्हें क्रांति के प्रति आकर्षित करने में कामरेड सुखलाल अपना योगदान दिया.

सैनिक क्षेत्र में कामरेड सुखलाल को अच्छा–खासा अनुभव रहा. मिलिशिया से लेकर उनकी शहादत तक उन्होंने एक पीएलजीए योद्धा के रूप में और कमांडर के रूप में सक्रिय योगदान दिया. कोटाकोहडा एंबुश उनका पहला अनुभव था. उससे लेकर अवलवर्षी तक कुल मिलाकर 19 हमलों व एंबुशों में उन्होंने हिस्सा लिया. मरकानार, हाथिगोटा, मदनवेडा जैसे बड़ी कार्यवाहियों में शामिल होकर उन्होंने कई अनुभव हासिल किए. इन सभी कार्यवाहियों में पुलिस बलों के लगभग 70 लोगों को खतम किया गया, 27 लोगों को घायल किया गया और 62 तक हथियार जब्त किए गए. दुश्मन के साथ हुई 27 मुठभेड़ों में उन्होंने भाग लिया. प्रहार के तहत दुश्मन द्वारा घेराव करके किए गए कई हमलों में उन्होंने दुश्मन का मुकाबला किया. ऐसे कुछ हमलों के दौरान ब्रेकिंग फोर्स में रह कर दुश्मन का मुकाबला करते हुए साथी कामरेडों को बचाने में उन्होंने अपना योगदान दिया. खोब्रामेंडा गांव के पास दुश्मन द्वारा किए गए हमले में एसजडसीएम कामरेड पवन सहित पांच कामरेडों की शहादत हुई. उस दौरान कामरेड सुखलाल ब्रेकिंग फोर्स में थे. उस वक्त टोटल कमांडर व डिप्टी कमांडर भी घायल हो गए. ऐसी हालत में कामरेड सुखलाल ने हिम्मत व साहस के साथ मोर्चा संभाला. उन्होंने कमांड को अपने हाथ में लेकर दुश्मन के साथ आमने–सामने लड़ते हुए दुश्मन का घेराव तोड़ने और साथी कामरेडों को बचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया. मई 2021 में हुई मुरचुल मुठभेड़ में भी दुश्मन का घेराव तोड़ने में कामरेड सुखलाल की भूमिका रही. उनकी आखिरी जंग, पारेवा हमले में भी उन्होंने दुश्मन के घेराव को तोड़ कर नेतृत्व को बचाने के लिए बहुत प्रयास किया. उनकी कोशिश विफल होकर जब वह घायल हुए तब भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी. साथी कामरेडों की हिम्मत बढ़ाते रहे. अपनी बंदूक, कारतूस व गुप्त दस्तावेजों को साथी कामरेडों को सौंप कर उन्हें आगे बढ़ने को कहा और उनसे सीसी सदस्य कामरेड दीपक को बचाने का आग्रह किया. रक्तस्राव होने की वजह से उन्होंने आखिरी सांस ली.

कामरेड सुखलाल सीधासादा जीवनशैली अपनाते थे. वे सहनशीली थे. पार्टी लाइन का सटीक पालन करते थे. मासवर्क व मिलिटरी वर्क का तालमेल के साथ संचालन करते थे. बढ़ते दमन में डिविजन आंदोलन को कई कठिनाइयों को सामना करना पड़ा. इस कठिन परिस्थिति का सामना करने में विफल होकर कितने ही लोग पार्टी से भाग कर गद्दार बन गए. ऐसी कठिनाइयों व नुकसानों में भी जनता व कैडर में क्रांति के प्रति विश्वास बढ़ाने के लिए उन्होंने लगातार प्रयास किया.

इस तरह राजनीतिक व सैनिक रूप से विकसित कामरेड सुखलाल को खोना आज के आंदोलन की स्थिति में अपूर्णीय क्षति होगी. कामरेड सुखलाल द्वारा दी गई राजनीतिक चेतना से प्रेरित गढ़चिरोली धरती के युवती–युवक उस नुकसान को जरूर पूरा करेंगे.

कामरेड सुखलाल अमर रहें!

भैरमगढ़ क्षेत्र में जनांदोलन

10 अक्टूबर, 2021 को भैरमगढ़ क्षेत्र के 10 पंचायत के बेरोजगार, छात्र व शिक्षक एकत्रित होकर लाल पानी, डबल रेल लाइन व विस्थापन के विरोध में और एनएमडीसी में स्थानीय युवती–युवकों की भर्ती की मांग को लेकर रैली निकाल कर एनएमडीसी का घेराव किया. इस आंदोलन में तीन हजार से अधिक लोगों ने शिरकत की.

इसी क्षेत्र में 20 अक्टूबर, 2021 को पुलगट्टा गांव में 50 पंचायत की जनता ने बैलाडीला पहाड़ बचाओ मंच तले गोलबंद होकर सभा व रैली का आयोजन किया. उसके पहले ग्रामसभा का संचालन भी किया गया. बैलाडीला पहाड़ों को बचाने के मकसद से संचालित इस कार्यक्रम में लगभग 11 हजार लोग शामिल हुए. इस मौके पर कलेक्टर व राज्यपाल के नाम मांगपत्र सौंपा गया.

कामरेड शिवाजी रावजी गोटा (महेश) को लाल सलाम!

कामरेड महेश के नाम पर उत्तर गढ़चिरोली कमांडर इन चीफ जिम्मेदारी निभाने वाले शिवाजी रावजी गोटा का जन्म लगभग 36 वर्ष पहले गढ़चिरोली जिला, एटापल्ली तहसील, चोकेवाडा पंचायत, लिगिडीगुट्टा गांव के एक गरीब परिवार में हुआ. कई सालों पहले उनका परिवार जमीन के अभाव से उनके पूर्वजों के गांव नेंडगुडा से पलायन करके लिगिडीगुट्टा आ गया. मां सीदो व बाप रावजी गोटा की दूसरी संतान के रूप में शिवाजी की पैदाइश हुई थी. उनके चार भाई और दो बहनें हैं.

कामरेड महेश ने 8वीं तक पढ़ाई की. उसके बाद पढ़ने की अनुमति गरीबी ने उन्हें नहीं दी थी. बाद में वह पढ़ाई छोड़ कर सभी कामकाज में मां–बाप का हाथ बंटाने लगे.

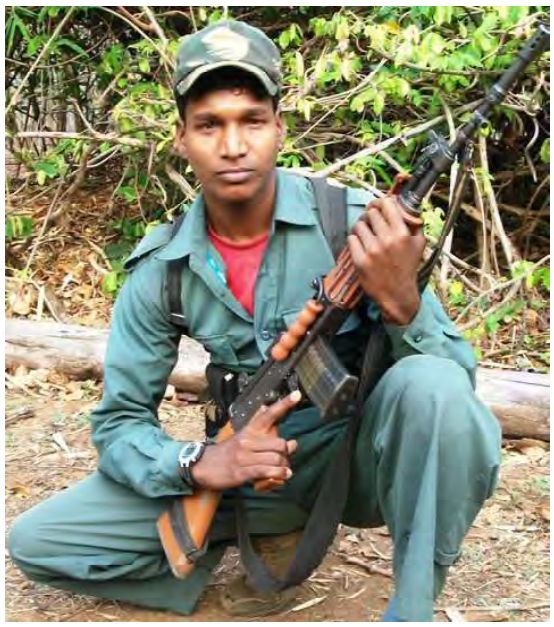

न सिर्फ कामरेड महेश का गांव बल्कि उसके आस–पास का क्षेत्र वर्ग संघर्ष से प्रभावित हुआ है. उस प्रभाव से कामरेड महेश अछूता नहीं रह पाए. 2006 में मिलिशिया में भर्ती होकर उन्होंने क्रांति के लिए अपना योगदान शुरू किया. दो वर्ष तक मिलिशिया में काम करने के बाद 2008 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन कर गुरिल्ला दस्ते में भर्ती हुए. सुर्जागढ़ व कसनसुर दस्तों में उन्होंने अपना योगदान दिया. गुरिल्ला डॉक्टर बन कर उन्होंने कैडर व जनता की सेवा की. जन मिलिशिया कमांडर के रूप में भी उन्होंने अपना योगदान दिया था. उस जिम्मेदारी निभाते हुए दुश्मन को हैरान–परेशान व घायल करने वाली कई कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया.

उनकी बढ़ती क्षमता व अनुशासन को ध्यान में रख कर 2011 में डिविजन कमेटी ने उन्हें पदोन्नति देकर कसनसूर एसी में लिया. बाद में कसनसूर दस्ते का कमांडर बन कर एरिया कमांडर इन चीफ, डिविजन कमांड सदस्य व एरिया एमआई इंचार्ज की जिम्मेदारी उन्होंने निभायी. एमआई इंचार्ज रह कर उन्होंने कई सोर्सेस बनाए और एमआई यूनिटों का गठन किया. इनके ऊपर निर्भर होकर कई एंबुशों और कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया और मुखबिरों को सबक सिखाया गया. उतना ही नहीं दुश्मन का ठोस समाचार पाने की वजह से कई बार गुरिल्ला बल दुश्मन के हमलों से बच गए.

सैनिक क्षेत्र में कामरेड महेश का अविस्मरणीय योगदान रहा. उन्होंने 2013–18 के बीच में कसनसूर एलजीएस कमांडर की जिम्मेदारी से रिलीव होकर डिविजन एक्शन टीम की जिम्मेदारी निभाई. 2019–20 में पश्चिम सब जोनल एक्शन टीम का दायित्व निभाया. इन दोनों एक्शन टीमों के प्रयास के फलस्वरूप कुछ राजनीतिक नेताओं व कोवर्टों को खतम किया गया. टिप्रागढ़ एरिया के कोडगुल पुलिस कैंप के नजदीक किए गए एंबुश में पुलिस के दो जवान मारे गए. पुन्नूर एंबुश में एक जवान घायल हुआ. कोंदावाही एंबुश में भी कुछ पुलिस जवान घायल हुए. विकासपल्ली एंबुश में एक जवान घायल हुआ. इन घटनाओं के अलावा कुरेनार, बस्मानटोला आपर्चुनिटी एंबुशों, कोटमी में तीन बार किए गए एंबुशों, पेरकेडाल फायरिंग, घोटसूर व रेंगाटोला कार्रवाइ में उन्होंने भाग लिया.

कामरेड महेश ने अपनी क्रांतिकारी जिंदगी में लगभग 34 मुठभेड़ों का सामना किया. सभी मुठभेड़ों में उन्होंने अपनी हिम्मत, पहलकदमी, समयस्फूर्ति व दृढ़संकल्प का परिचय देते हुए दुश्मन का डटकर मुकाबला किया. खोब्रामेंडा मुठभेड़ में घायल होने के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी. दुश्मन के घेराव को तोड़ कर रिट्रीट होने में सफल हुए.

कई जन संघर्षों में भी कामरेड महेश की भागीदारी रही. जनता की विभिन्न समस्याओं के हल, बांस कटाई, तेंदुपत्ता तोड़ाई की मजदूरी बढ़ाने, धान व वनोपजों का समर्थन मूल्य आदि मांगों को लेकर स्थानीय पार्टी के साथ मिलकर उन्होंने जनता को संगठित किया और हजारों जनता को एकत्रित करके जनांदोलनों को संचालित किया. सुर्जागढ़ खदान के खिलाफ जारी जनांदोलन में भी कामरेड महेश की भूमिका रही. दमन के खिलाफ संचालित जनांदोलनों में भी उन्होंने भाग लिया.

कामरेड महेश ने 2015 में कामरेड सुनीता के साथ शादी कर ली. दोनों की वैवाहिक जिंदगी आदर्शपूर्ण रही. मई 2021 में पैडी जंगल में दुश्मन द्वारा किए गए हमले में कामरेड सुनीता की शहादत हुई. उस दुख से उबर कर कामरेड महेश क्रांति में आगे बढ़े.

कामरेड जोगाल पोडियम (लोकेश) को लाल सलाम!

कामरेड जोगाल पोडियम (लोकेश) लगभग 35 वर्ष पहले दक्षिण बस्तर डिविजन, बीजापुर जिला, उसूर तहसील के मंडील गांव में पैदा हुए. वह मां सुक्की और बाप पांडू पोडियम के सबसे छोटे व लाड़ले बेटे थे और तीन बहनों और एक भाई के प्यारे छोटे भाई थे. वे क्रांतिकारी माहौल में पल–बढ़ गए. 2005 में शुरू हुए सलवाजुडुम फासीवादी सैनिक अभियान द्वारा मचाए गए आतंक को उन्होंने अपनी आंखों से देखा. उस आतंक को हराने के मकसद से 2006 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर वह पीएलजीए में भर्ती हुए.

अपने एरिया में उन्होंने एक साल भी काम नहीं किया. क्रांतिकारी जरूरत के मुताबिक पार्टी द्वारा किए गए तबादले को सहर्ष के साथ स्वीकारते हुए 2007 में उन्होंने गढ़चिरोली की संघर्षरत धरती पर कदम रखा. वहां की 4वीं कंपनी में उनकी नियुक्ति हुई. वहां काम करते हुए उन्होंने अपनी राजनीतिक व सैनिक क्षमता को बढ़ाते हुए अपने आप को एक सक्षम सैनिक योद्धा के रूप में ढाल दिया. 2008 में अहेरी एरिया के कोरेपल्ली गांव के पास 4वीं कंपनी द्वारा किए गए पहले सफल हमले में उन्होंने अपना योगदान दिया. इसके बाद मरकानार, मुगनेर, गोडलवाही, हाथिगोठा, मदनवेडा, लाहेरी, सावरगांव, पुसटोला आदि बड़ी कार्यवाहियों में और कई छोटी व मध्यम किस्म की कार्रवाइयों में उन्होंने अपना योगदान दिया. हर वर्ष संचालित टीसीओसी में उन्होंने भाग लिया. कई कार्रवाइयों में उन्होंने स्काउट के रूप में सक्रिय भूमिका निभाई. 2011 में पीएलजीए द्वारा किए गए खोब्रामेंडा एंबुश में कामरेड लोकेश घायल हुए. उस घाव से उबर कर वह फिर जंग–ए–मैदान में कूद पड़े. दुश्मन द्वारा किए गए लगभग 15 हमलों का उन्होंने हिम्मत व साहस के साथ सामना किया.

अपनी राजनीतिक, सैद्धांतिक व सैनिक क्षमता बढ़ाने के लिए उन्होंने पश्चिम सब जोन में संचालित एलटीपी, एमएलटीपी में भाग लिया.

अपनी 15 वर्षीय क्रांतिकारी जिंदगी में उन्होंने मेन फोर्स व सेकंडरी फोर्स में ही काम किया. 2014 में जब पलटन–15 के कमांडर की गिरफ्तारी हुई कामरेड लोकश ने उस जिम्मेदारी को उठाया. 2019 तक उस जिम्मेदारी को निभा कर 2019 के आखिरी में फिर 4वीं कंपनी में स्थानांतरित होकर शहीद होने तक उस कंपनी के कमांडर की जिम्मेदारी निभायी.

किसी भी हालत में कामरेड लोकेश घबराते नहीं थे. धीरता के साथ सोच कर निर्णय लेते थे. कोई भी जिम्मेदारी उन्हें दी जाती उसे निभाने के लिए वह हर हमेशा तैयार रहते थे. कंपनी का सटीक समन्यव करते थे.

कामरेड लेकेश शादी–शुदा थे. 2014 में उन्होंने एक साथी कामरेड से शादी कर ली. कामरेड लोकेश जनता व साथी कामरेडों के साथ घुलमिल जाते थे. वहां की भाषा सीखने की कोशिश करते थे. जनता की हालत समझने की कोशिश करते थे. जल, जंगल, जमीन पर अधिकार हासिल

अपनी राजनीतिक, सैद्धांतिक व सैनिक समझदारी व क्षमता बढ़ाने के लिए एलटीपी व एमएलटीपी में शामिल होकर उन्होंने शिक्षण–प्रशिक्षण हासिल किया. उनकी चेतना, प्रतिबद्धता व क्षमता को ध्यान में रख कर पश्चिम सब जोनल ब्यूरो ने 2018 में उन्हें डीवीसी की पदोन्नति दी. 2020 में एक्शन टीम से रिलीव करके उन्हें उत्तर गढ़चिरोली डिविजनल कमेटी में शामिल किया गया. वहां डिविजनल कमांडर इन चीफ की जिम्मेदारी निभाते हुए ही चातगांव एरिया कमेटी सचिव का दयित्व भी उन्होंने संभाल लिया.

मई 2020 में सीनभट्टी मुठभेड़ में कसनसूर एरिया कमेटी की जिम्मेदारी निभा रही आरसी स्तर की जन नेत्री कामरेड सृजना की शहादत हुई. ऐसे वक्त में चातगांव व कसनसूर दोनों एरियाओं को मिला कर एक ही एसी बना दिया गया, जिसका दायित्व कामरेड महेश ने संभाला.

इस तरह क्रांतिकारी जरूरतों के अनुसार कई जिम्मेदारियां निभाने वाले एक सक्षम व विश्वसनीय नेता को गढ़चिरोली आंदोलन ने खो दिया. आज की युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों को ऊंचा उठाते हुए आगे बढ़ना चाहिए.

कामरेड महेश अमर रहें!

कामरेड नवलूराम तुलावी (दिलीप) को लाल सलाम!

क्रांति में कदम रखने के बाद कामरेड दिलीप के नाम पर लोकप्रिय हुए नवलूराम तुलावी (33) की पैदाइश गढ़चिरोली जिला, धनोरा तहसील, गजामेढ़ी गांव में हुई. जमीन के अभाव के चलते उनका परिवार छत्तीसगढ़ राज्य से यहां आया हुआ था. जमीन के लिए उस परिवार को कई तकलीफों का सामना करना पड़ा. जमीन के अभाव के चलते वन विभाग की जमीन में खेती करने से सरकार व वन विभाग के दमन व उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था. ऐसे समय में 1980–85 के बीच में उस इलाके में तत्कालीन पीपुल्सवार पार्टी का आगमन हुआ. पार्टी के नेतृत्व में जनता को जमीन मिली. सरकार व वन विभाग का जुल्म खतम हुआ. नतीजतन क्रांतिकारी पार्टी के प्रति जनता का विश्वास बढ़ने लगा. जनता क्रांतिकारी जन संगठनों में गोलबंद होने लगी. मिलिशिया में काम करने लगी. गुरिल्ला दस्तों में भर्ती होने लगी. इस क्रांतिकारी माहौल में पैदा होकर क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेते हुए बड़े होने वाले कामरेड नवलूराम भी 2006 में गुरिल्ला दस्ते में भर्ती हुए. बाद में जनता में उनका परिचय दिलीप के नाम से हुआ.

भर्ती होने के बाद कुछ वक्त के लिए चातगांव दस्ते में काम करने के बाद 2007 में कामरेड दिलीप का तबादला टीडी में किया गया. वहां से दिसंबर 2009 में 4वीं कंपनी में उन्हें स्थानांतरित किया गया. कंपनी में उनके कामकाज को ध्यान में रख कर 2011 में उन्हें पीपीसी में लिया गया और सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई. कंपनी और सेकंडरी बलों द्वारा किए गए कई बड़ी, मध्यम व छोटी कार्यवाहियों में उन्होंने भाग लिया. पीएलजीए द्वारा दुश्मन पर किए गए मुगनेर, गोडेलवाही, मरकानार, हाथीगोटा, मदनवेडा, लाहेरी, सावरगांव, खोब्रामेंडा आदि कई हमलों में उनकी भागीदारी थी. कंपनी में 2009 से लेकर 2014 तक उन्होंने एलएमजी मेन के रूप में अपना योगदान दिया. 2013 में दुर्घटनावश हुए गोलाबारूद विस्फोट का वे बुरी तरह शिकार हो गए. उनके चमड़े का 90 प्रतिशत हिस्सा जल गया. इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी. उससे उबर कर फिर वह कंपनी–4 में कार्यरत हो गए.

कामरेड दिलीप विभिन्न खूबियों के धनी थे. वे एक अच्छे डॉक्टर थे. टीडी में काम करके वे एक अच्छे तकनीशियन बन गए. वे एक अच्छे स्नाइपर भी थे. वैसे ही ग्रेनेड फेंकने व मोर्टार दागने में उन्होंने निपुणता हासिल की. एलएमजी मेन के रूप में उन्होंने अपनी अनमोल सेवाएं दीं. कोई भी विषय सीखने में वह तत्पर रहते थे. एलटीपी और एमएलटीपी में शामिल होकर उन्होंने अपनी राजनीतिक व सैनिक क्षमता बढ़ायी.

कामरेड दिलीप एक धीर व दृढ़ संकल्पित कामरेड

(शेष भाग पेज 25 में...)

करने के मकसद से लड़ने के लिए जनता को प्रेरित करते थे. गांव के बच्चों व नवजवानों के साथ दोस्ती करते हुए उनमें क्रांति के बीज बोते थे. इस तरह टिपागढ़, चातगांव, कसनसूर व कोरची एरियाओं में वे जनता के प्यारे सपूत बन गए. इसलिए जनता उन्हें सक्रिय मदद देते थे. जनता द्वारा दिए गए समाचार की वजह से कई बार उन पर दुश्मन के हमलें रुक गए. जब दो बार वह गंभीर अस्वस्थता का शिकार हुए तब इसकी पुख्ता सूचना पाकर दुश्मन बल पहुंच गये. लेकिन जनता की सक्रियता व सावधानी की वजह से दोनों मौकों पर उनकी टीम पर हमलें होते–होते बच गए.

केंद्रीय कमेटी के सदस्य कामरेड दीपक को एमएमसी में पहुंचाने के लिए गठित विशेष कंपनी के कमांडर का दायित्व उन्हें दिया गया. जब उन्होंने उस कंपनी का समन्वय करते हुए जा रहे थे, पारेवा गांव के पास सुनियोजित ढंग से दुश्मन द्वारा किए गए भीषण हमले में वह पहले ही घायल हुए थे. इसके बावजूद आत्मबलिदानी भावना के साथ लड़ते हुए, टोटल कंपनी का समन्वय करते हुए नेतृत्व को बचाने के लिए आखिरी दम तक उन्होंने कोशिश की. उनका लड़ाकू जज्बा सब के लिए प्रेरणादायक है.

कामरेड लोकेश अमर रहें!

कामरेड मंगू कलमो (धर्मू) को लाल सलाम!

बीजापुर जिला, गंगालूर एरिया, पिडिया पंचायत के मदुम गांव में लगभग 30 साल पहले कामरेड मंगू का जन्म हुआ. कामरेड मंगू की मां का नाम पायकी और बाप का नाम लखमू कलमो. उनकी चार बहनें और एक बड़े भाई हैं. उनके छोटे भाई भी क्रांतिकारी आंदोलन में शहीद हुए.

2006 में 16 वर्षीय छोटी उम्र में ही कामरेड धर्मू की पार्टी में भर्ती हुई. एक वर्ष अपने डिविजन में ही कार्यरत होकर उन्होंने छात्र संगठन में काम किया. जुलाई 2007 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. नवंबर 2008 में उनका तबादला गढ़चिरोली डिविजन में किया गया. वहां उन्हें गार्ड जिम्मेदारी दी गई. 2010 में उनका तबादला 10वीं कंपनी में किया गया. 2011 तक एसजडसीएम की गार्ड जिम्मेदारी निभाने वाले कामरेड धर्मु की नियुक्ति 2012 में 4वीं कंपनी में हुई. 2011 में उन्हें पीपीसी की पदोन्नति दी गई.

मुगनेर, गोडलवाही, मरकानार, हाथीगोटा, मदनवेडा, लाहेरी, खोब्रामेंडा, अवलवर्षी, कुरेनार आदि बड़े व सफल हमलों में उन्होंने भाग लिया. एक ओर गार्ड जिम्मेदारी निभाते हुए ही कई हमलों में वे शामिल हुए. क्लोज बैटिल में दुश्मन को खतम करने में और हथियार सीज करने में वह अग्रिम पंक्ति में हुआ करते थे. ऐसी कोई घटना नहीं थी जिसमें उनके साहस का परिचय न हुआ हो. वह साथी कामरेडों को भी हिम्मत के साथ लड़ने प्रोत्साहण देते थे. हर वर्ष संचालित टीसीओसी व प्रतिरोध कार्रवाइयों में वह शामिल होते थे. सैनिक क्षेत्र में अपना योगदान देते हुए वह सीवाईपीसी स्तर तक विकसित हुए. सितंबर 2021 में आयोजित कंपनी प्लीनम में वह सीवाईपीसी में चुन गए.

एमएलटीपी में शामिल होकर कामरेड धर्मु ने प्रशिक्षण लिया. इन्स्ट्रक्टर के रूप में भी उन्होंने प्रशिक्षण लिया. कई मौकों पर उन्होंने मिलिशिया को प्रशिक्षण दिया. ऐसा प्रशिक्षण देते हुए और राजनीतिक रूप से उनकी चेतना बढ़ाते हुए ऐसी कठिन परिस्थिति में भी उन्होनें एक–दो लोगों को पीएलजीए में भर्ती किया.

दुश्मन द्वारा किए गए कई हमलों का कामरेड धर्मु ने हिम्मत से मुकाबला किया. नारकसा, मुरचुल आदि हमलों में प्रतिरोध करते हुए दुश्मन के घेराव को तोड़ कर वह रिट्रीट हो गए. दुश्मन द्वारा अचानक किए गए हमलों का बिना कोई घबराहट वे हिम्मत के साथ प्रतिरोध करते थे. पारेवा हमले में भी कामरेड धर्मु ब्रेकिंग फोर्स में रह कर दुश्मन के घेराव को तोड़ने के लिए कोशिश की. इस कोशिश में जब एलएमजी मेन कामरेड रिमन की शहादत हुई कामरेड धर्मु ने कुछ वक्त तक एलएमजी को हैंडिल किया. हालांकि कुछ वक्त के बाद गोली लगने की वजह से उनकी शहादत हुई.

2016 में ऊपर कमेटी के नेतृत्व की सुरक्षा के तहत कामरेड धर्मु ओडिशा राज्य गए थे. वहां 7 महीने तक रहे थे. उस वक्त उन्होंने एक सेक्शन के कमांडर की जिम्मेदारी और टोटल कंपनी की डेफेंस जिम्मेदारी निभाई. उस जिम्मेदारी को उन्होंने बखूबी निभाया. उन सात महीनों में एसओजी कमांडों के साथ पांच बार मुठभेड़ हुईं. इन सभी मुठभेड़ों में कामरेड धर्मु ने अपने सेक्शन का सटीक समन्वय करते हुए दुश्मन का मुकाबला करते हुए नेतृत्व को बचाने में अच्छी भूमिका निभाई. उस वक्त पहला हमला कामरेड धर्मु के सेक्शन पर ही हुआ. दुश्मन का हिम्मत से प्रतिरोध करते हुए उन्होंने अपने सेक्शन को रिट्रीट कराया. और दो हमलों के दौरान भी उन्होंने अहम भूमिका निभायी. इस तरह नेतृत्व को सुरक्षित रूप से डीके पहुंचाने में उन्होंने अपनी भूमिका निभाई.

कामरेड धर्मु एक अच्छे कलाकार थे. कला के माध्यम से राजनीतिक प्रचार करते हुए युवाओं को वह क्रांति के प्रति आकर्षित करते थे. कोरची, टिप्रागढ़, चातगांव, कसनसूर इलाकों की जनता के साथ कामरेड धर्मु का जीवंत संबंध बन गया. जनता की बोली–भाषा सीख कर वे जनता के साथ घुलमिल जाते थे. जनता के साथ उन्होंने कभी नौकरशाही व्यवहार नहीं अपनाया. इसलिए जनता उन्हें प्यार करती थी.

कामरेड धर्मु एक अनुशासित कामरेड थे. आंदोलन की कठिन परिस्थिति में वह अडिग रहे थे. उनकी जीवनसाथी उन्हें धोखा देकर पार्टी छोड़ कर भाग गई थी. कामरेड धर्मु की क्रांतिकारी दृढ़ता पर इसका असर जरा भी नहीं पड़ा. जनता व क्रांति के प्रति अटूट विश्वास के साथ वे आगे बढ़ते रहे.

इस तरह एक उभरते हुए सैनिक कमांडर को गढ़चिरोली आंदोलन ने खो दिया. उनके आशयों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ेंगे.

कामरेड धर्मु अमर रहें!

कामरेड कोवासी जोगाल (सन्नू) को लाल सलाम!

बीजापुर जिला, दक्षिण बस्तर डिविजन, पामेड एरिया, उसूर एलओएस, गुंडेरगुडा गांव के एक गरीब परिवार में लगभग 30 वर्ष पहले कामरेड जोगाल पैदा हुए. मां भीमे और बाप उंगाल की छह संतान में वह चौथे नंबर के थे. उनकी तीन बड़ी बहनें और उनके एक बड़े भाई व एक छोटा भाई है.

बाल संगठन के जरिए उनके क्रांतिकारी प्रस्थान की शुरुआत हुई. बाद में पंचायत सीएनएम में भी उन्होंने अपना योगदान दिया. 2006 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. कुछ वक्त तक उन्होंने अपने ही एरिया में काम किया. जुलाई 2007 में उनका तबादला गढ़चिरोली डिविजन में किया गया था, जहां उनका परिचय सन्नू के नाम से हुआ. गढ़चिरोली में उनकी नियुक्ति 4वीं कंपनी में हुई. 2010 तक वह उस कंपनी में कार्यरत थे. कामरेड सन्नू के अनुशासन, जिम्मेदारी को निभाने की क्षमता व दृढ़संकल्प ध्यान में रख कर कंपनी पार्टी कमेटी ने 2010 में उन्हें पीपीसी की पदोन्नति दी. उसके बाद क्रांतिकारी जरूरतों के मुताबिक उनका तबादला डिविजन आई टीम में किया गया. डिविजनभर के मिलिशिया सदस्यों को प्रशिक्षण देने के मकसद से गठित इस आई टीम के कमांडर की जिम्मेदारी उन्होंने 2012 तक निभायी. उन तीन वर्षों में उन्होंने सैकड़ों मिलिशिया सदस्यों को शिक्षण व प्रशिक्षण पहुंचाया. 2013 में कामरेड सन्नू को कसनसूर एरिया में स्थानांतरित किया गया. उनकी सैनिक क्षमता को ध्यान में रख कर उन्हें उस एरिया की रक्षा विभाग की जिम्मेदारी दी गई. उसके बाद कसनसूर–चातगांव संयुक्त एसी के कमांडर की जिम्मेदारी निभाई. एरिया में मौजूद हर गांव की परिस्थिति को जानने व आंकलन करने में उन्होंने अच्छा अनुभव हासिल किया. जनता की समस्याओं का अध्ययन करके उनके हल के लिए वह अपनी एरिया कमेटी में चर्चा करते थे.

सैनिक क्षेत्र में भी कामरेड सन्नू ने कई अनुभव हासिल किए. कामरेड सन्नू गढ़चिरोली में कदम रखने के बाद से कई सैनिक कार्रवाइयों में शामिल हुए. लाहेरी, मदनवेडा, हाथीगोटा, जारावाडा आदि लगभग 9 एंबुशों में उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया. पीएलजीए के मुकामों पर दुश्मन द्वारा किए गए कई हमलों व मुठभेड़ों में उन्होंने दुश्मन का मुकाबला किया. तोडगटा, पिडमेल, मडोली, बुर्गी, कारका, इरपगुटा, मेडरी, गांगीन, काकूर, हेटाडकसा, खोब्रामेंडा, एननार, चिचोडा, जारावाडा, गट्टा, मुरचुल आदि घटनाओं में उन्होंने हिम्मत के साथ दुश्मन से लोहा लिया. इन मुठभेड़ों के दौरान जरा भी आगे–पीछे न होकर साहस, दृढ़संकल्प, पहलकदमी, समयस्फूर्ति व समन्वय के साथ दुश्मन के खिलाफ लड़ते हुए साथी कामरेडों को रिट्रीट कराने में कामरेड सन्नू ने अच्छी भूमिका निभाई. इसलिए उन्होंने साथी कामरेडों का विश्वास जीत लिया. जो भी दस्ते में वे रहते थे पूरा दस्ता उन पर भरोसा रखता था. कामरेड सन्नू हर विषय को सैनिक दृष्टिकोण से देखते थे. वह जहां भी हो हर वक्त डेरा की सुरक्षा, संतरी, पाट्रोलिंग आदि विषयों पर ध्यान देते थे. खोब्रामेंडा मुठभेड़ में कामरेड सन्नू घायल हुए. उसके बावजूद वे जंग–ए–मैदान में आग बढ़ते रहे.

गांव, कमेटी व संगठन में आने वाले बदलावों की जांच करते हुए सही आकलन करते हुए मुखबिर जाल और जन विरोधियों को पहचान करके अपनी कमेटी में चर्चा करके मुखबिर जाल को ध्वस्त करने में उनकी सक्रिय भूमिका रही.

अपनी राजनीतिक क्षमता को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करके काम करने वाले कामरेड सन्नू ने शादी के लिए कोई जल्दबाजी नहीं दिखाई. पार्टी नियम का पालन करते हुए 2021 में कामरेड सुक्की से शादी करने का प्रस्ताव संबंधित पार्टी कमेटी के सामने रखा. पार्टी कमेटी ने उस प्रस्ताव का अनुमोदन किया. लेकिन शादी के पहले ही पैडी घटना में कामरेड सुक्की की शहादत हुई. उस गम से उबर कर शहीदों के आशयों को पूरा करने की स्फूर्ति को लेकर वह आगे बढ़ गए.

कामरेड सन्नू की राजनीतिक, सैद्धांतिक, सांगठनिक व सैनिक क्षमता को ध्यान में रख कर अगस्त 2021 में आयोजित उत्तर गढ़चिरोली प्लीनम ने उन्हें डीवीसी के वैकल्पिक सदस्य के रूप में चुना.

इसके कुछ ही महीने के बाद पारेवा हमले में नेतृत्वकारी कामरेडों को बचाने के लिए दुश्मन के साथ डटकर लड़ते हुए कामरेड सन्नू ने अपनी जान की कुरबानी दी. इस तरह एक उभरते हुए नव जवान नेता को क्रांतिकारी आंदोलन ने खो दिया. कामरेड सन्नू के आशयों को ऊंचा उठाएंगे.

कामरेड सन्नू अमर रहें!

कामरेड उरसाम कमलू (रमलू, अरुण) को लाल सलाम!

बीजापुर जिला, पश्चिम बस्तर डिविजन, भैरमगढ़ एरिया, मिरतुल एलओएस, पोर्मा गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में लगभग 26 वर्ष पहले कामरेड कमलू का जन्म हुआ. वह पांडे और सुक्कू दंपति के दूसरे बेटे थे. उन्हें दो भाई और एक बहन है. उन्होंने तीसरी कक्षा तक पढ़ाई की. 2007 में उनका रिश्ता बाल संगठन से जुड़ गया. मिलिशिया में भी उन्होंने कुछ वक्त तक काम किया. वह 2011 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर पार्टी में भर्ती हुए. बाद में उन्होंने एक वर्ष तक स्थानीय गुरिल्ला दस्ते में काम किया.

2012 में उन्हें एक एसजडसीएम की गार्ड जिम्मेदारी दी गई. उन्होंने हंसीखुशी से उस जिम्मेदारी को उठायी. 2019 तक उन्होंने उस जिम्मेदारी निभाई. गार्ड के रूप में कामरेड रमलू ने एक आदर्श मिसाल पेश की.

कामरेड रमलू की राजनीतिक, सैद्धांतिक, सांगठनिक व सैनिक चेतना व समझदारी ध्यान में रख कर 2017 में उन्हें पीपीसी की पदोन्नति दी गई. बाद में उन्हें गार्ड टीम का कमांडर बना दिया गया. गार्ड टीम का कमांडर रह कर उन्होंने साथी कामरेडों को अनुशासन सिखाया. पढ़ाई, पीटी, ड्रिल्स सिखाए. उस टीम में एक राजनीतिक माहौल बनाया रखा.

2018 में वह अस्वस्थता का शिकार हुए. लेकिन उसका परवा किए बिना वह दृढ़तापूर्वक अपनी जिम्मेदारी निभाते रहे.

2019 में कामरेड रमलू का गढ़चिरोली आंदोलन में तबादला किया गया. वहां उनका परिचय अरुण के नाम से हुआ. गढ़चिरोली के चातगांव एरिया में उनकी नियुक्ति हुई. उनके वहां जाने के बाद उस एरिया के सचिव सहित कई लोग आंदोलन से भाग गए. उस कठिन परिस्थिति का कामरेड अरुण ने दृढ़तापूर्वक सामना किया. चातगांव दस्ते के कमांडर की जिम्मेदारी उठा कर एक वर्ष तक काम किया. बाद में कामरेड सृजना की शहादत की पृष्ठभूमि में चातगांव और कसनसूर एरियाओं को मिला कर संयुक्त एसी बना दिया गया. उसके बाद संयुक्त एलजीएस के डिप्टी कमांडर की जिम्मेदारी उन्होंने निभाई. चातगांव क्षेत्र के निर्माण, मिलिशिया व जनताना सरकार की उन्होंने देख–रेख की. एमआई जिम्मेदारी भी उन्होंने निभाई. एक ऐसे समय में जब उस एरिया के सचिव व कमांडर नहीं रहे थे, कामरेड अरुण ने हिम्मत, साहस व पहलकदमी के साथ काम किया. इस तरह कम समय में ही कामरेड अरुण उस एरिया की भाषा सीख कर जनता में घुलमिल हो गए और उन्होंने उस एरिया पर पकड़ हासिल की.

कामरेड अरुण संतरी व पाट्रोलिंग आदि सैनिक विषयों पर ध्यान देते थे. तकनीकी विषयों के प्रति सावधान रहते थे. गढ़चिरोली में तबादला होने के बाद कामरेड अरुण ने कई मुठभेड़ों का सामना किया. फुलकोडो, हेट्टडकसा, खोब्रामेंडा आदि मुठभेड़ों में उन्होंने दुश्मन का डटकर सामना किया.

कामरेड अरुण अध्ययन पर ध्यान देते थे. जनता की समस्याओं का भी अध्ययन करते थे. नये विषयों को सीखने की दिलचस्पी दिखाते थे. साथी कामरेडों, संगठनों व मिलिशिया सदस्यों को सिखाने की भी कोशिश करते थे. कई विषयों पर राजनीतिक रूप से चर्चा करते थे.

कामरेड अरुण राजनीतिक, सैद्धांतिक, सांगठनिक व सैनिक क्षमता को ध्यान में रख कर 2021 में आयोजित उत्तर गढ़चिरोली डिविजन प्लीनम ने उन्हें वैकल्पिक डीवीसीएम चुना. हालांकि कुछ ही वक्त में उनकी शहादत हुई.

कामरेड अरुण शादीशुदा थे. उन्होंने शादी के लिए कभी जल्दबाजी नहीं दिखायी. कमांडर होने के बाद उन्होंने कामरेड रजनी से शादी करना चाहा था. पार्टी के अनुमति लेकर अक्टूबर 2020 में दोनों ने शादी कर ली. हालांकि कुछ ही वक्त के बाद मई 2021 में पैडी घटना में कामरेड रजनी की शहादत हुई. उस दुख से पूरी तरह उबर नहीं पाए इतने में कामरेड अरुण की भी शहादत हुई. इस तरह गढ़चिरोली आंदोलन ने एक विश्वसनीय नवजवान कामरेड को खोया.

कामरेड अरुण अमर रहें!

कामरेड दलसू गोटा (बंडू)

कामरेड दलसू गोटा (बंडू) शहादत के वक्त पीपीसीएम की हैसियत से एक्शन टीम सदस्य के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभा रहे थे. उनका जन्म गढ़चिरोली जिला, एटापल्ली तहसील, गोरगुट्टा गांव के एक गरीब परिवार में लगभग 33 वर्ष पहले हुआ था. मां–बाप की पांच संतान में वह सबसे बड़े थे.

2006 में उनकी भर्ती हुई. उसी वर्ष एक एक्शन के लिए सूरजागढ़ जाने वाले कामरेड बंडू को पुलिस ने

गिरफ्तार किया. लगभग तीन वर्ष जेल जिंदगी बिताने के बाद 2009 में उनकी रिहाई हुई. उसके बाद दो वर्ष तक घर में ही रह कर उन्होंने काम किया. 2011 में वह फिर गुरिल्ला जिंदगी में शामिल हुए. उनकी नियुक्ति सब जोनल एक्शन टीम में हुई. ऐटापल्ली में राजनीतिक नेता और बांदे टाउन में एसपीओ को खतम की गई कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. 2019 में सी–60 कमांडों के 15 जवानों को खतम किए गए हमले में कामरेड बंडू स्काउट जिम्मेदारी निभाई. स्काउट के रूप में भी उन्होंने अच्छा अनुभव हासिल किया. भीषण दमन में उन्होंने कई मुठभेड़ों का हिम्मत के साथ सामना किया. 2020 में उन्हें पीपीसी में लिया गया. कामरेड बंडू एक सीधासादा व अनुशासित कामरेड थे.

कामरेड बंडू अमर रहें!

कामरेड सोनू कोर्राम (जयमन, किसान)

शहादत के वक्त कामरेड किसान कोरची एलजीएस कमांडर की जिम्मेदारी निभा रहे थे. उन्होंने लगभग 30 वर्ष पहले पूर्व बस्तर डिविजन, कोंडागांव जिला, मरदापाल तहसील, किल्लेम राजूपारा में जन्म लिया. उनके पिता का नाम राजू है. उनकी दो बहन हैं और उनका एक छोटा भाई है.

2007 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. जयमन के नाम पर पूर्व बस्तर डिविजन में पहले डिविजनल एक्शन टीम सदस्य और बाद में उस टीम के कमांडर के रूप में उन्होंने अपना योगदान दिया. 2009 में उन्हें एसी सदस्यता दी गई. 2015 में उनका तबादला उत्तर गढ़चिरोली डिविजन में किया गया. वहां उन्हें कोरची एलजीएस डिप्टी कमांडर की जिम्मेदारी दी गई. 2019 में वह उस एलजीएस का कमांडर बन गए.

कामरेड किसान ने कुल मिला कर 29 कार्रवाइयों में दुश्मन का साहस के साथ मुकाबला किया. सांगठनिक काम में भी उनका योगदान रहा. एलजीएस कमांडर की जिम्मेदारी निभाते हुए ही उन्होंने एरिया डीएकेएमएस अध्यक्ष का पदभार भी संभाल लिया. कोरची एरिया में विस्थापन के विरोध में और जल, जंगल व जमीन पर जनता के अधिकार के लिए उन्होंने कई जन आंदोलनों का नेतृत्व किया. वह एक सीधासादा, अनुशासित व संतुलित कामरेड थे.

कामरेड किसान अमर रहें!

कामरेड तिलक झाड़े (भगत, प्रदीप)

शहादत के वक्त पीपीसीएम की हैसियत वाले कामरेड तिलक झाड़े (भगत, प्रदीप) सीसीएम कामरेड मिलिंद तेलतुम्डे (दीपक) की गार्ड टीम की कमांडर जिम्मेदारी निभा रहे थे. वह लगभग 25 वर्ष पहले गढ़चिरोली जिला, कोरची तहसील, डोलडोंग्री गांव के एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे. उनके मां–बाप का देहांत हो गया. गुजर–बसर के लिए उन्हें इधर–उधर काम करना पड़ा.

2010 में वह पीएलजीए में शामिल हुए. भर्ती होने के बाद कामरेड दीपक के गार्ड के तौर पर उनकी नियुक्ति हुई. 2014 में उन्हें पीपीसी सदस्यता दी गई. 2020 में उन्हें गार्ड टीम कमांडर बना दिया गया. गार्ड के रूप में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. कई मुठभेड़ों में अपने कमांडर को बचा लिया. 2019 में हुई बखोदा मुठभेड़ में वह घायल हुए. उसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी. पारेवा मुठभेड़ में आखिरी सांस तक अपने कमांडर को बचाने के लिए दुश्मन के साथ लड़ते हुए उन्होंने अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड भगत अमर रहें!

कामरेड मुचाकी मूये

कामरेड मुचाकी मूये (28) एरिया कमेटी सदस्या थी. उन्होंने सुकमा जिला, दक्षिण बस्तर डिविजन, कोंटा एरिया के रेगडगट्टा गांव के मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लिया. वह मां–बाप की दूसरी संतान थी. उनकी एक बड़ी बहन और उनका एक छोटा भाई भी है.

क्रांतिकारी क्षेत्र में पलने–बढ़ने की वजह से स्वाभाविक रूप से ही वह बचपन में ही क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति

आकर्षित हुई. बाल संगठन, मिलिशिया और केएएमएस में उन्होंने अपना योगदान दिया. 2009 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गई. तब से लेकर लगभग 11 वर्ष उन्होंने कोंटा एरिया में काम किया. 2014 से एलजीएस में काम किया. उस दस्ते की डिप्टी कमांडर जिम्मेदारी भी उन्होंने निभाई. 2020 में उन्हें पीपीसी में लिया गया.

कामरेड मूये ने सैनिक क्षेत्र में अच्छा अनुभव हासिल किया. मिलिशिया में रहते समय उन्होंने मुरकीनार एंबुश में भाग लिया. पेशेवर क्रांतिकारी बनने के बाद भेज्जी, कोत्ताचुरुवु, पिडमेल, बुरकापाल, एरन, कस्सलपाड, तोंडामरका, एलाड़मडगू, कोमलपाड, तुमीर, पोट्टेम, गाजुलगट्टा, मिनपा जैसे कई हमलों में उन्होंने अपनी भूमिका निभाई. दुश्मन के साथ हुई मुठभेड़ों में उन्होंने हिम्मत के साथ दुश्मन का मुकाबला करते हुए सथी कामरेडों को बचाया. वह दुबली–पतली होती थी. लेकिन अपने बीजीएल से बहादुराना ढंग से लड़ते हुए दुश्मन के दिल में दहशत पैदा करती थी.

2021 में उनका तबादला एमएमसी में किया गया. नए इलाके में काम करने के लिए जब वह क्रांतिकारी जोश के साथ जा रही थीं, बीच रास्ते में ही उनकी शहादत हुई. उनकी शहादत से क्रांतिकारी आंदोलन ने एक अनुभवी व उभरती हुई महिला कमांडर को खो दिया.

कामरेड मूये अमर रहें!

कामरेड पद्दा कल्लू (रतन, चेतन)

शहादत के वक्त कामरेड पद्दा कल्लू (रतन, चेतन) टिपागढ़ एसीएम की हैसियत से टिपागढ़ एलजीएस की कमांडर जिम्मेदारी निभा रहे थे. लगभग 22 वर्ष पहले

कामरेड चेतन का जन्म बीजापुर जिला, गंगालूर एरिया, परालनार गांव के एक मध्यम वर्गीय क्रांतिकारी परिवार में हुआ था. उनके पिता का नाम मंगू है. उनके दो भाई हैं. जबकि उनकी छोटी बहन फिलहाल जेल में है. कामरेड चेतन की बुआ कामरेड शांता कसनूर मुठभेड़ में शहीद हुई. उनके पिता भी क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होकर जेल गए थे.

सलवाजुडुम समय में उनके परिवार को कई तकलीफ उठानी पड़ी. कामरेड चेतन ने गुंडाधूर स्कूल में 5वीं तक पढ़ाई की. 2013 में बीसीटीसी में शिक्षा हासिल की. 2014 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर वह पीएलजीए में भर्ती हुए. बाद में एक सीसीएम की सुरक्षा टीम का सदस्य रह कर उन्होंने कंप्यूटर ऑपरेटर की जिम्मेदारी निभाई. उस काम में उन्होंने अच्छी पकड़ हासिल की.

2019 में उनका तबादला उत्तर गढ़चिरोली में किया गया. वहां वह छात्र ऑर्गनाइजर रहे. जुलाई 2021 में वह एलजीएस कमांडर बन गए. कम समय में ही वहां की परिस्थितियों को समझ कर भीषण दमन में भी जनता के साथ जीवंत संबंध बनाया रख कर उन्होंने काम किया.

कामरेड चेतन कसलपाड, चिंतागुफा, इरपानार, माहला, पिडमेल जैसे कई सफल एंबुशों में शामिल हुए. दुश्मन द्वारा किए गए कई हमलों का भी उन्होंने हिम्मत के साथ प्रतिरोध किया. मोलोलमेट्टा, खोब्रामेंडा आदि घटनाओं में उन्होंने दुश्मन का प्रतिरोध किया. कामरेड चेतन के रूप में गढ़चिरोली आंदोलन ने एक विश्वसनीय व सक्षम ऊर्जावान कमांडर को खोया.

कामरेड चेतन अमर रहें!

कामरेड अन्सो बोगा (योगिता)

शहादत के वक्त कामरेड योगिता पीपीसीएम की हैसियत से सीसीएम कामरेड दीपक की गार्ड रही. लगभग 30 वर्ष पहले कामरेड योगिता गढ़चिरोली जिला, धनोरा तहसील, गजमेंडी गांव के एक गरीब परिवार में पैदा हुई थी. वह मां मानोबाई और बाप सुक्कूराम बोगा की 7वीं संतान थी. वह चार बड़ी बहनों और तीन भाईयों की प्यारी बहन थी. कामरेड योगिता ने 4वीं तक पढ़ाई की. बचपन में खेती व घर के काम में मां–बाप का हाथ बंटाती थी.

उनकी बड़ी बहन फिलहाल पार्टी में कार्यरत हैं. 2006 में पार्टी से कामरेड योगिता का परिचय हुआ. 2008 में वह टिपागढ़ दस्ते में भर्ती हुई. उसके बाद उनका तबादला गोंदिया डिविजन में किया गया. वहां कामरेड विमला नाम से उन्होंने काम किया. बी–पीएल में रह कर उन्होंने डॉक्टर जिम्मेदारी निभाई. 2011 में उनका तबादला कोरची एरिया में किया गया. वहां भी उन्होंने डॉक्टर जिम्मेदारी निभाई. 2012 में उनकी नियुक्ति सीसीएम कामरेड दीपक की सुरक्षा टीम में हुई. वहां उन्होंने डॉक्टर

जिम्मेदारी भी निभाई. 2014 में उनका तबादला बालाघाट डिविजन में किया गया. वहां ए पीएल में उन्होंने अपना योगदान दिया. वहां उन्हें पीपीसी में लिया गया. 2018 तक उन्होंने ए पीएल में अपना योगदान दिया. 2018 में उनका तबादला फिर कामरेड दीपक की गार्ड टीम में किया गया. वहां उन्होंने गार्ड जिम्मेदारी के अलावा डॉक्टर व कंप्यूटर ऑपरेटर का दायित्व भी संभाला.

कामरेड योगिता सीधासादा, अनुशासित व मेहनती कामरेड थीं. वह अपने कमांडर का बहुत ख्याल रखती थीं. उन्होंने कई मुठभड़ों में दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए कामरेड दीपक को बचा लिया. कामरेड योगिता अलग–अलग गोंडी बोलियों के अलावा हिंदी, छत्तीसगढ़ी, मराठी व लांजोडी भाषाओं में बात कर सकती थीं. इसलिए गढ़चिरोली, गोंदिया, बालागाट आदि जिलों में जनता के साथ घुलमिल जाती थी.

कामरेड योगिता अमर रहें!

कामरेड साधू बोगा (प्रकाश)

कामरेड साधू बोगा (प्रकाश) पीपीसीएम थे. शहादत के वक्त वह एक्शन टीम में कार्यरत थे. 30 वर्ष पहले उन्होंने गढ़चिराली जिला, धनोरा तहसील, जाडा पंचायत, संबलपुर गांव के गरीब परिवार में पैदा हुए थे. उनके पिता का नाम सोंचू है. कामरेड प्रकाश के दो बड़े भाई, दो छोटी बहनें और एक छोटा भाई है. 6वीं तक पढ़ाई करने के बाद गरीबी की वजह से उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी. बाद में वह दूसरों के घर में नौकर बने थे.

कुछ वक्त तक मिलिशिया में काम करने के बाद 2011 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में वह पीएलजीए में भर्ती हुए. 2012 में उन्हें एक डीवीसीएम की गार्ड जिम्मेदारी सौंपी गई. गार्ड जिम्मेदारी से रिलीव होकर चंद वक्त कसनसूर एरिया में काम करने के बाद सितंबर 2015 में उनका तबादला 4वीं कंपनी में किया गया. कंपनी में वह शिक्षक बने थे. 2017 में बीसीटीसी में उन्होंने प्रशिक्षण लिया. कंपनी में वह एक अच्छे स्काउट के रूप में विकसित हुए. 2018 में उनका तबादल एक्शन टीम में किया गया.

पीएलजीए द्वारा दुश्मन पर की गई कई सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने हिस्सा लिया. और दुश्मन द्वारा पीएलजीए पर किए गए कई हमलों का उन्होंने दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध किया.

जब वह गार्ड रहे विकासपल्ली व तोका जेविली मुठभेड़ों से अपने कमांडर को बचाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. जांबुरखेडा व मुरचुल सफल एंबुशों में उन्हांने स्काउट जिम्मेदारी निभाई. ऊपर कमेटी की सुरक्षा के तहत जब वह ओडिशा राज्य गए वहां उन्हें 5 मुठभेड़ों का सामना करना पड़ा. उन मुठभेड़ों से नेतृत्व को बचाने के लिए उन्होंने जीतोड़ प्रयास किया. गांगीन, मुरचुल, कुंडम, काडसी, दोडंदा, बोदिन जैसे मुठभेड़ों में उन्होंने हिम्मत से दुश्मन का प्रतिरोध किया.

कामरेड प्रकाश अमर रहें!

कामरेड मुचाकी कोसा (रिमन)

शहादत के समय कामरेड रिमन कंपनी–4 के पीपीसीएम थे. 25 वर्ष पहले वह बीजापुर जिला, दक्षिण बस्तर डिविजन, पामेड एरिया, कोमट पंचायत, मल्लेम गांव के एक क्रांतिकारी परिवार में पैदा हुए थे. बुदरी और मुचाकी सुकडा दंपति की 8 संतान में वह 7वें थे. उनके अलावा उनके मां–बाप को तीन बेटियां और चार बेटे हैं. फिलहाल कामरेड रिमन के भाई और बहन अलग–अलग संगठन में कार्यरत हैं. उनके दो भाइयों ने गिरफ्तार होकर जेल जिंदगी भी बिताई. एक छोटा भाई भूमकाल मिलिशिया के डिप्टी कमांडर की जिम्मेदारी निभाते हुए बीमारी की वजह से शहीद हुए.

ऐसे माहौल में पलने–बढ़ने की वजह से कामरेड रिमन बचपन से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होते थे. दिसंबर 2012 में वह पूर्णकालीन क्रांतिकारी बन गए. दिसंबर 2015 में उन्होंने स्थानीय दस्ते में काम किया.

2015 में उनका तबादला पश्चिम सब जोन में किया गया जहां उनकी नियुक्ति 4वीं कंपनी में की गई. वहां एलएमजी मेन के रूप में उन्होंने अपनी भूमिका निभाई. कंपनी के तकनीकी विभाग और सीएनएम में भी उन्होंने अपना योगदान दिया. 2021 में उन्हें पीपीसी में लिया गया. वह एक जांबाज योद्धा थे. दक्षिण बस्तर, ओडिशा और पश्चिम सब जोन में कई सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. कई मुठभेड़ों का भी उन्होंने सामना किया. कुरेनार

एंबुश, दराची फायरिंग, नारकसा मुठभेड़, काडसी फायरिंग, गांगीन फायरिंग, कसनसूर कुंडुम फायरिंग, कोरपर्सी फायरिंग, कोकोटी फायरिंग, कसनसुर बुर्गी फायरिंग में उन्होंने अपना साहस का परिचय दिया. वह एक मिलनसार, अनुशासित व होनहार कामरेड थे.

कामरेड रिमन अमर रहें!

कामरेड तलंडी मासा (सावन)

22 वर्षीय कामरेड तलंडी मासा (सावन) पीपीसीएम थे. वह गढ़चिरोली जिला, अहेरी तहसील, काउटारम गांव के एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे. मां वंजे और बाप जोगाल की छह संतान में वह दूसरे थे. उनके तीन भाई और दो बहन हैं.

गरीबी की वजह से उन्हें पढ़ाई नसीब नहीं हुई. बचपन से ही सभी कामों में मां–बाप का हाथ बंटाते हुए वह बड़े हो गए. गांव में दो वर्ष मिलिशिया में काम करने के बाद जनवरी 2013 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. दो वर्ष स्थानीय दस्ते में काम करने के बाद 2015 में उनकी नियुक्ति एक एसजडसीएम के गार्ड के रूप में हुयी. 2016 में कामरेड सावन को वहां से रिलीव करके और एक एसजडसीएम की गार्ड जिम्मेदारी दी गई. इस तरह अलग–अलग समय में एसजडसी के दो सदस्यों की उन्होंने चार वर्ष तक सुरक्षा जिम्मेदारी निभाई. उन्होंने अपने आपको एक आदर्श गार्ड साबित कर दिया.

जनवरी 2019 में उनका तबादला 4वीं कंपनी में किया गया. शहादत के वक्त तक वह उस कंपनी में कार्यरत थे. गोविंदगांव, पेरिमिल, गुर्जा, कुंडूम, इरपागुट्टा, गोटनकार्का, काडसी, वेडमपैली, गडदापल्ली, गांगीन, नारकसा, दरेकसा, मुरचुल जैसे लगभग 20 मुठभेड़ों में उन्होंने दुश्मन का डटकर मुकाबला किया. दुश्मन पर पीएलजीए द्वारा किए गए रेकानार, हेटडकसा, जेड्डा, माहला जैसे लगभग 6 एंबुशों में उन्होंने भाग लिया.

कामरेड सावन अमर रहें!

कामरेड पोडियम हिडमे

शहादत के वक्त कामरेड पोडियम हिडमे कोरची एसी सदस्या थीं. वह लगभग 30 वर्ष पहले सुकमा जिला, दक्षिण बस्तर डिविजन के गोंगे गांव में पैदा हुई. कामरेड हिडमे के मां–बाप ने उनकी जबरन शादी की, तो उन्होंने उस शादी बंधन को तोड़ दिया. बाद में उन्होंने अपने गांव के केएएमएस यूनिट में काम किया. 2010 में उस यूनिट की अध्यक्षा बन गयी. क्रांति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता व सांगठनिक क्षमता को ध्यान में रख कर उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. 2013 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गई.

मार्च 2021 में उनका तबादला उत्तर गढ़चिरोली डिविजन में किया गया. वहां की परिस्थितियों को समझकर अपनी जिम्मेदारियों को सक्रिय रूप से निभाती थी. तबादला के कुछ ही वक्त में उनकी शहादत हुई.

कामरेड हिडमे अमर रहें!

कामरेड पोडियाम अडमाल (संजू)

शहादत के वक्त 25 वर्षीय कामरेड पोडियाम अडमाल (संजू) कसनसूर एलजीएस के पार्टी सदस्य रहे. वह बीजापुर जिला, पश्चिम बस्तर डिविजन, गोरनम गांव के एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे. सुकली व जोगाल पोडियाम के दूसरे बेटे थे. कामरेड अडमाल के एक बड़े भाई, एक छोटी बहन और एक छोटा भाई है. दरभा डिविजन, कटेकल्याण एरिया के अरुम उनका पूर्वजों का गांव था. पर्याप्त जमीन नहीं होने के कारण अडमाल के मां–बाप वहां से पलायन करके गोरनम आये थे. 2009 से 2013 तक उन्होंने बाल संगठन में काम किया. 2013 में वह मिलिशिया में भर्ती हुए. मिलिशिया में रह कर कई प्रतिरोध कार्रवाइयों में उन्होंने हिस्सा लिया.

मिलिशिया में 10–11 महीने तक अपना योगदान देकर नवंबर 2013 में वे पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गए. पहले उन्होंने 12वीं पीएल में एक वर्ष तक काम किया. पीएल द्वारा की गई कुछ सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. वहां पर उन्होंने पार्टी सदस्यता हासिल की. 2015 में उन्हें एसजडसीएम की गार्ड जिम्मेदारी दी गई. 2018 में उन्हें गार्ड टीम का कमांडर बना दिया गया. उस जिम्मेदारी

को अच्छी तरह निभाते हुए उन्होंने राजनीतिक व सैनिक रूप से अपने आपको विकसित किया.

2020 में उनका तबादला उत्तर गढ़चिरोली डिविजन में किया गया. वहां जाने के एक–दो महीने के भीतर ही एक मुठभेड़ में वह घायल हुए. कामरेड संजू अपनी क्रांतिकारी जिंदगी में दो बार घायल हुए. इसके बावजूद वे आंदोलन में दृढ़तापूर्वक आगे बढ़े थे. गढ़चिरोली के भीषण दमन में उन्होंने जनता व क्रांति के प्रति अटूट विश्वास के साथ काम किया. वह एक बहादूर लड़ाकू थे. मुरचुल, खोब्रामेंडा आदि मुठभेड़ों में उन्होंने दुश्मन का हिम्मत के साथ प्रतिरोध किया. कामरेड संजू के आदर्शों को ऊंचा उठाएंगे.

कामरेड संजू अमर रहें!

कामरेड मडकम सोमडी (संतीला)

पार्टी सदस्या कामरेड संतीला का जन्म बीजापुर जिला, पश्चिम बस्तर डिविजन, मनकेली पंचायत, गोरनम गांव के एक गरीब परिवार में लगभग 23 वर्ष पहले हुआ. वह कोसी व सन्नू मडकाम दंपति की आखिरी संतान थी. वह दो बहनों और दो भाइयों की लाड़ली बहन थीं. उनके पिता का निधन हो गया. तीन साल तक पंचायत सीएनएम में कामरेड संतीला ने काम किया. कला प्रदर्शन के जरिया जनता की राजनीतिक चेतना बढ़ाने की उन्होंने कोशिश की.

2014 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर वह पीएलजीए में भर्ती हुईं. कुछ ही वक्त के बाद उनका तबादला एमएमसी में किया गया था. उस प्रस्ताव को हंसीखुशी से मानते हुए, बोल्शेविक स्फूर्ति दिखाते हुए उन्होंने एमएमसी में कदम रखा. वहां उनकी नियुक्ति कंबाट पीएल–3 में की गई. प्रतिबद्धता के साथ काम करते हुए उन्होंने सभी कामरेडों का मन जीत लिया.

कामरेड संतीला का अनुशासन व मेहनती स्वभाव देख कर वहां की पार्टी कमेटी ने उन्हें टेलर टीम में रखने की योजना के साथ प्रशिक्षण के लिए डीके भेज दिया. पार्टी की जरूरतों को अच्छी तरह समझने वाली कामरेड संतीला ने तन मन लगा कर टेलर प्रशिक्षण लिया. अपने प्रशिक्षण पूरे होने के बाद एमएमसी जाकर पार्टी की जरूरतों को पूरा करने के लिए नए जोश के साथ जाते समय ही उनकी शहादत हुई.

कामरेड संतीला अमर रहें!

कामरेड हेमला साईनाथ (भूमा)

कामरेड भूमा (22) पार्टी सदस्य थे. वह पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया के हिरमागुंडा गांव में पैदा हुए थे. कामरेड भूमा दो बहनों और दो भाइयों के सबसे छोटे व लाड़ले भाई थे. जब कामरेड भूमा दूसरी कक्षा में पढ़ रहे थे उनके मां–बाप का देहांत हो गया, तो उनकी पढ़ाई आगे नहीं बढ़ पायी. सलवा जुडुम के आतंक को झेलते हुए उनका बचपन बीत गया. दो वर्ष मिलिशिया में काम करने के बाद 2015 में वे पूर्णकालीन क्रांतिकारी बन गए. 2016 में उनका तबादला गढ़चिरोली में किया गया जहां उनकी नियुक्ति एक एसजडसीएम के गार्ड के रूप में की गई. 2018 तक वह उस जिम्मेदारी में थे. बाद में उन्हें टीडी में स्थानांतरित किया गया. उत्तर गढ़चिरोली डिविजन की जरूरतों को ध्यान में रख कर 2021 में उनका तबादला वहां किया गया.

दिसंबर 2020 में उनकी शादी हुई. वह एक सीधासादा, अनुशासित व मेहनती कामरेड थे. पार्टी द्वारा सौंपी गई हर जिम्मेदारी को उन्होंने हंसीखुशी से निभाया. आखिरकार उन्होंने उत्पीड़ित जनता के लिए अपनी अनमोल जान की कुरबानी दी.

कामरेड भूमा अमर रहें!

कामरेड शांति पूनेम

कामरेड शांति पार्टी सदस्या थीं. वह बीजापुर जिला, पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया, पूंबाड गांव की रहवासी थीं. लगभग 22 वर्ष पहले उनका जन्म हुआ. वह पार्टी सदस्या थीं. कामरेड शांति के बाप का नाम बूदू है. बाल संगठन में काम करते हुए 2015 में वह पीएलजीए में भर्ती हुई. उसके कुछ वक्त के बाद उनका तबादला

एमएमसी में किया गया. कॉरपेट सेक्युरिटी के बीच में सांगठनिक काम हो या सुरक्षा का काम हो किसी भी जिम्मदारी लेने के लिए वह हमेशा तत्पर रहती थीं. उन्होंने वहां की भाषा सीख कर जनता के साथ जुड़ने की कोशिश की.

कामरेड शांति अमर रहें!

कामरेड कोवासी हिडमा (लच्छू)

शहादत के वक्त 22 वर्षीय कोवासी हिडमा (लच्छू) कंपनी–4 के पार्टी सदस्य थे. सुकमा जिला, दक्षिण बस्तर डिविजन, एमलागुंडा पंचायत, तोंडामरका गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में कामरेड लच्छू की पैदाइश हुई. वह मां जोगी व बाप बंडी के प्यारे बेटे थे. तीन बहनों और तीन भाइयों के सबसे छोटे भाई थे.

मिलिशिया में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई. मिलिशिया में उनके अनुशासन व प्रतिबद्धता ध्यान में रख कर 2013 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. 2016 में पेशेवर कार्यकर्ता बन कर वह पार्टी में भर्ती हुए. उसी वर्ष उनका तबादला पश्चिम सब जोन में किया गया. वहां उनकी नियुक्ति 4वीं कंपनी में की गई. कंपनी में उन्हें कंपनी कमांडर की गार्ड जिम्मेदारी सौंपी गई.

2018 में उनका कमांडर परिजनों को मिलने के लिए जाकर राजनीतिक रूप से कमजोर होकर वहां पर रुक गया, तो कामरेड लच्छू अडिग रह कर कमांडर के हथियार लेकर वापस आए. उसके बाद से आखिरी तक उन्होंने कंपनी में ही कार्यरत थे.

वह एक साहासिक योद्धा थे. कई सैनिक कार्यवाहियों में उन्होंने अपनी हिम्मत का परिचय दिया. दराची, नारकसा, निहायकल, बोदली, कुंडूम, काडसी, कोकोटी, बुर्गी, आमपायली, गोटेन कार्का, गर्दावडा, कोरपरसी, टेकामेटा, मुरचुल आदि मुठभेड़ों में उन्होंने दुश्मन का डटकर मुकाबला किया.

कंपनी में उनका योगदान ध्यान में रख कर उन्हें पीपीसी में लेने के लिए जब सीवाईपीसी सोच रही थी, तब ही उनकी शहादत हुई.

कामरेड लच्छू अमर रहें!

कामरेड कलमू हडमा (सूरज)

कामरेड कलमू हडमा (सूरज) पार्टी सदस्य थे. उन्होंने दक्षिण बस्तर डिविजन, किस्टारम एरिया, वेरुम गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में लगभग 20 वर्ष पहले जन्म लिया. बचपन में ही उन्होंने क्रांतिकारी रास्ता अपनाया. पहले बाल संगठन में अपना योगदान दिया.

2016 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. किष्टारम एरिया में चंद दिन काम करने के बाद उनका तबादला कोंटा एरिया में किया गया. वहां के पोलेम एलओएस में 4 वर्ष उन्होंने काम किया. बुरकापाल, मिनपा, गाजुलागट्टा, कसलपाड, कोताचेरुवु, बेज्जी आदि कई हमलों में कामरेड हडमा शामिल हुए. कामरेड हडमा की क्षमता देख कर उन्हें बीजीएल की जिम्मेदारी दी गई जिसे उन्होंने हंसीखुशी के साथ निभाया. वह बीजीएल की अच्छी तरह रख–रखाव किया करते थे. उन्होंने छह महीने तक टीडी में भी अपना योगदान दिया. स्पाइक होल्स बनाने में भी उन्होंने अनुभव हासिल किया.

2021 में उनका एमएमसी में तबादला किया गया. सर्वहारा वर्ग की अंतर्राष्ट्रीयता को ऊंचा उठाते हुए उस तबादले प्रस्ताव को उन्होंने हंसीखुशी से मान लिया. नए इलाके में काम करने के लिए जब वे जोश–खरोश के साथ जा रहे थे, दुश्मन के हमले में उनकी शहादत हुई.

कामरेड सूरज अमर रहें!

कामरेड उयका सोमडा (मोटू)

कामरेड मोटू पार्टी सदस्य थे. वह दक्षिण बस्तर डिविजन, जगरगुंडा एरिया, मंडिल पंचायत, गोंदोड गांव के एक गरीब परिवार में 21 वर्ष पहले जन्मे थे. उनके एक बड़े भाई और एक छोटी बहन है.

बचपन से वह क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होते थे. जीआरडी में उनका योगदान रहा. दिसंबर 2016 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. स्थानीय दस्ते में चंद दिन काम करने के बाद उनका तबादला एमएमसी में किया गया. उच्च चेतना का परिचय देते हुए उन्होंने एमएमसी में कदम

रखा. उनके अनुशासन, राजनीतिक चेतना व होशियारी ध्यान में रख कर कामरेड दीपक की सुरक्षा टीम में उनकी नियुक्ति की गई. उस टीम में उन्होंने कम्युनिकेशन जिम्मेदारी निभाई. उन्होंने अपने कमांडर की अच्छी तरह मदद दी और अपनी आंख की पुतली के समान उनकी रक्षा की. जिलिमिल जंगल में हुई मुठभेड़ में कव्हर फायरिंग करते हुए अपने कमांडर को बचाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. ढटाघही, वोम्रदेवा आदि मुठभेड़ों में भी उन्होंने हिम्मत के साथ दुश्मन का प्रतिरोध किया. राजनीतिक व सैद्धांतिक विषयों पर पकड़ हासिल करने के लिए वह हमेशा प्रयास करते थे. एक सैनिक योद्धा के रूप में विकसित होने के क्रम में उनकी शहादत हुई.

कामरेड मोटू अमर रहें!

कामरेड माडवी मासे (रंजू)

पीएलजीए सदस्या कामरेड माडवी मासे (रंजू) सुकमा जिला, दक्षिण बस्तर डिविजन, किस्टारम एरिया, बुडूम पंचायत, गचनपल्ली गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में 19 वर्ष पहले पैदा हुई. वह नंदे व माडवी अडमा की प्रथम संतान थीं. वह तीन छोटी बहनों को अपने पीछे छोड़ गई.

बाल संगठन में भर्ती होकर उन्होंने क्रांति के लिए अपना योगदान शुरू किया. वह नाच–गाने की शौकीन थीं. 2020 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर वह पीएलजीए में भर्ती हुई. एक वर्ष तक उन्होंने अपने ही एरिया में काम किया. वह अनुशासन के साथ सभी कामकाज में शामिल होती थीं. 2021

में उनका तबादला एमएमसी में किया गया. उस प्रस्ताव का तहेदिल से अनुमोदन करके नए एरिया में काम करने के इरादे से जब वह एमएमसी जा रही थीं, बीच रास्ते में ही उनकी शहादत हुई. छोटी उम्र में ही उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए कामरेड रंजू ने महान कुरबान किया.

कामरेड रंजू अमर रहें!

कामरेड माडवी शीनू

27 वर्षीय कामरेड माडवी शीनू सुकमा जिला, पालाचलमा पंचायत, तुमिड गांव में जन्म लिया. वह पीएलजीए सदस्य थे. एमएमसी में तबादला होकर जाते समय ही उनकी शहादत हुई.

कामरेड शीनू अमर रहें!

(पेज 15 का शेष भाग...)

थे. 16 वर्षीय अपनी क्रांतिकारी जिंदगी में उन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा. आंदोलन की कठिनाइयों को सामना करने में हार कर कई लोगों ने आत्मसमर्पण कर दिया. कुछ लोग गद्दार बन गए. ऐसे लोगों से नफरत करते हुए कामरेड दिलीप दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ते रहे. वह हर हमेशा जनता के फायदों के बारे में सोचते थे. पार्टी लाइन पर दृढ़तापूर्वक अमल करते थे. जनता व कैडर के साथ जीवंत संबंध बनाए रखते थे.

कामरेड दिलीप की शादी पहले कामरेड बबिता के साथ हुई. 2018 में कामरेड बबिता शहीद हुई. 2020 में उन्होंने फिर कामरेड रनिता के साथ शादी कर ली. हालांकि 2021 में मुरचुल में दुश्मन द्वारा किए गए हमले में कामरेड रनिता की भी शहादत हुई. निजी जिंदगी में सामने आए दुख को परवा किए बिना वे आंदोलन में डटे रहे.

दुश्मन द्वारा डेरे के ऊपर किए गए कई हमलों के दौरान उन्होंने दुश्मन के साथ साहस के साथ लोहा लिया. दुश्मन द्वारा किए गए तीन–चार घेरावों को भी तोड़ने का अनुभव उन्होंने हासिल किया. पारेवा घटना में घायल होकर भी उन्होंने आखिरी सांस तक लड़ाई लड़ी. जब वह अपने हाथ में एलएमजी लेकर लड़ रहे थे, उन्हें गोली लगी और वह शहीद हो गए.

हालांकि कामरेड दिलीप अब नहीं रहे. उनके आशय व उनके आदर्श, लक्ष्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, उनका दृढ़संकल्प जनता व क्रांतिकारियों के लिए हमेशा प्रेरणा देते रहते हैं.

कामरेड दिलीप अमर रहें!

कामरेड सन्नू नरूटी (साकेत) को लाल सलाम!

पूर्व बस्तर डिविजन में कार्यरत 6वीं कंपनी के बहादूर कमांडर कामरेड साकेत (सन्नू नरूटी) 15 नवंबर, 2021 को दुश्मन की गोलीबारी में शहीद हुए. आमदाई खदान के चालू करने की खबर सुन कर उसकी जानकारी लेने के लिए जब वह एक टीम को साथ में लेकर गए थे, दुश्मन बलों ने घेर कर उन पर गोलीबारी शुरू की जिसमें घटनास्थल पर ही उनकी मौत हुई. उनके साथी कामरेडों को उनके शव व हथियार ले जाने का मौका नहीं मिला, तो दुश्मन बलों को उनकी लाश व बंदूक मिली. कामरेड साकेत की मौत से कंपनी–6 और पूर्व बस्तर आंदोलन को एक बड़ा झटका लगा.

लगभग 35 वर्ष पहले कामरेड सन्नू नुरूटी का जन्म उत्तर बस्तर डिविजन, कांकेर जिला, किसकोडो एरिया, मातला पंचायत, बुढ़ाहकुरसे गांव के एक आदिवासी परिवार में हुआ था. बचपन में ही उन्होंने अपने पिता को खो दिया. उनके दो भाइयों की भी अस्वस्थता के चलते मौत हुई. कामरेड साकेत ने 5वीं तक पढ़ाई की. छात्र संगठन में काम करते हुए वह क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ गए.

दिसंबर 2001 में कामरेड साकेत पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. किसकोडो दस्ते में काम करते हुए उन्होंने छात्र ऑर्गनाइजर जिम्मेदारी निभाई. 2002 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. 2007 में एसी सदस्यता दी गई. 2008 तक उस जिम्मेदारी निभाते हुए उन्होंने कई छात्रों को पार्टी में भर्ती की. छात्रों के अलावा शिक्षक व बेरोजगारी युवाओं को भी मिलते हुए उनकी समस्याओं के बारे में चर्चा करते हुए उन्हें संगठित करने की कोशिश की. छात्र ऑर्गनाइजर रहते हुए कई सैनिक कार्रवाइयों में भी उन्होंने भाग लिया.

2007 में कामरेड साकेत ने अपनी पसंदीदा कामरेड के साथ शादी कर ली. दोनों कामरेड अलग–अलग जिम्मेदारियां निभाते रहे. राजनीतिक व सैनिक रूप से कामरेड साकेत अपनी जीवनसाथी की मदद देते थे.

आंदोलन की जरूरतों और उनकी योग्यताओं को नजर में रख कर 2008 में कामरेड साकेत की नियुक्ति रीजनल रेक्की और एक्शन टीम में की गई. वहां काम करते हुए कई सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया. कई कार्रवाइयों में उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया.

जुलाई 2010 में 6वीं कंपनी में उनका तबादला किया गया. कंपनी की पहली पीएल के ए सेक्शन डिप्टी कमांडर, पीएल के शिक्षक व संतरी इंचार्ज की जिम्मेदारियां निभाते हुए कामरेड साकेत विकसित हुए. 2014 में वे सेक्शन कमांडर बन गए. 2016 में आयोजित कंपनी प्लीनम में उन्हें सीवाईपीसी में चुना गया. बाद में उन्हें पहली पीएल सचिव व कंपनी डिप्टी कमांडर की जिम्मेदारियां सौंपी गईं.

कामरेड साकेत दुश्मन पर प्रहार करने के लिए हर वक्त मुस्तैद रहते थे. एरिया में जब भी दुश्मन घुसते, कामरेड साकेत जरूर उसका पीछा करते थे और मौका देख कर धक्का देते थे. तभी उन्हें चैन मिलती थी. उनकी 20 वर्षीय क्रांतिकारी जिंदगी में 40 से अधिक सफल सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. इनमें कुछ कार्रवाइयों का उन्होंने नेतृत्व प्रदान किया. कुछ कार्रवाइयों में प्रधान भूमिका निभाई. इस तरह दुश्मन के कई बलों को खतम करने, घायल करने और हथियार सहित कई तरह की युद्ध सामग्री को जब्त करने में उन्होंने अविस्मरणीय योगदान दिया. एक साहसिक कमांडर के रूप में उन्होंने कंपनी व डिविजन के कैडर, नेतृत्व और जनता का विश्वास जीत लिया. दूसरी ओर उन्होंने दुश्मन बलों, खासकर डीआरजी में कार्यरत गद्दारों के दिल में दहशत पैदा किया. उनकी आंख की किरकिरी बन गए.

6वीं कंपनी द्वारा सामना की गई कई मुसीबतों में अडिग रह कर कंपनी को खड़ा करने में व उसकी सामरिक क्षमता को बनाए रखने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. 2014 में जब तत्कालीन कंपनी कमांडर भाग गया, तब कंपनी को आगे बढ़ाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. 2019 में तत्कालीन कमांडर नैतिक रूप से पतन हुआ था, तब कामरेड साकेत तात्कालिक रूप से कंपनी कमांडर की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठायी. सितंबर 2021 में जब कंपनी प्लीनम की तैयारी हो रही थी तत्कालीन कमांडर नैतिक रूप से पतन होकर अपनी जिम्मेदारी छोड़ दी. उस हालत में अप्रत्याशित रूप से कामरेड साकेत को प्लीनम के संचालन की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठानी पड़ी, जिसे उन्होंने सक्षम रूप से निभाया. कंपनी के पांच वर्षीय कामकाज की समीक्षा करके पीओआर लिखने में, उसे प्लीनम हाल में पेश करने में, उस पर हुई चर्चा का जवाब देने में, अपनी आत्मालोचना पेश करने में, कुल मिला कर प्लीनम के

भारत के क्रांतिकारी सांस्कृतिक आंदोलन के नेता कामरेड राज किशोर को श्रद्धांजलि!

कामरेड राजकिशोर बिहार राज्य के क्रांतिकारी साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रमुख नेताओं में से एक थे. उन्होंने अपनी 89 की उम्र में 23 दिसंबर, 2021 को अंतिम सांस ली. जब 1983 में दिल्ली में एआईएलआरसी (अखिल भारतीय क्रांतिकारी सांस्कृतिक संघ) के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन हुआ, तब कामरेड राज किशोर उसके कार्यकारिणी सदस्य चुन गए. तब से लेकर विगत चार दशकों में वे देशभर में और कई राज्यों में आयोजित सभा, सम्मेलन व कार्यक्रमों का हिस्सा बन गए. 13–14 जनवरी, 2002 को हैदराबाद में आयोजित एआईएलआरसी के 8वें अधिवेशन में वे उसका प्रधान सचिव बन गए.

एआईएलआरसी में शामिल होने के पहले उन्होंने बिहार के क्रांतिकारी नव जनवादी सांस्कृतिक संघ की जिम्मेदारी निभाई. बिहारी जनता के जिंदगी के साथ वे जुड़ गए थे. वे लंबे–चौड़े होते थे और हंसमुख थे. वे एक शनदान वक्ता थे. बुलंद आवाज से विलक्षण ढंग से देने वाले उनके नारें जनता में जोश बढ़ाते थे. वे एक समर्थ कार्यदक्ष थे. उन्होंने आखिरी सांस तक मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद का विश्वास किया था. बिहार राज्य में पीड़क जातियों के दबंग जमींदारी ताकतों के खिलाफ उत्पीड़ित जनता द्वारा किए गए आंदोलनों से वे जुड़ गए थे. इस क्रम में उन्होंने जाति व वर्ग संघर्ष को साथ–साथ संचालित करने की आवश्यकता को समझ लिया था. उन्होंने एक आमसभा में घोषणा करके अपनी जाति के चिह्न 'सिंह' को अपने नाम से हटा दिया और उन्हें राज किशोर नाम से पुकारने का सभी से आग्रह किया.

एक ओर एआईएलआरसी में कार्यरत होकर ही दूसरी ओर एआईपीआरएफ (अखिल भारतीय जन प्रतिरोध मंच) और आरडीएफ (क्रांतिकारी जनवादी मोर्चा) की ओर से देशभर में दौरा करके उन्होंने जनता को प्रेरित किया. वे जनांदोलनों में व्यस्त होते थे. सरकारी हिंसा से वे कभी नहीं डरे थे. पुलिस द्वारा दी गई यातनाओं के चलते उनके एक पैर टूट गया था. इसके बावजूद वे अपने क्रियाकलापों से पीछे नहीं हटे थे. वे एक दो वर्षों से अस्वस्थ्य रहे थे. पक्षाघात का शिकार होकर हिलने–डुलने व बात करने में वे अशक्त हो गए. इसके बावजूद उन्होंने क्रांतिकारी स्फूर्ति नहीं छोड़ी. उन्हें 'प्रभात' विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है.

कामरेड राज किशोर अमर रहें!

संचालन में कामरेड साकेत महत्वपूर्ण व सराहनीय भूमिका निभायी. उससे उन पर कैडर व नेतृत्व का विश्वास और बढ़ गया. उस प्लीनम द्वारा कामरेड साकेत एकमत से कमांडर चुना गया. उतना ही नहीं प्लीनम मंच के जरिए प्रतिनिधियों द्वारा एसजडसी से यह आग्रह किया गया कि कामरेड साकेत ही अपने कंपनी कमांडर बने रहें और एसजडसी की ओर से दूसरों को कमांडर के रूप में नहीं भेजा जाए.

पहले छात्र संगठन में एक सक्षम ऑर्गनाइजर के रूप से अपने आपको साबित करने वाले कामरेड साकेत उसके बाद सैनिक रूप से अपने आपको एक मिसाल बना दी. सैनिक क्षेत्र में कई विषयों पर उन्होंने पकड़ हासिल की. वे एक अच्छे स्नाइपर थे. अच्छे कम्युनिकेशन मेन थे. रेक्की करने में उन्होंने कुशलता हासिल की. बारीकी विषयों का भी वह ध्यान से अध्ययन करते थे. कंपनी का उन्होंने सक्षम नेतृत्व प्रदान किया. राजनीतिक व सैनिक रूप से कंपनी कैडर को शिक्षण–प्रशिक्षण दिया. कैडर का सही आकलन करते हुए उनकी कमी कमजोरियों को चिह्नित करते हुए उन्हें सुधारने के लिए वह कोशिश करते थे. बैठकों में वह अच्छे विश्लेषण के साथ समग्र व संतुलित रूप से अपनी बात रखते थे. वह अपनी गलतियों की गहराई से आत्मालोचना करते थे.

सैनिक क्षेत्र में काम करते हुए मौका मिलने पर जनता के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखते हुए जनता को नेतृत्व प्रदान करने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी. पूर्व बस्तर में संचालित जनांदोलनों में उनका योगदान भूला नहीं जा सकता है.

इस तरह क्रांतिकारी आंदोलन में अनमोल योगदान देकर उन्होंने कैडर व जनता पर अमिट छाप छोड़ी. क्रांतिकारी आंदोलन ने एक नव जवान, ऊर्जावान, सक्षम व जांबाज योद्धा को खो दिया. हालांकि अब भौतिक रूप से कामरेड साकेत नहीं रहे. लेकिन कामरेड साकेत के नेतृत्व में काम करने वाले उनसे प्रेरणा लेने वाले 6वीं कंपनी व पूर्व बस्तर डिविजन के नव जवान योद्धा, मिलिशिया व क्रांतिकारी लोग कामरेड साकेत के रास्ते पर आगे बढ़ेंगे. उनकी शहादत के रूप में पहुंच गए नुकसान की जरूर भरपाई करेंगे.

कामरेड साकेत अमर रहें!

'प्रभात' के लिए अविस्मरणीय योगदान देने वाली
कामरेड आलूरी ललिता को लाल सलाम!

21 नवंबर, 2021 को कामरेड आलूरी ललिता का दिल का दौरा पड़ने की वजह से देहांत हो गया. दोनों तेलुगू राज्यों के क्रांतिकारी शिविर व प्रगतिशील साहित्व दुनिया के लिए आलूरी भुजंगराव की जीवनसंगिनी के रूप में वे चिरपरिचित थीं. हालांकि दंडकारण्य आंदोलन विशेष कर 'प्रभात' से उनका खास रिश्ता था. 'प्रभात' की शुरुआत से लेकर उसके लगभग एक दशक के सफर में अपने जीवनसाथी के कंधे से कंधा मिला कर कामरेड ललिता ने अनमोल योगदान दिया. उतना ही नहीं उनकी छोटी बेटी दंडकारण्य आंदोलन में कार्यरत हैं. 'प्रभात' पत्रिका व दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी उनके योगदान का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं. उनके परिजनों व मित्रों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती हैं.

क्रांतिकारी आंदोलन ने कितने ही साधारण लोगों को असाधारण व अद्भुत बना दिया. कामरेड ललिता की जिंदगी में भी क्रांतिकारी आंदोलन ने ऐसा ही चमत्कार किया, जिससे एक साधारण गृहिणी विलक्षण क्रांतिकारी बन गया. उनका पूरा नाम ललिता परमेश्वरी था. मई 1945 में उन्होंने आंध्रप्रदेश राज्य, गुंटूर जिला, बापट्ला तहसील के सिरिपुर गांव में जन्म लिया. सिरिपुर उनके नाना–नानी का गांव था जबकि कर्लापालेम उनके दादा–दादी का गांव था. वे रमादेवी और प्रसादराव दंपति की तीसरी संतान थीं. उन्होंने छटवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी. किशोरी अवस्था से ही वे साहित्य की शौकीन थीं.

नवंबर 1960 में हिंदी शिक्षक कामरेड आलूरी भुजंगराव के साथ उनकी शादी हुई. तब तक ही कामरेड भुजंगराव संयुक्त कम्युनिस्ट पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता और प्रगतिशील साहित्यकार थे. दोनों दंपति की पांच संतान –चार बेटियां और एक बेटा–है.

1980 दशक की शुरूआत में तत्कालीन भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के साथ उस परिवार का लगाव हो गया. धीरे–धीरे उनका घर क्रांतिकारी केंद्र बन गया. कामरेड ललिता अपने घर में आने जाने वाले क्रांतिकारियों की 'अम्मा' बन गयीं. कामरेड ललिता का भी क्रांतिकारी क्रियाकलापों में शामिल होना शुरू हो गया. उनके नेतृत्वकारी लक्षण ने महिला संगठन में उन्हें सक्रिय कार्यकर्ता बना दिया. मजदूर बस्ती में जाकर वहां की महिलाओं को वे पढ़ाती थी. अस्वस्थ्य महिलाओं को डॉक्टर के पास ले जाती थीं. महिला संगठन की कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर आस–पास के गांवों में जाकर प्रचार–आंदोलन कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेती थी. उनके साथ मिल कर नाटकों में शामिल होती थीं. एलूर जूट मिल मजदूरों की हड़ताल में भी उन्होंने भाग लिया. उस वक्त आंध्रप्रदेश में जोरों पर जारी पीपुल्सवार आंदोलन के प्रभाव से उनकी चार बेटियां उस आंदोलन में शामिल हुईं और उनमें से दो बेटियां पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गईं. पहले से ही जनवादी माहौल में बच्चों की परवरिश करने वाली कामरेड ललिता ने अपनी बेटियों के निर्णय का तहेदिल से समर्थन किया. उतना ही नहीं बाद में कामरेड्स भुजंगराव और ललिता ने एक बड़ा व साहसिक फैसला लिया. बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी करने के बाद अब उन दोनों ने अपनी पूरी जिंदगी क्रांति के लिए समर्पित करने का फैसला लिया. यह फैसला लेने में कामरेड ललिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी. वे दोनों अपने बेटे को छोड़ कर 1985 के बाद भूमिगत हो गए. तब तक कामरेड भुजंगराव की उम्र 55 पार चुकी है और 'अम्मा' की 40. उस उम्र में ऐसा फैसला लेना कोई मामूली बात नहीं थी. लेकिन क्रांति के प्रति उनकी समर्पित भावना ने उन्हें ऐसी हिम्मत दी.

बाद में उनकी जिंदगी दंडकारण्य आंदोलन से जुड़ गयी. तब तक दंडकारण्य आंदोलन विकसित हुआ था. दंडकारण्य जोन के मुखपत्र के रूप में 'प्रभात' का प्रकाशन शुरू करने का पार्टी ने निर्णय लिया था. हिंदी भाषा में अच्छी कुशलता हासिल कामरेड भुजंगराव 'प्रभात' के संस्थापक संपादक मंडल के सदस्य बन गये थे. उन्होंने

'प्रभात' के संपादक व अनुवादक के रूप में लगभग 7 वर्ष तक अपनी अनमोल सेवाएं दीं. सिर्फ प्रभात के लिए ही नहीं उन्होंने कई रचनाएं भी की थी और कई तेलुगू पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद किया. दंडकारण्य से प्रकाशित कई पुस्तकों का भी उन्होंने हिंदी में अनुवाद किया. इस तरह प्रभात व दंडकारण्य आंदोलन के लिए कामरेड भुजंगराव ने जो योगदान दिया उसमें कामरेड ललिता का महत्वपूर्ण हिस्सा था. कामरेड भुजंगराव गंभीर अस्वस्थता के पीड़ित थे. कामरेड ललिता के सहयोग के बिना ये सब वे शायद ही कर पाते थे. कुछ वक्त बीतने के बाद कामरेड भुजंगराव की आंखों की रोशनी भी चली गई. ऐसी हालत में कामरेड भुजंगराव बताने पर कामरेड ललिता लिखती थीं. प्रभात के लिए डेन का संचालन करने, उसके छापने और पत्रिका के बड़े–बड़े गट्ठरों को पुलिस की आंखों में धूल झोंक कर शहरों से जंगली क्षेत्र को पहुंचाने में अम्मा की भूमिका सराहनीय थी. अपनी जान को जोखिम में डाल कर उन्होंने ये सब किए. उस तरह कामरेड ललिता की सेवाएं 'प्रभात' के अक्षरों में निहित हैं.

'प्रभात' के अलावा उनका मकान पार्टी के महत्वपूर्ण नेतृत्व का सुरक्षा केंद्र बन गया. अपने मकान में आने जाने वाले कामरेडों का अम्मा ख्याल रखती और प्यार देती थीं. कामरेड भुजंगराव ने राज्य कमेटी स्तर की हैसियत से काम किया था. कामरेड ललिता को भी जिला स्तर की सदस्या के रूप में पार्टी ने चिह्नित किया. लेकिन उन्होंने कहा था 'मुझे कोई स्तर नहीं चाहिए, पार्टी सदस्या की पहचान ही मेरे लिए सर्वोन्नत, सगर्व व संतोष की बात है.

90वें दशक की शुरूआत में दुश्मन का दमन तेज होकर 'प्रभात' का बाहर से संचालन असंभव हो गया. इससे पार्टी ने प्रभात का प्रकाशन अंदरूनी इलाके से करने का निर्णय लिया. उस वक्त कामरेड्स भुजंगराव और ललिता की गंभीर अस्वस्थता को ध्यान में रख कर पार्टी ने उन्हें भूमिगत जीवन से बाहर, खुले जिंदगी में जाने का सुझाव दिया. इस तरह अनिवार्य स्थिति में 7–8 वर्षों के बाद भूमिगत जीवन को छोड़ कर वे वापस खुले जीवन में चले गए थे.

उसके बाद में भी वे दोनों कामरेड क्रांतिकारी शिविर का हिस्सा बन कर रहे थे. कामरेड भुजंगराव पहले से ही विरसम (क्रांतिकारी लेखक संघ) के सदस्य थे. 2000 में 'अम्मा' ने भी विरसम सदस्यता हासिल की. भुजंगराव के लेखन में कितने ही सहयोग देने वाली कामरेड ललिता भी कुछ रचनाएं की. 'पानी आले', 'चावु खर्चु (मृत्यु का खर्च)' आदि कहानियां और कुछ कविताएं लिखी थीं. क्रांतिकारी जन संगठनों के सभा–समारोहों में लगातार शामिल होते हुए वे युवा कार्यकर्ताओं को प्यार व प्रेरणा देती थीं.

दुश्मन के तीव्र दमन में उनकी बेटी गंभीर रूप से घायल हुई थीं. उनके दो दामादों की पुलिस ने मुठभेड़ व झूठी मुठभेड़ में हत्या की थी. उनके चिरपरिचित कितने ही प्यारे कामरेडों की शहादत हुई. 2013 में उनके जीवन साथी कामरेड भुजंगराव का निधन हो गया. ऐसी कई दुखद घड़ियों का उन्होंने हिम्मत से सामना किया. आंदोलन के कई उतार–चढ़ावों में उन्होंने भाग लिया. क्रांति के प्रति अटूट विश्वास के साथ उन्होंने अपनी जिंदगी जी. उस विश्वास के साथ ही 2017 में उन्होंने अपनी बेटी व पार्टी को भेजे संदेश में कहा कि हमारी पार्टी के नेतृत्व में भारत की क्रांति जरूर सफल होगी. इस आशा ही नहीं भरपूर विश्वास के साथ उन्होंने अंतिम सांस ली.

जिस सपने के साकार के लिए कामरेड ललिता ने अपने आखिरी पल तक इंतजार किया, उस सपने के साकार के लिए और दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ने की शपथ लेंगे. इसके अलावा अम्मा को देने वाली सौगात हमारे पास क्या है?

कामरेड ललिता अमर रहें!

महाराष्ट्र राज्य परिवहन निगम के कर्मचारियों का आंदोलन

हमारे देश के बड़े परिवहन निगमों में से महाराष्ट्र राज्य का परिवहन निगम एक है. महाराष्ट्र में लगभग 250 बस डिपो मौजूद हैं. राज्य में हर दिन लगभग 16 हजार बसें चलती हैं. महाराष्ट्र परिवहन निगम में लगभग 96 हजार कर्मचारी कार्यरत हैं. बसों में कम से कम 70 लाख लोग सफर करते हैं और सरकार को हर रोज 25 करोड़ का राजस्व मिलता है. कोरोना के समय में लगाए गए लॉकडाउन की वजह से कर्मचारियों को कई तकलीफों का सामना करना पड़ा. महाराष्ट्र परिवहन निगम ने कोरोना की वजह से रु. 9 हजार करोड़ के नुकसान होने की बात करते हुए कर्मचारियों को बराबर वेतन भी नहीं दिए. ऐसी हालत में परिवार का पालन–पोषण करने में असमर्थ होकर 30 कर्मचारियों ने खुदकुशी की थी. इस प्ररिप्रेक्ष्य में कर्मचारियों ने अपना दैनिक भत्ता 28 प्रतिशत बढ़ाने की मांग की, तो सरकार ने 17 प्रतिशत बढ़ाया. सरकार की इस रवैये के खिलाफ कर्मचारियों ने आंदोलन का रास्ता अपनाया. वेतन, दैनिक भत्ता व किराया भत्ता में बढ़ोत्तरी और परिवहन निगम को सार्वजनिक क्षेत्र में मिलाना आदि मांगों को लेकर 27 अक्टूबर, 2021 से भूख हड़ताल शुरू की. कर्मचारियों के इस जायज आंदोलन के प्रति तानाशाही रवैया अपनाते हुए और सरकार का पक्ष लेते हुए मुंबई हाई कोर्ट ने हड़ताल को गैर कानूनी ठहराया. सरकार व अदालतों के इस क्रूर स्वभाव के खिलाफ कर्मचारियों को अपने आंदोलन को और उग्र बनाना चाहिए.

एनपीए के प्रवक्ता कामरेड का ओरिस को लाल सलाम!

फिलीपींस के क्रांतिकारी आंदोलन पर वहां की फासीवादी डुटर्टे सरकार द्वारा लगातार हमलें हो रहे हैं. 2017 से सरकार हवाई हमलें कर रही है. फिलीपींस की कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी सेना 'न्यू पीपुल्स आर्मी' (एनपीए) के सैकड़ों कैडरों, किसानों और अन्य तबकों की जनता को गिरफ्तार करके जेलों में ठूंस रही है. कई क्रांतिकारियों की हत्याएं कर रही है. इसी सिलसिले में अक्टूबर 2021 में एएफपी (आर्म्ड फोर्सेस ऑफ फिलीपींस) द्वारा एनपीए के प्रवक्ता कामरेड का ओरिस की निर्मम हत्या की गई. कामरेड का ओरिस की पत्नी का मारिया मलाया के अनुसार जब कामरेड का ओरिस अपनी चिकित्सा लेने के लिए उनकी चिकित्सा सहयोगी ईघफेल डेला पेना का पिका के साथ मोटरसाइकिल की सवारी कर रहे थे, तब इंपासुग–ओंग शहर और राष्ट्रीय राजमार्ग के बीच सड़क पर उनके ऊपर एएफपी ने घात लगाकर हमला किया था. उसके बाद उनकी हत्या की गई. जब एएफपी ने उन पर हमला किया, उस वक्त कामरेड का ओरिस और कामरेड का पिका दोनों निहत्थे थे.

एएफपी ने निहत्थे क्रांतिकारियों की हत्या करने के अपने अपराध को छिपाने के लिए एक भीषण मुठभेड़ का दृश्य बनाया. चार घंटे के बाद बारंगे दुमलागुइंग इंपासुग–ओंग व बुकिडन प्रांत के आसपास के क्षेत्र मं हवाई हमलें किए. लगभग दो घंटों में एएफपी ने कम से कम छह बड़े बम गिराए, दर्जनों रॉकेट दागे और पहाड़ पर पथराव किया जिससे लोगों में भय और दहशत फैल गई. बाद में उस झूठी मुठभेड़ को वास्तविक मुठभेड़ कहते हुए उसमें कामरेड्स का ओरिस और का पिका की मौतें होने की झूठी कहानी एएफपी द्वारा बताई गई.

कामरेड्स का ओरिस और का पिका के परिजनों ने यह मांग की कि इन हत्याओं की वास्तविक परिस्थितियों को निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र रोगविज्ञानी के साथ दोनों के शव परीक्षण कराएं.

भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी ने एएफपी द्वारा की गई इन क्रूर हत्याओं की कड़ी निंदा की और उनके परिजनों व साथियों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की. उसने मांग की कि उनके शवों को उनके परिजनों को सौंप दिया जाए ताकि दोनों कामरेडों के बंधु–मित्रों को उनके अंतिम सम्मान देने का मौका मिले. साथ ही भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी ने यह आशा व्यक्त की कि एनपीए को पहुंची इस भारी क्षति से वह जल्द से जल्द उबर सके.

कामरेड का ओरिस अमर रहें!

बैंकों के निजीकरण के विरोध में कर्मचारियों का देशव्यापी आंदोलन

शासकीय बैंकों के निजीकरण किए जाने के प्रस्ताव के खिलाफ युनाइटेड फोरम आफ बैंक यूनियन्स के बैनर तले 16 व 17 दिसंबर को देशभर में बैंक कर्मचारियों द्वारा हड़ताल की गई. इस दौरान देशभर के सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, भारतीय स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि शासकीय बैंक बंद रहे थे. इसके पहले ही बैंक कर्मचारी चरणबद्ध रूप से प्रदर्शन कर रहे थे. काली पट्टी लगाकर विरोध प्रदर्शन भी किया था.

इस दौरान छत्तीसगढ़ में आंदोलनरत बैंक कर्मचारियों ने बताया कि सरकार द्वारा शासकीय बैंकों के निजीकरण की ओर कदम बढ़ाया जा रहा है. ऐसा निजीकरण किया जाना उचित नहीं है. सरकारी बैंक ही शासन की सभी योजनाओं का लाभ आम जनता को देते हैं. यदि बैंकों का निजीकरण होगा, तो यह ग्राहक व कर्मचारी दोनों के लिए नुकसानदायक होगा. बैंकों का निजीकरण होने से बैंक कर्मचारियों की छटनी, वेतन में कटौती जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा.

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के पूर्वी रीजनल ब्यूरो की प्रेस विज्ञप्ति

14 नवंबर, 2021

हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) के केंद्रीय कमेटी व पोलित ब्यूरो सदस्य तथा पूर्वी रीजनल ब्यूरो सचिव कामरेड किशन दा उर्फ प्रशांत बोस और उनकी पत्नी व केंद्रीय कमेटी की सदस्या कामरेड शीला मरांडी की गिरफ्तारी के खिलाफ 15 नवंबर से 19 नवंबर 2021 तक 5 दिवसीय प्रतिरोध दिवस और 20 नवंबर, 2021 को एक दिवसीय (24 घंटे) भारत बंद को सफल करें!

विदित हो कि दिनांक 12 नवंबर, 2021 की सुबह लगभग 9 बजे हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) के केंद्रीय कमेटी व पोलित ब्यूरो के वरिष्ठ सदस्य तथा पूर्वी रीजनल ब्यूरो सचिव कामरेड किशन दा उर्फ प्रशांत बोस उम्र 75 वर्ष और उनकी पत्नी व केंद्रीय कमेटी तथा पूर्वी रीजनल ब्यूरो सदस्या कामरेड शीला मरांडी उम्र लगभग 61 वर्ष दोनों शारीरिक अस्वस्थता के कारण संघर्षशील क्षेत्र से बाहर इलाज के लिए जा रहे थे. बाहर जाने के दौरान ही सरायकेला, पूर्वी सिंहभूम और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के संयुक्त टीम द्वारा सरायकेला जिला के चांडिल–कंड्रा पथ पर कंड्रा टोलप्लाजा नाका के पास गिरफ्तार कर लिये गये. गिरफ्तार करके उन्हें पुलिस हिरासत में रखकर पाशविक यातनाएं देते हुए पूछताछ की जा रही है.

केंद्रीय कमेटी के पूर्वी रीजनल ब्यूरो (ईआरबी) 75 वर्षीय वृद्ध एवं शारीरिक रूप से अस्वस्थ कामरेड किशन दा और 61 वर्षीय वृद्ध एवं शारीरकि रूप से अस्वस्थ शीला दी दोनों इलाज के लिए जाने के क्रम में गिरफ्तार कर उन्हें इलाज से वंचित कर पुलिस हिरासत में रखकर पूछताछ के दौरान उन्हें शारीरिक व मानसिक यातनाएं देने की बर्बर पुलिसिया कार्यवाही और वरिष्ठ नागरिगता अधिकार व मानवाधिकार हनन करने की तीव्र निंदा और कठोर भर्त्सना करता है.

ईआरबी कामरेड किशन दा और कामरेड शीला दी की शारीरिक अस्वस्थता के मद्देनजर तथा वरिष्ठ नागरिकता अधिकार के तहत झारखंड सरकार से अपील करता है कि उन दोनों साथियों को अविलंब न्यायालय में पेश कर उन्हें इलाज की समुचित व्यवस्था मुहैया किया जाएं तथा जाड़े का मौसम है इसलिए उन्हें तुरंत गरम कपड़े दिये जाएं. क्योंकि कामरेड किशन दा कई बीमारी के मरीज हैं, जैसे -i) Coronary artery, Anstable angina-from 2014; ii) Cerebro vescular accident-from 2014; iii) Prostrate Cancer-for test; iv) Osteo Arthritis and v) Blood pressure and sugar वैसे ही कामरेड शीला दी भी कई बीमारियों की मरीज हैं, जैसे- i) Blood Pressure Hypertrapy and Ventricular Hypertropy; ii) Gall blader ston; iii) Osteo Arthritis and Osteo prosis; iv) senile Catract आदि. इसलिए उन्हें इन सारी बीमारियों के इलाज हेतु अस्पताल में अविलंब भर्ती किये जाए तथा जरूरत की दवा भी मुहैया की जाए. साथ ही इन दोनों के साथ सफर करने वाले गिरफ्तार सभी व्यक्तियों को भी अविलंब न्यायालय में पेश करते हुए बिना शर्त रिहा किये जाए.

दोस्तों, कामरेड किशन दा 60 दशक से ही भारतीय नव जनवादी क्रांतिकारी संघर्ष में कूद पड़े थे. उन्होंने भाकपा (माओवादी) के अन्यतम संस्थापक नेता कामरेड कन्हाई चटर्जी के नेतृत्व में 1969 में गठित ''माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र'' से जुड़कर सांगठनिक कामकाज करते हुए बिहार–बंगाल स्पेशल एरिया कमेटी के सचिव के पद की जिम्मेदारी निभाते हुए संघर्ष का नेतृत्व प्रदान किया. उसके बाद एमसीसी की केंद्रीय कमेटी के सचिव, बाद में एमसीसीआई की केंद्रीय कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी भी निभाते हुए क्रांतिकारी संघर्ष का नेतृत्व किया. और वर्ष 2004 के 21 सितंबर को सीपीआई (एमएल) (पीपुल्सवार) और एमसीसीआई का विलय होकर गठित भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के केंद्रीय कमेटी व पोलित ब्यूरो सदस्य तथा पूर्वी रीजनल ब्यूरो के सचिव के पद पर कार्यरत रहे और भारत के मजदूर–किसान, शोषित–उत्पीड़ित आदिवासी और दलित जनता सहित तमाम मेहनतकश वर्गों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर शोषक–शासक वर्गों का शोषण और जुल्म से मुक्ति पाने तथा सही इज्जत–आजादी और आर्थिक–राजनीतिक अधिकार हासिल करने के संघर्ष में निस्वार्थ भाव से जान की परवाह किये बिना जनता के सेवक के बतौर नेतृत्व प्रदान करते हुए शोषित–उत्पीड़ित जनता के लोकप्रिय नेता बन गये.

वैसे ही कामरेड शीला दी भी ने 70 के दशक से छोटी उम्र में ही तत्कालीन एमसीसी के संघर्ष में शामिल होने के बाद सांगठनिक कामकाज को संभालते हुए शोषित–उत्पीड़ित महिलाओं की मुक्ति हेतु पार्टी के नेतृत्व में संचालित महिला फ्रंट – नारी मुक्ति संघ की अध्यक्षा के पद की जिम्मेदारी निभाते हुए एक मजबूत महिला संगठन का निर्माण करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और खासकर बिहार–झारखंड में तिलक–दहेज प्रथा के खिलाफ, बाल विवाह के खिलाफ, नशाखोरी के खिलाफ, महिलाओं को पुरुषों के सम्मान मजदूरी पाने, पितृसत्ता के खिलाफ तथा

समाज में समान इज्जत व मर्यादा पाने के आंदोलन में नारी मुक्ति संघ ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और संघ को पहचान दिलाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है. इस तरह उन्होंने महिलाओं को अपनी इज्जत–आजादी और अधिकार हासिल करने के संघर्ष हेतु जन संगठन व जन आंदोलन में महिलाओं को संगठित करने साथ–साथ पार्टी और फौज में भी व्यापक महिलाओं को शामिल करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है.

इस तरह कामरेड शीला दी ने पार्टी में महिला फ्रंट की जिम्मेदारी निभाते हुए एमसीसी व एमसीसीआई में कार्य के दौरान एरिया पार्टी कमेटी से लेकर स्पेशल एरिया कमेटी के स्तर तक के पद की जिम्मेदारी निभाई और 2004 में भाकपा (माओवादी) के गठन होने पर केंद्रीय कमेटी की सदस्या चुनी गयी और उसी पद पर कार्यरत थीं.

यह जगजाहिर है कि भाकपा (माओवादी) तथाकथित आजादी यानी 1947 में अंग्रेजी साम्राज्यवाद द्वारा सत्ता हस्तांतरण के बाद से हमारे देश में जारी साम्राज्यवाद के अप्रत्यक्ष शोषण–शासन यानी अर्द्ध औपनिवेशिक–अर्द्ध सामंती शासन के तहत साम्राज्यवाद–सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग के शोषण व शासन से मुक्त नव जनवादी भारत व समाजवाद की स्थापना करते हुए साम्यवादी समाज के निर्माण की ओर आगे बढ़ने के लक्ष्य रख कर भारतीय नव जनवादी क्रांति सफल करने हेतु न्यायपूर्ण क्रांतिकारी संघर्ष व जनयुद्ध चला रही है. इस न्यायपूर्ण क्रांतिकारी संघर्ष को साम्राज्यवाद के दलाल बड़े पूंजीपति वर्ग और सामंत जमींदार वर्ग और उसका प्रतिनिधित्व करने वाली शासक वर्गीय राजनीतिक पार्टियों के नेतृत्वाधीन प्रतिक्रियावादी सरकार द्वारा भाकपा (माओवादी) को अति वामपंथी उग्रवादी करार देकर बर्बर दमनात्मक अभियान चलाया जा रहा है. वर्ष 2004 में भाकपा (माओवादी) का गठन होने के साथ ही तत्कालीन यूपीए नीत मनमोहन सरकार द्वारा भाकपा (माओवादी) को आंतरिक सुरक्षा के मामले में सबसे बड़ा खतरा बताकर पार्टी के नेता व कार्यकर्ताओं के ऊपर बर्बर दमन अभियान चलाया गया है और 2009 के उत्तरार्द्ध ''ऑपरेशन ग्रीन हंट'' नामक बर्बर युद्ध अभियान पूरे देश के पैमाने पर चलाया जा रहा है. 2014 में केंद्र में फासिस्ट भाजपानीत एनडीए के नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद ''ऑपरेशन ग्रीन हंट'' दमन अभियान को और तीव्र व खूंखार रूप से चलाया जा रहा है. इसी दमन अभियान के तहत 2017 से 2022 तक ''मिशन समाधान'' के तहत माओवादी आंदोलन को कुचल डालने और माओवादियों का सफाया करने के लक्ष्य से दमन अभियान को और क्रूरतापूर्ण ढंग से चलाया जा रहा है. भाजपानीत मोदी की सरकार केंद्र में दूसरा बार सत्तारूढ़ होने के बाद से फासीवादी हमलें और तेज हो गये हैं तथा न्यूनतम जनवादी अधिकार को भी लोहे बूटों तले रौंदे जा रहा है. सरकार के जन विरोधी कानून व नीतियों के खिलाफ आवाज उठाने वाले मानव अधिकार कार्यकर्ताओं–सामाजिक कार्यकर्ताओं और अधिवक्ताओं के ऊपर फासीवादी कातिलाना हमलें चलाने तथा झूठे आरोप लगाकर जेलों में डालकर शारीरिक व मानसिक यातनाएं चलाये जा रहे हैं. फासिस्ट भाजपानीत केंद्र सरकार और राज्य सरकारों द्वारा क्रांतिकारी संघर्षों के ऊपर चलाये जा रहे चौतरफा हमले का ही अभिन्न हिस्सा है कामरेड किशन दा और कामरेड शीला दी की गिरफ्तारी.

भाकपा (माओवादी) की पूर्वी रीजनल ब्यूरो (इआरबी) हमारे केंद्रीय कमेटी व पोलित ब्यूरो सदस्य तथा पूर्वी रीजनल ब्यूरो के सचिव कामरेड किशन दा और केंद्रीय कमेटी सदस्या कामरेड शीला दी की गिरफ्तारी के खिलाफ 15 से 19 नवंबर तक प्रतिरोध दिवस मनाने तथा 20 नवंबर, 2021 को एक दिवसीय (24 घंटे) भारत बंद की घोषणा करता है. पूर्वी रीजनल ब्यूरो प्रतिरोध दिवस तथा एक दिवसीय भारत बंद को सफल बनाने के लिए रीजनल ब्यूरो के अधीनस्थ तमाम पार्टी कमेटियों सहित पूरे पार्टी कतारों, पीएलजीए के सभी कमानों, फारमेशनों तथा कमांडरों और लाल सैनिक जन योद्धाओं, जन संगठन–जन आंदोलन के नेताओं, कार्यकर्ताओं और क्रांतिकारी जन कमेटी व जन सरकार के पदाधिकारियों सहित क्रांतिकारी जनता से प्रतिरोध दिवस व भारत बंद को सफल बनाने के लिए सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान करता है. साथ ही पूर्वी रीजनल ब्यूरो तमाम प्रगतिशील संगठनों व व्यक्तियों तथा मानवाधिकार संगठनों और न्यायपसंद प्रबुद्ध नागरिकों से अपील करता है कि वे कामरेड किशन दा और कामरेड शीला दी के ऊपर किये जा रहे मानवाधिकार हनन व अमानवीय यातनाओं के खिलाफ आवाज उठाने तथा समुचित इलाज व आवश्यक दवा मुहैया कराने के साथ–साथ राजनीतिक बंदी का दर्जा प्रदान करने तथा बिना शर्त रिहा करने हेतु जन आंदोलन को तेज करें.

संकेत

प्रवक्ता

पूर्वी रीजनल ब्यूरो

भाकपा (माओवादी)

भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी के पोलित ब्यूरो के वरिष्ठ सदस्य एवं केंद्रीय कमेटी सदस्या कामरेड शीला मरांडी की गिरफ्तारी के खिलाफ 20 नवंबर को एक दिवसीय भारत बंद का भाकपा (माओवादी) केंद्रीय कमेटी द्वारा आह्वान किया गया.

इस बंद के दौरान पीएलजीए के कामरेडों द्वारा धनबाद रेल मंडल के हावड़ा–मुंबई मार्ग पर चक्रधरपुर के पास रेलवे ट्रैक पर ब्लास्ट कर दिया गया. इससे ओएचई और स्लीपरों के क्षतिग्रस्त होने के कारण हावड़ा से एसईसीआर जाने वाली सभी ट्रेनें 5 से 6 घंटे तक रुक गईं. दंडकारण्य में भी इस बंद के दौरान कई विरोध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ.

मोदी का सिर झुकाकर कृषि कानूनों को रद्द करवाने वाले भारत के किसानों की जय–जयकार!

साम्राज्यवादियों, बहुराष्ट्रीय निगमों, भारत के दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों के हितों की पूर्ति के लिए बनाए गए कृषि कानूनों के रद्द के लिए विगत साल भर से लाखों किसानों ने दिल्ली में धरना देते हुए आखिर जीत हासिल की. इस घमंड के साथ कि उनका कोई सामना नहीं कर सकता है, संसद में उनकी पार्टी को प्राप्त बहुमत के चलते वो कुछ भी कर सकते हैं, अत्यंत निरंकुश तरीके से सितंबर 2020 में बनाए गए तीन कृषि कानूनों को आगामी नवंबर महीने की आखिरी में होने वाले संसद के शीतकालीन सत्र में वापस लेने की प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 19 नवंबर के दिन राष्ट्र के नाम एक विशेष संबोधन में घोषणा की. यह भारत के किसानों के ऐतिहासिक संघर्ष की जबर्दस्त जीत है. साल भर से दिल्ली में कई कठिनाइयों व नुकसानों को झेलते हुए अपनी जायज मांगों को हासिल करने आंदोलन को जारी रखने वाले अन्नदाताओं के समर्थन में समूचा देश खड़ा था. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के किसानों के प्रति अभूतपूर्व भाईचारा प्रकट हुआ. इस तरह यह जीत देश की जनता की है. निरंकुश कृषि कानूनों के रद्द के लिए पिछले डेढ़ साल से अभूतपूर्व ढंग से लड़ते हुए करीबन 700 किसानों ने अपनी जानें गंवायी.

जीत की खुशी

हमारे देश के इतिहास में अभूतपूर्व ढंग से सैकड़ों किसान संगठनों ने मिलकर संयुक्त किसान मोर्चे का गठन कर उसके नेतृत्व में समझौताविहीन व उज्वल आंदोलन को संचालित किया. उनके संघर्ष पर पानी फेरने हिंदुत्व शक्तियों ने कई षड्यंत्र किए. उन पर कई हमलें किए. फिर भी, उनकी परवाह किए बगैर संघर्ष के पथ पर दृढ़तापूर्वक डटे रहकर उन्होंने मोदी सरकार को करारा जवाब दिया. वर्तमान किसान आंदोलन की जीत इस बात का एक और बड़ा उदाहरण है कि केंद्र की ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी भाजपा सरकार द्वारा अपनायी जा रही तमाम जन विरोधी नीतियों का देश की जनता कड़ा विरोध कर रही है. इस आंदोलन ने एक बार और जनता के सामने विश्वासभरा यह संदेश रखा कि संघर्षों के जरिए ही ब्राह्मणीय हिंदुत्व शक्तियों की जनविरोधी नीतियों को परास्त कर सकते हैं.

प्रधानमंत्री की तीन कृषि कानून वापस लेने की घोषणा के बाद सरकार को लगा था कि किसान तुरंत ही शायद अपने घर लौट जाएंगे और आंदोलन खत्म हो जाएगा. लेकिन किसान संघर्ष समिति ने साफ कह दिया है कि जब तक एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) सहित उनकी अन्य मांगों का हल नहीं होगा तब तक आंदोलन खत्म नहीं होगा. 29 नवंबर, 2021 को संसद के शीतकालीन सत्र में दोनों सदनों में कृषि कानून वापसी विधेयक–2021 पारित किया गया. इसके बावजूद किसान अपनी अन्य छह मांगों को लेकर आंदोलनस्थल पर डटे रहे हैं. अपनी मांगों के हल के लिए 21 नवंबर, 2021 को उन्होंने प्रधानमंत्री के नाम पर पत्र लिखा है. इसके बाद 7, 8, 9 दिसंबर को संयुक्त किसान मोर्चा के नेताओं और केंद्र सरकार के बीच में वार्तालाप और पत्राचार की प्रक्रिया जारी रही. इसमें सरकार ने इन अन्य छह मांगों के हल करने का निर्णय लिया तो 11 दिसंबर, 2021 को किसानों ने जीत की खुशी मना कर अपने आंदोलन को अस्थायी रूप से समाप्त कर दिया.

लेकिन दिसंबर के आखिरी तक सरकार ने इस मामले में कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाया. दरअसल सरकार ने मजबूरी से कृषि कानून वापस लिए. इस वर्ष के मार्च–अप्रैल महीनों में आयोजित चुनावों में भाजपा को आशानुरूप नतीजें नहीं मिलें. अब आगामी भविष्य में पंजाब, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड सहित पांच राज्यों में होने वाले चुनावों को ध्यान में रख कर मोदी सरकार ने यह फैसला लिया. इस आंदोलन में पंजाब, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड किसान जोर–शोर से हिस्सा ले रहे हैं. ऐसे में सरकार का अड़ियल रवैया की वजह से निश्चित रूप से उन राज्यों में उसे नुकसान पहुंचा सकता है. उतना ही नहीं किसानों ने 2024 तक यानी अगले आम चुनाव तक अपने आंदोलन को जारी रखने की घोषणा की थी. अगर तब तक यह आंदोलन जारी रहेगा तो आने वाले आम चुनाव में भी भाजपा को नुकसान पहुंच सकता है, इस आशंका से सरकार को झुकना पड़ा. कानून वापस लेने की घोषणा के वक्त में भी मोदी ने कहा कि शायद वे किसानों को इन कानूनों के फायदों के बारे में समझाने में नाकाम रहे.

प्रधानमंत्री के नाम पर संयुक्त किसान मोर्चा का पत्र

विषयः देश के लिए आपका संदेश और आपके लिए किसानों का संदेश

प्रिय प्रधानमंत्री जी,

देश के करोड़ किसानों ने 19 नवंबर, 2021 की सुबह राष्ट्र के नाम संबोधित करते हुए दिया गया आपका भाषण सुन लिया है. हमने समझा कि 11 बार बातचीत होने के बाद, द्विपाक्षिक परिष्कार के बजाए आपने एकपक्षीय घोषणा करने का रास्ता चुना है. हालांकि हम खुश हैं कि आपने तीन कृषि कानून वापस लेने के निर्णय की घोषणा की है. आपकी घोषणा का हम स्वागत करते हैं और हम आशा करते हैं कि आपकी सरकार यथा संभव शीघ्र गति से यह वादा पूरी तरह निभाएगी.

प्रधानमंत्री, आप भली–भांति जानते हैं कि तीन कृषि कानूनों को रद्द करना इस आंदोलन की एकमात्र मांग नहीं है. मोर्चा ने सरकार के साथ वार्ता की शुरूआत से ही तीन मांगें उठायी थीं:

1. खेती की संपूर्ण लागत पर आधारित (सी2+50 फीसदी) न्यूनतम समर्थन मूल्य को सभी कृषि उपज के ऊपर, सभी किसानों का कानूनी हक बना दिया जाए, ताकि देश के हर किसान को अपनी पूरी फसल पर कम से कम सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद की गारंटी हो सके. (स्वयं आपकी अध्यक्षता में बनी समिति ने 2011 में तत्कालीन प्रधानमंत्री को यह सिफारिश दी थी और आपकी सरकार ने संसद में भी इसके बारे में घोषणा भी की थी.)

2. सरकार द्वारा प्रस्तावित 'विद्युत अधिनियम संशोधन विधेयक–2020/2021' का ड्राफ्ट वापस किया जाए. (वार्ता के दौरान सरकार ने वादा किया था कि इसे वापस किया जाएगा. लेकिन फिर वादे के खिलाफ इसे संसद की कार्यसूची में शामिल किया गया था.

3. राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और इससे जुड़े क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिए आयोग अधिनियम – 2021 में किसानों को सजा देने के प्रावधान हटाए जाए. (इस साल सरकार ने कुछ किसान विरोधी प्रावधान तो हटा दिये. लेकिन धारा–15 के माध्यम से फिर किसान को सजा की गुंजाइश बना दी गई है.) किसान इसलिए निराश हुए है कि आपके भाषण में इन प्रमुख मांगों पर कोई ठोस घोषणा नहीं है. किसानों ने आशा की थी कि इस ऐतिहासिक आंदोलन के जरिए तीनों कृषि कानूनों को रोकने के अलावा वे अपनी मेहनत का उचित मूल्य देने वाला कानूनन वादा प्राप्त कर सकें.

प्रधानमंत्री, पिछले एक वर्ष में किसान आंदोलन के दौरान कुछ और मुद्दे भी उठे हैं, जिनका तत्काल निपटारा करना अनिवार्य है.

4. इस आंदोलन के दौरान (जून 2020 से अब तक) दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश और अनेक राज्यों के हजारों किसान सैकड़ों मामलों में फंस गए हैं. उन मामलों को तत्काल वापस लिया जाए.

5. लखीमपुर खीरी हत्याकांड के सूत्रधार और धारा–120(बी) का अभियुक्त अजय मिश्रा टेनी खुलेआम घूम रहा है और आपके मंत्रिमंडल में मंत्री बने हुए हैं. वह आपके और अन्य वरिष्ठ मंत्रियों के साथ मंच भी साझा कर रहे हैं. उन्हें बर्खास्त और गिरफ्तार किया जाए.

6. इस आंदोलन के दौरान अब तक लगभग 750 किसानों ने अपनी जिंदगियों को कुरबान किया है. उनके परिवारों के मुआवजे और पुनर्वास की व्यवस्था हो. शहीद किसानों की स्मृति में एक शहीद स्मारक बनाने के लिए सिंघु बॉर्डर में जमीन दी जाए.

प्रधानमंत्री, आपने विज्ञप्ति की है कि अब हम घर लौट जाए. हम वादा कर रहे हैं कि सड़क पर बैठने का हमें कोई शौक नहीं है. हम चाहते हैं कि यथा संभव शीघ्रता से आप इन अन्य समस्याओं का हल करने के बाद हम अपने घर, परिवार व खेतों में लौटेंगे. अगर आप भी यही चाहते हैं तो सरकार को चाहिए कि वह उपरोक्त छह मुद्दों पर तत्काल संयुक्त किसान मोर्चे के साथ वार्ता शुर करे. तब तक संयुक्त किसान मोर्चा इस आंदोलन को जारी रखेगा.

आपका,

संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम)

21 नवंबर, 2021

इसका मतलब है कि मोदी अभी भी उन कानूनों की वकालत कर रहे हैं. ऐसे में किसानों की मांगों को सरकार पूरी करेगी, ऐसा कतई हम आशा नहीं कर सकते हैं. हालांकि विगत में आंदोलनों के सामने सिर झुका कर सरकारों ने अपने कुछ जन विरोधी नीतियों को वापस ले लिया लेकिन बाद में पिछले दरवाजे से उन नीतियों पर अमल कर रही है, ऐसे ढ़ेर सारे उदाहरण हम देख चुके हैं. लगभग डेढ़ साल तक ऐतिहासिक संघर्ष करने वाले देश के किसान सरकार के इस धोखेबाजी व्यवहार से अच्छी तरह वाकिफ हैं. इसलिए निश्चित रूप से वे आगे भी सतर्क रहेंगे और अपने संघर्ष को जारी रखेंगे. ❍

जारी है कैंप विरोधी आंदोलनों का सिलसिला!

पुसनार पुलिस कैंप और एडसमेट्टा नरसंहार के विरोध में जन संघर्ष

बुर्जी, पुंबाड, पुसनार व हिरील रोड व पुलिस कैंप के विरोध में 10 अक्टूबर, 2021 को लगभग चार हजार जनता ने गंगालूर में आंदोलन शुरू किया. गंगालूर व पुंबाड के बीच में बुर्जी के पास लगभग 30 टेंट लगाकर आंदोलनकारियों ने अपना आंदोलन जारी किया. इस मौके पर 17–18 अक्टूबर को एक आमसभा को संचालित किया गया जिसमें 10 हजार जनता ने शिरकत की. इसी सिलसिले में 27–28 अक्टूबर को गंगालूर में आम सभा का आयोजन हुआ जिसमें 6 हजार लोगों ने शिरकत की. यह आंदोलन थमने का नाम नहीं ले रहा है. इस आंदोलन के मौके पर पुलिस कैंप हटाने और सड़क निर्माण बंद करने के अलावा और भी मांगें उठायी गईं. एडसमेट्टा नरसंहार के दोषी पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों को सजा देने, हर एक मृतक परिवार के लिए एक करोड़ और प्रत्येक घायल व्यक्ति को 50 लाख रुपए की मुआवजा देने, बैलाडीला के पिट्टोडमेट्टा, तरालमेट्टा व उदामरका आदि पहाड़ों में खदान खोलने के विरोध में, पूसनार व बेचापाल में महिलाओं के साथ पुलिस बलों द्वारा किए गए अत्याचारों के दोषियों को सजा दने आदि मांग भी की गई.

एमपुरम में प्रस्तावित पुलिस कैंप के विरोध में अनिश्चितकालीन जन संघर्ष!

एक ओर दक्षिण बस्तर डिविजन के सिलंगेर में जोर–शोर से कैंप विरोधी आंदोलन जारी है, दूसरी ओर डिविजन में नए कैंपों के खोलने का प्रयास जारी है. 17 जुलाई, 2021 को किसी भी जानकारी के बगैर, अचानक पामेड क्षेत्र के एमपुरम गांव में पहुंचने वाले पुलिस बलों ने सुनम जोगा, करको शंकर और करको सत्यम – इन तीनों परिवारों की 30 एकड़ जमीन में बेस कैंप लगाने के लिए जमीन की नाप की. कैंप के लिए रोड का निर्माण भी शुरू किया गया. इसके विरोध में न सिर्फ एमपुरम बल्कि आस–पास गांवों की जनता ने अपना आंदोलन शुरू किया. जनता ने जल, जंगल, जमीन पर अपने अधिकार के अलावा अपने अस्तित्व, अस्मिता, आत्मसम्मान बचाने के मकसद से उसी दिन से उस जगह पर अपना अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया. मूलवासी बचाओ मंच के नेतृत्व में जनता ने अपनी मांगों को लेकर जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा. लेकिन कलेक्टर ने जनता की मांग नहीं सुनी. सरकार के अड़ियल रवैये के खिलाफ अभी तक जनता का आंदोलन जारी है. आंदोलनकारियों ने ठान ली कि जब तक कैंप के प्रस्ताव को रद्द नहीं किया जाएगा, तब तक उनका आंदोलन नहीं रुकेगा. जनता अपना–अपना राशन लेकर धरनास्थल पर ही खाने–पीने का इंतजार करते हुए अपना आंदोलन जारी कर रही है. हर दिन लगभग 800 लोग धरना में शामिल हो रहे हैं. हर गांव में बारी–बारी से कुछ लोग घरबार व खेतीबाड़ी संभाल रहे हैं और अन्य लोग आंदोलन में शामिल हो रहे हैं. इस आंदोलन में महिला–पुरुष, बाल–बच्चे व बुजुर्ग जोश–खरोश के साथ शामिल हो रहे हैं. धरनास्थल पर 'जल, जंगल, जमीन नहीं देंगे', 'अस्तित्व, अस्मिता व अत्मसम्मान बचाऐंगे', 'दूसरी भूमकाल लड़ाई शुरू करेंगे' आदि नारें लगातार गूंज रहे हैं.

एमपुरम के अलावा दक्षिण बस्तर डिविजन के जगरगुंडा एरिया के मिनपा व कोंडासवाली और पामेड एरिया के गलगम गांवों में भी पुलिस कैंप के विरोध में जनता ने आंदोलन किया.

नहाडी कैंप के विरोध में फिर जन आंदोलन!

नवंबर 2020 में प्रस्तावित नहाडी कैंप के विरोध में दरभा डिविजन के 18 पंचायतों की जनता ने 20 दिन तक लगातार आंदोलन किया. अपने–अपने गांवों में ग्रामसभाओं को आयोजित करके कैंप के विरोध में प्रस्ताव भी किए गए. इस कैंप के लिए बनायी गई सड़क को भी 40 जगहों में ध्वस्त किया गया. जनता के आंदोलन को शांत करने के लिए उस वक्त जिला कलेक्टर ने कैंप नहीं खोलने का आश्वासन दिया. लेकिन यह आश्वासन झूठा साबित हुआ. शासन–प्रशासन ने आंदोलनकारियों पर भीषण दमन का प्रयोग करते हुए कैंप खोलने का अपना प्रयास जारी रखा है.

इसके पहले दरभा डिविजन में लगाए गए पोटाली व बर्रेगुडेम कैंपों के विरोध में भी जोरदार विरोध दर्ज हुआ. पोटाली गांव में जनता की 198 एकड़ उपजाऊ जमीन एक निजी कंपनी के कब्जे में गई. जनता को इसकी जानकारी भी नहीं थी. जब चार साल के पहले जनता को इसके बारे में पता चला तब से इसके विरोध में वह आंदोलनरत है. वेडमा पंचायत के पूलपाड गांव की 133 एकड़ जमीन पर अरसेल्लार मित्तल कंपनी ने कब्जा जमायी और वहां काम भी शुरू हुआ. जनता इसका भी पुरजोर विरोध कर रही है. इस विरोध को कुचल कर यहां के जल, जंगल व जमीन को कॉर्पोरेट घरानों व बड़े पूंजीपतियों को सौंपने के मकसद से यहां पुलिस कैंपों की तादाद बढ़ा दी जा रही है. इसी सिलसिले में अब नहाडी में पुलिस कैंप बन रहा है. इसके विरोध में फिर जनता संघर्षरत हो गई.

हर साल 1 नवंबर को लुटेरी सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस मनाया जाता है. छत्तीसगढ़ राज्य का गठन होकर 21 वर्ष बीत गए. लेकिन बस्तर संभाग में जनता की जिंदगी में कोई विकास नहीं आया. बल्कि जनता के जल, जंगल व जमीन बहुराष्ट्रीय कंपनियों और दलाल पूंजीपतियों को सौंपा जा रहा है. लाखों संख्या में जनता को विस्थापित किया जा रहा है. इसके खिलाफ उभरे जन आंदोलनों को दबाने के लिए बस्तर को सैनिक छावनी में तब्दील किया गया है. गांव–गांव में पुलिस कैंप बैठाया जा रहा है. इसके तहत पेसा कानून व ग्रामसभाओं का उल्लंघन किया जा रहा है.

सरकार के इस जन विरोधी व तानाशाही रवैये के खिलाफ नहाडी के आसपास के 7–8 पंचायतों की जनता ने 1 नवंबर को चलो नहाडी का आह्वान किया. इस आह्वान के मुताबिक एकत्रित 2 हजार जनता ने नहाडी में रैली निकाल कर आम सभा का आयोजन किया. इस दौरान आंदोलनरत जनता ने पोटाली व बर्रेगुडेम कैंपों को हटाने, प्रस्तावित नहाडी कैंप को रद्द करने की मांगें जोरदार से उठायीं. उतना ही नहीं फर्जी मुठभेड़ों में नीलावाया ग्रामीण कोसा और संतोष की हत्या करने वाले पुलिस बलों को सजा देने, हर पंचायत में पीने का पानी, सिंचाई व्यवस्था, स्कूल, अस्पताल व बिजली आदि मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध कराने, बेरोजगारों को पुलिस में नहीं बल्कि अन्य विभागों में नौकरी देने, बेरोजगार भत्ता देने आदि मांग उठायी गई. स्वायत्तशासी बस्तर की मांग भी इस मौके पर मुख्य रूप से उठायी गई. जेल बंदी रिहाई समिति की अध्यक्षा मडकाम हिडमे की रिहाई की मांग भी उठायी गई.

उसके बाद 3 नवंबर, 2021 से अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू हुआ. सभी गांवों से हर दिन सैकड़ों तादाद में जनता इस आंदोलन में शामिल हो रही है. बाहर से अलग–अलग सामाजिक संगठन इस आंदोलन का समर्थन कर रहे हैं. लगातार जारी इस आंदोलन और व्यापक रूप से मिल रही मदद को देख कर घबराने वाली सरकार ने अपने दमन को और बढ़ा दिया. इसके तहत 30 नवंबर को धान की फसल काट रहे नहाडी और गोंगे पंचायतों के लोगों पर डीआरजी गुंडों द्वारा अंधाधुंध गोलीबारी की गई. उसी दिन धरनास्थल पहुंच कर आंदोलन के नेतृत्व को धमकी दी गई और उनके साथ मारपीट करने के लिए वे उतारू हो गए. इसके विरोध में 7 दिसंबर को 10–12 पंचायतों की दो हजार जनता ने नहाडी में रैली प्रदर्शन किया. बाद में आयोजित आम सभा में संघर्षरत जनता ने पुलिस के अत्याचार के विरोध में, कैंप के प्रस्ताव को रद्द करने और पोटाली व पुलपाड़ की जमीन को फिर जनता को सौंपने की मांग की. आंदोलनकारियों ने मुक्तकंठ से कहा है कि उन्हें पुलिस कैंप नहीं चाहिए बल्कि पीने का

बेचापाल कैंप के विरोध में जारी है जन संघर्ष!

ज्ञात है कि पश्चिम बस्तर डिविजन, भैरमगढ़ एरिया, बेचापाल गांव में दिसंबर 2020 में बिठाए गए पुलिस कैंप के विरोध में पिछले वर्ष 26 दिसंबर को लगभग पांच हजार लोगों ने रैली निकाली और कैंप के सामने एक जबर्दस्त धरना दिया. कैंप हटाने की मांग को लेकर एसडीएम और कलेक्टर को ज्ञापन सौंप दिया था. इस मौके पर संघर्षरत जनता ने चेतावनी दी कि अगर उनकी मांग पूरी नहीं होगी, तो उनका आंदोलन और तेज होगा. इस चेतावनी की शासन–प्रशासन की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं होने पर आक्रोशित भैरमगढ़ ब्लॉक के 20 पंचायतों की 20 हजार जनता ने 20 जनवरी, 2021 को भैरमगढ़ मुख्य मार्ग को तीन घंटों तक चक्काजाम किया. बाद में दो दिवसीय धरना व रैली का आयोजन किया. इसके बाद भी इस कैंप के विरोध में आंदोलन होते रहे. एक ओर जनता इस कैंप के खिलाफ अपना विरोध जता रही है, दूसरी ओर इस कैंप की वजह से जनता पर दमन दिन–ब–दिन विकराल रूप ले रहा है. 14 अगस्त, 2021 को इस गांव की युवति ओयाम मंगली के साथ पुलिस ने बलात्कार किया. 26 जुलाई, 2021 को बेचापाल छात्र मनीष को गिरफ्तार करके करेंट शॉक देकर उसकी यातनाएं दी गई. 1 अगस्त, 2021 को इस गांव के छात्र राकेश, बबलू व सोमरू की पुलिस द्वारा बेदम पिटाई की गई. इन अत्याचारों से आक्रोशित जनता ने अपने संघर्ष को और जोर दिया.

30 नवंबर, 2021 से बेचापाल कैंप के सामने रिले धरना की शुरूआत हुई. भैरमगढ़ ब्लॉक के 65 ग्राम पंचायतों से आने वाले 11 हजार लोग बेचापाल कैंप हटाओ, नीलावाया व मदूम में फर्जी मुठभेड़ को अंजाम देने वाले डीआरजी गुंडों, ओयम मंगली से आत्याचार किए पुलिस बलों व स्कूल छात्रों की यातनाएं देने वाले पुलिस बलों को कड़ी सजा देने आदि 23 मांगों को लेकर लगातार आंदोलन कर रहे हैं. धरना की शुरूआत के पहले बेचापाल से मिरतुल थाना तक पांच किलो मीटर तक रैली की गई. बाद में हर दिन दो–तीन हजार की तादाद में आंदोलनकारी रिले धरना में भाग ले रहे हैं. महिलाएं अपनी दूधमुंहे बच्चों को लेकर इस आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं. सड़क पर ही टेंट लगा कर आंदोलन जारी कर रही हैं. हर दिन आंदोलन स्थल पर आदिवासी रीति–रिवाज व संस्कृति को ऊंचा उठाते हुए नाच, गाना व नाटक आदि कार्यक्रम जारी हैं. इस दौरान 15 दिसंबर को बेचापाल से शेरली कैंप तक 3 किलो मीटर तक लगभग 5 हजार जनता ने रैली की. 24 दिसंबर को अलग–अलग आदिवासी संगठन और मीडियाकर्मी व छात्र आदि कई तबकों की भागदारी से मूलवासी बचाओ मंच के नेतृत्व में पेसा कानून के मुताबिक ग्रामसभा का आयोजन किया गया.

29 दिसंबर को 50 पंचायतों के लगभग 9 हजार आंदोलनकारियों ने आमसभा का आयोजन करके कलेक्टर व विधायक के नाम पर ज्ञापन सौंपा. इस मौके पर आंदोलनकारियों ने पत्रकारों के सामने भी अपनी आवाज उठायी.

❍

पानी चाहिए, सिंचाई व्यवस्था चाहिए. इस मौके पर 'पुलिस कैंप बंद हो', 'पेसा कानून लागू करो', बस्तर पर बस्तरियों का अधिकार हो' जैसे नारे गूंज उठे.

जनता के इस जबर्दस्त व जायज आंदोलन की खिल्ली उड़ाते हुए 9 दिसंबर को प्रोक्लेन लेकर हजारों संख्या में आने वाले पुलिस बलों ने धरनास्थल पहुंच कर मंच को जलाया और हवाई फायरिंग करते हुए जनता में दहशत फैलाया. कैंप के लिए बोरिंग लगाना शुरू किया. कैंप के लिए भी तैयारियां शुरू की गई. इसके विरोध में नहाड़ी पहुंचने वाले लोगों को रोकने के लिए नहाडी आनेवाले सभी रास्ते बंद किए गए. पुलिस बलों ने दो जगहों में शहीदों के स्मारकों को ध्वस्त किया. नहाडी व गोंडेरास दोनों पंचायतों का घेराव करके जनता पर बंदूक साध कर जोर–जबर्दस्ती से कैंप की तैयारियां की जा रही हैं. कैंप के लिए किए गए रोड चौढ़ीकरण के तहत जनता के आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले महुआ, इमली, आम आदि कई पेड़ों को ध्वस्त किया जा रहा है. इसके बावजूद जनता अपने आंदोलन को और मजबूत करने की कोशिश में है.

❍

पुलिया, पर्यटक केंद्र व कैंप के खिलाफ वेचाघाट में जनांदोलन!

कांकेर जिला, कोयलीबेडा ब्लॉक के परलकोट क्षेत्र के वेचाघाट में पुलिया बनाने का कुछ वर्ष पहले ही सरकार ने निर्णय लिया. सिर्फ यहां की नहीं बल्कि समूचे दंडकारण्य क्षेत्र की जनता का मानना है कि विकास के नाम पर यहां की प्राकृतिक संपदाओं की दोहन के लिए ही सड़कों व आदि मांगों को लेकर राज्यपाल को डाक के माध्यम से ज्ञापन भेज दिया. इसके बावजूद राज्य सरकार की ओर से कोई भी आश्वासन नहीं मिलने पर आक्रोशित हजार से अधिक जनता ने 7 दिसंबर, 2021 से अनिश्चितकालिन धरना–प्रदर्शन शुरू किया.

पुलियाओं का निर्माण किया जा रहा है. इसलिए इस पुलिया का जनता विरोध कर रही है. इस विरोध को रौंदने के लिए वेचाघाट नदी के तटवर्ती गांव कांदाड़ी में बीएसएफ कैंप बिठाने के लिए राज्य सरकार ने निर्णय लिया. पिछले वर्ष भी इसके विरोध में थोड़ा–बहुत आंदोलन हुआ. लेकिन वह आगे नहीं बढ़ पाया. इस वर्ष के नवंबर से यह कैंप सुर्खियां बटोरने लगा. 5 नवंबर के दैनिक अखबारों में खबर छपी गई कि 8 नवंबर को वेचापाल में कैंप बिठाया जाएगा. इसके तहत 8 नवंबर को कलेक्टर व बीएसएफ के आला अधिकारियों द्वारा कैंप के स्थल का निरीक्षण किया गया. इसके पहले सितंबर महीने में ही इस क्षेत्र के गांव चितरम में पर्यटक केंद्र बनाने की राज्य सरकार ने घोषणा की. इन तीनों के निर्णय सरकार ने 5वीं अनुसूची के तहत बने पेसा कानून का उल्लंघन करते हुए ग्रामसभाओं की अनुमति के बिना ही किए. इस पृष्ठभूमि में फिर एक बार आंदोलन शुरू हो गया.

इसके तहत सर्व आदिवासी समाज के नेतृत्व में कोयलीबेडा ब्लॉक व ओरछा ब्लॉक के कोंगे, पंगोड़, गारपा व आदनार पंचायतों की जनता ने 28 नवंबर को प्रस्तावित पुलिया, बीएसएफ कैंप व पर्यटक केंद्र के खिलाफ वेचाघाट तट पर एक दिवसीय सभा का आयोजन कर अपना विरोध दर्ज किया. 3 दिसंबर को और एक आम सभा का आयोजन किया गया. इस दौरान जनता ने कैंप, पुलिया व पर्यटक केंद्र बनाने के प्रस्ताव को वापस लेने, स्कूल, आंगनबाड़ी व अस्पताल आदि बुनियादी सुविधाओं को उपलब्ध कराने

अपने आंदोलन के सिलसिले को जारी रखते हुए जनता कई कार्यक्रमों को आयोजित कर रही है. संघर्ष समिति के आह्वान के मुताबिक 10 दिसंबर को मानवाधिकार दिवस के मौके पर विशाल रैली का आयोजन किया गया. इसमें 2 हजार से अधिक महिला–पुरुष, बाल–बच्चे बुजुर्ग शामिल हुए हैं. 13 दिसंबर को वेट्टिया में 1500 लोगों की भागीदारी से और 31 दिसंबर को मरोड़ा में 6–7 हजार लोगों की भागीदारी से चक्काजाम किए गए. तथा 24 दिसंबर को पेसा–ग्रामसभा का अधिकार दिवस मनाया गया. इस अवसर पर पेसा कानून के बारे में जनता को जानकारी दी गई.

इस आंदोलन में भाग लेने वालों की तादाद दिन–ब–दिन बढ़ रही है. 5 पंचायत के 100 जनता द्वारा एक दिवसीय आम सभा रैली से शुरू होने वाले इस आंदोलन में धीरे–धीरे हजारों लोग शामिल हो रहे हैं. कोयलीबेड़ा व ओरछा के अलावा मानपुर, नारायणपुर, दुर्गकोंदल, अंतागढ़ आदि क्षेत्रों से भी अधिक तादाद में जनता शामिल हो रही है. महाराष्ट्र राज्य से भी जनता शामिल हो रही है. कोयलीबेड़ा ब्लॉक के 103 पंचायतों के सभी गांवों की जनता इस आंदोलन में सक्रिय भागीदारी ले रही है. इस तरह हजारों आदिवासी, गैर–आदिवासी जनता अपनी खेती–बाड़ी व अन्य काम छोड़कर अपने जल–जंगल–जमीन, संसाधन, अस्मिता, अस्तित्व, आत्मसम्मान, संस्कृति व जैवविविधता को बचाने के मकसद से अपने घरों से राशन ले जाकर इस आंदोलन में भाग ले रही है. जनता

खुले आसमान के नीचे वेचाघाटी नदी के किनारे कड़ाके की ठण्ड में ठिठुरते हुए, अकाल बारिश में भीगते हुए. भुखे–प्यासे दिनों–रात इस आंदोलन में डटे हुई है.

इस आंदोलन में प्रस्तावित पुलिया, बीएसएफ कैंप व पर्यटक केंद्र बनाने के प्रस्ताव को रद्द करने के अलावा कई मांग जोड़ गईं. परलकोट क्षेत्र के 14 ग्राम पंचायतों को सामान्य घोषित किया गया है उन्हें पुनः आरक्षित किया जाने, 2022 में होने वाली जनगणना में आदिवासियों के लिए अलग धर्म कोड देने, बस्तर में नरसंहार व बलात्कार बंद होने, बस्तर से पुलिस कैंप वापस लेने, सिलगेर, एड़समेट्टा, ताड़बल्ला, सरकिनगुड़ा नरसंहार और तिम्मापुरम, मोरपल्ली व ताड़मेटला आगजनी कांड के दोषी पुलिस अधिकारी व जवानों को सजा देने, मृतकों को 1–1 करोड़, घायलों को 50–50 लाख मुआवजा देने आदि मांगें उठायी गई हैं.

इस संघर्ष में महिलाओं की जबर्दस्त भागीदारी रही. आंदोलन की शुरूआत से किशोरी बालिकाओं से लेकर 80 वर्षीय बुजुर्ग महिलाओं तक अपनी सामाजिक जिम्मेदारी निभा रही हैं. कई महिलाएं अपने दूधमुंहे बच्चों को गोद में लेकर और नन्हें–मुन्ने बच्चों को साथ में लेकर आदिवासी/मूलनिवासी समुदाय के हक–अधिकार की लड़ाई में अधिक संख्या में सक्रिय भागीदारी ले रही हैं. मानवाधिकार दिवस व ग्राम सभा अधिकार दिवस के मौके पर कई महिलाओं ने भाषण दिया. तथा प्रशासनिक अधिकारियों के साथ वार्तालाप करने में भी महिलाएं शामिल हो रही हैं. इस आंदोलन में अपने परिजन शामिल होने की वजह से परिवार पर बढ़ रहे काम के बोझ को महिलाएं अपने कंधों पर उठा कर भी आंदोलन का सहयोग दे रही हैं.

इस आंदोलन का व्यापक समर्थन मिल रहा है. बंग समाज की जनता शुरू से इस आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग ले रही है. किसान संगठन, अलग–अलग जिला व ब्लॉकों के सर्व आदिवासी समाज, पिछड़ा वर्ग, उराव समाज, हल्बा समाज के प्रतिनिधियां इस आंदोलन में शामिल होकर अपना जोर–दार समर्थन दे रहे हैं. नांदगांव, मानपुर, नारायणपुर, दुर्गकोंदल, अंतागढ़, कोयलीबेड़ा आदि क्षेत्रों के अलावा महाराष्ट्र के नागपुर, गढ़चिरोली के कई सामाजिक संगठन भी इस आंदोलन का समर्थन दे रहे हैं.

संगाम, बांदे, पखांजुर, दुर्गकोंदल, कोयलीबेड़ा व कांकेर, धमतरी, रायपुर के प्रिंट व इलेक्ट्रोनिक मीडिया के कुछ पत्रकार आंदोलन का भरपूर समर्थन दे रहे हैं. वे अपने अखबारों, चैनलों व सोशल मीडिया में आंदोलन की खबरें लगातार प्रचार–प्रसार कर रहे हैं.

इतने व्यापक समर्थन व भागीदारी के साथ इतने जुझारू रूप से लगातार यह आंदोलन जारी रहने के बावजूद सरकारों के कानों पर झूं तक नहीं रेंगने की वजह से आक्रोशित जनता ने अपने आंदोलन को और उग्र रूप लेने की ठान ली. ❍

ओरछा में कैंप, रोड व पुलिया का विरोध!

जनता के विरोध को दरकिनार करते हुए नारायणपुर जिले के ओरछा में पुलिस कैंप, सड़क व पुलियां का निर्माण हो रहा हैं. इसके विरोध में 9 नवंबर, 2021 को ओरछा में प्रदर्शन किया गया. इस दौरान आंदोलनकारियों ने स्वास्थ्य सुविधा, स्कूल व पेयजल आदि मूलभूत समस्याओं के हल की मांग की. इस प्रदर्शन में सैकड़ों स्त्री–पुरुषों ने भाग लिया. प्रदर्शनकारियों ने सरकार को यह चेतावनी दी कि अगर उनकी मांग पूरी नहीं होंगी उनका आंदोलन और जोर होगा.

कच्चापाल ग्रामसभा में कैंप विरोधी प्रस्ताव!

कच्चापाल में विगत 4–5 सालों से पुलिस कैंप बिठाने की शासन–प्रशासन द्वारा कोशिशें जारी हैं. ग्रामीण इसका विरोध कर रहे हैं. इसके तहत 19 नवंबर, 2021 को 7 पंचायतों की जनता पेसा कानून के तहत ग्राम सभा का आयोजन किया. इस दौरान जनता ने कोहकामेट्टा, बासिंग, आकाबेडा व सोनपुर में पुलिस कैंपों को बिठाने के बाद स्थानीय जनता द्वारा सामना की जा रही तकलीफों के बारे में विस्तार रूप से चर्चा की. इस दौरान ग्रामीणों ने कहा है कि उनके गांव की ऐसी बर्बर हालत नहीं होनी चाहिए. इसलिए उन्होंने प्रस्तावित कच्चापाल कैंप को रद्द करने की मांग करते हुए ग्रामसभा में प्रस्ताव किया. इस ग्रामसभा में हजारों स्त्री–पुरुष शामिल हुए.

मेट्टानार ग्रामसभा ने कैंप का विरोध किया!

नारायणपुर जिले के मेट्टानार गांव में शासन–प्रशासन द्वारा विगत कई महीनों से पुलिस कैंप के निर्माण के लिए जोर–शोर से तैयारियां हो रही हैं. इस परिप्रेक्ष्य में 1 दिसंबर, 2021 को 6–7 पंचायतों की 1500 जनता ने पेसा कानून के

तहत ग्रामसभा का आयोजन किया. इसमें प्रस्तावित पुलिस कैंप को रद्द करने की मांग करते हुए प्रस्ताव पारित किया गया. इस मौके पर जनता द्वारा 'कैंप बंद करो', 'हमारी रीतिरिवाज–सांस्कृति व पारंपरिक विरासत को बचाएंगे', 'रोड–पुलिया हमें नहीं चाहिए' आदि नारें जोर–शोर से उठाए गए. इस दौरान मूलभूत सुविधाओं की मांगें भी उठायी गई. ❍

सुरजागढ़ में खदानों के खिलाफ लगातार जारी है आंदोलन!

गढ़चिरोली जिले के एटापल्ली तहसील के सुरजागढ़ के अलावा 25 खदानों को लायड, मिट्टल जैसे बड़े पूंजीपतियों को 50 वर्ष के लिए लीज पर दिया गया. पेसा कानून के तहत गठित ग्रामसभाओं की अनुमति के बिना सरकार ने यह कदम उठाया. इसका जनता ने कड़ा विरोध किया और कई आंदोलन किए. इन आंदोलनों का दमन की भागीदारी से आम सभाओं का आयोजन किया गया. 25 अक्टूबर को एटापल्ली में बड़ी रैली करके 26 अक्टूबर से बेमियादी आंदोलन शुरू कर दिया. चार दिन लगातार यह आंदोलन जारी रहने के बाद शासन–प्रशासन ने हथियारों के बल बूते इस आंदोलन का दमन किया. 29 अक्टूबर की सुबह 5.30 बजे को पुलिस बल अचानक धरना शिविर पर

करते हुए यहां खनन भी शुरू किया गया. इसके बाद भी सुरजागढ़ खदान के विरोध में जनता आंदोलनरत है.

उत्खनन के लिए उपयोग किए जा रहे विस्फोटकों की वजह से सुरजागढ़ पहाड़ परिसर के सुरजागढ़, बांडे, मलमपाड़ी, हेडरी, मांगेर, नैडेर, गुंडनुर, मोहंदी, पुरसलगोंदी, गर्दवाडा सहित करीब 50 किमी दूरी पर बसे गांव प्रभावित होंगे. इसके फलस्वरूप खदानों के परिसर के सैकड़ों गांवों पर अब विस्थापित होने का खतरा मंडराने लगा है.

इस सच्चाई को छिपाते हुए सरकार ने 10 हजार लोगों को रोजगार मिलने की झूठी बातें कहते हुए पूंजीपतियों को फायदा पहुंचाने के लिए जनता का विनाश करने पर तुली हुई है. दलालों द्वारा यह भी झूठा प्रचार किया जा रहा है कि माओवादियों को कमीशन के तौर पर 7 करोड़ रुपए दिए गए, जिससे वे उत्खनन का विरोध नहीं करेंगे.

विस्फोट के लिए अनुमोदन देने के लिए ग्रामसभाओं पर पुलिस प्रशासन द्वारा दबाव बढ़ाया जा रहा है. इस पृष्ठभूमि में सुरजागढ़ लौह खदान सहित तमाम 25 खदानों को तुरंत बंद और रद्द करने की मांग को लेकर भामरागढ़ व एटापल्ली तहसील के करीब 198 गांवों की जनता फिर एक बार एकजुट हो गई. 21 अक्टूबर, 2021 को सुरजागढ़, भामरागढ़, इरपानार, मोरखंडी में बड़ी तादाद की जनता हमला करके लाठीचार्ज करते हुए आंदोलनकारियों को खदेड़ा और इस आंदोलन का नेतृत्व करने वाले चार लोगों को गिरफ्तार किया. पुलिस की इस दमनकारी नीति के विरोध में 30 अक्टूबर को और एक बार आंदोलनकारियों ने बड़ी सभा का आयोजन किया. इसके बाद भी आंदोलन जारी है. पुलिस का दमन भी बढ़ रहा है. इस आंदोलन में शामिल कई लोगों को पुलिस लगातार गिरफ्तारियां कर रही है. लेकिन दमन प्रतिरोध को और बढ़ाएगा, यह सच्चाई और एक बार साबित होगी.

दिल्ली में नगरनार श्रमिकों का धरना

केंद्र सरकार द्वारा लिए गए नगरनार स्टील प्लांट के डी–मर्जर व विनिवेशीकरण के विरोध में बस्तरवासियों द्वारा लगातार आंदोलन जारी है. इस मुद्दे को लेकर 17–18 नवंबर, 2021 को श्रमिकों ने दिल्ली के जंतर–मंतर में दो दिवसीय धरना प्रदर्शन किया. इस आंदोलन में एनएमडीसी के विभिन्न संयंत्र व खदानों के श्रमिक बड़ी संख्या में शामिल हुए. प्रभावित गांवों के सरपंच भी इसमें शामिल हुए.

नरसंहारों के दोषियों को सजा देने की मांग पर आंदोलन!

एडसमेट्टा नरसंहार के खिलाफ जनसभा

ज्ञात है कि 17 मई, 2013 को एडसमेट्टा गांव में विज्जा पंडुम (बीज का त्योहार) मना रही जनता पर की गई अंधाधुंध गोलीबारी में चार बच्चों सहित 8 लोग मारे गए और पांच लोग घायल हुए. इस नरसंहार के विरोध में उभरे जबर्दस्त विरोध के चलते सरकार को इसकी जांच करवानी पड़ी. वीके अग्रवाल कमेटी ने इसकी जांच पूरा करके सरकार को रिपोर्ट सौंपी. इस रिपोर्ट में पुलिस द्वारा आम जनता के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी करने की बात स्पष्ट रूप से कही गई. लेकिन सरकार की ओर से अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी. इसके विरोध में एडसमेट्टा में 7–8 अक्टूबर, 2021 को दो दिवसीय सभा व अन्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसमें दूर–दूर गांवों से आए पांच हजार से अधिक लोगों जिनमें महिलाओं की तादाद दो हजार से अधिक थी, ने भाग लिया. इस मौके पर 7 अक्टूबर को एडसमेट्टा शहीदों का स्मारक के पास बड़े पैमाने पर महिला, पुरुष, बाल–बच्चे और बुजुर्ग ने भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की. उन्होंने एडसमेट्टा नरसंहार के दोषी पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों को सजा देने हर एक मृतक परिवार के लिए एक करोड़ और प्रत्येक घायल व्यक्ति को 50 लाख रुपए की मुआवजा देने की मांग उठायी.

गोंपाड नरसंहार के विरोध में

विदित हो कि 1 अक्टूबर, 2009 को सुकमा जिले के गोमपाड़ गांव का कोबरा बटालियन के जवानों ने घेराव करके अंधाधुंध गोलीबारी की थी. इसमें सात ग्रामीणों की मौतें हुईं. बाद में पुलिस बलों द्वारा बेशर्मी से इसे मुठभेड़ का नाम दिया गया. यह नरसंहार ने ग्रामीणों में बेहद दहशत फैलायी. इसके चलते इस घटना के तुरंत बाद लगभग 21 परिवारों के लोगों ने गांव छोड़ कर पलायन कर दिया. अभी तक वे नहीं लौटे. पुलिस के इस घृणित अपराध के खिलाफ प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता हिमांशु कुमार ने कानूनन संघर्ष भी किया. इसके बावजूद अपराधियों को कोई सजा नहीं मिली. हाल ही में सरकेनगुडा, एडसमेटा जैसे नरसंहारों पर की गई न्यायिक जांच में पुलिस का अपराध साबित हुआ. इस परिप्रेक्ष्य में विगत में हुए सभी नरसंहारों के अपराधियों को सजा देने की मांग पर जनता आंदोलनरत हो रही है. इस तरह गोमपाड में भी अक्टूबर महीने से जनता लगातार आंदोलन कर रही है. इस दौरान लगातार रैलियों व आमसभाओं का आयोजन हो रहा है.

सिंगारम नरसंहार के विरोध में

सुकमा जिले के सिंगाराम में 8 जनवरी, 2009 को पुलिस सशस्त्र बलों द्वारा किए गए एक नरसंहार में 19 लोगों की मौत हुई. मृतकों में चार महिलाएं और 7 नाबालिग शामिल थे. मारने के पहले महिलाओं के साथ सामूहिक

बलात्कार भी किया गया. इस निर्मम हत्याकांड के बारे में कोई जांच नहीं की गई और न ही कोई चार्जशीट तैयार किया गया.

उक्त हत्याकांड में शामिल दोषी पुलिस बलों को कड़ी सजा देने और मृतकों को एक करोड़ और घायलों को 50 लाख रुपए की मुआवजा देने की मांग करते हुए नरसंहार विरोधी कमेटी के बैनर तले हजारों लोग सिंगारम गांव में 5 दिसंबर, 2021 से आंदोलन कर रहे हैं. आंदोलनकारियों ने स्पष्ट किया है कि जब तक उनकी मांगें पूरी नहीं होंगी तब तक उनका आंदोलन जारी रहेगा. इस आंदोलन में सिंगारम ग्रामीण के अलावा कोंटा विकासखंड के पालाचलमा, बुर्कलंका, गंगलेर, कोरसागुड़ा, बट्टेगुडा आदि गांवों से लोग बड़े पैमाने पर शामिल हो रहे हैं.

जोश–खरोश के साथ मनायी गई पीएलजीए की 21वीं वर्षगांठ!

क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए वर्ग संघर्ष/गोरिल्ला युद्ध को तेज व विस्तार करेंगे!

प्रतिक्रांतिकारी समाधान प्रहार अभियान को हराएंगे!

सीएमसी का आह्वान

दिसंबर 2, भारत के क्रांतिकारी इतिहास में एक यादगार दिन है. हम सब जानते हैं कि हमारी पार्टी के संस्थापक नेता, महान शिक्षक और भारत की क्रांति के निर्माता, अमर शहीद कॉमरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी के दिशा निर्देशन में, अमर शहीद कॉमरेड्स श्याम, महेश, मुरली की शहादत की प्रेरणा लेकर 21 साल पहले हमारी पीएलजीए का गठन हुआ. साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद, सामंतवाद की लूट और उत्पीडन से देश को मुक्त करके समाजवाद, अंत में साम्यवाद लाने के लक्ष्य से गठित हमारी पीएलजीए को दिसंबर 2 तक 21 साल पूरे हो गए. इस अवसर पर सभी पार्टी कमेटियों, कमांडों, पार्टी सदस्यों, पीएलजीए कमांडरों, योद्धाओं, क्रांतिकारी जनताना सरकारों व मिलिशिया और क्रांतिकारी जनता का सेंट्रल मिलिटरी कमिशन द्वारा क्रांतिकारी अभिवादन पेश किया गया है.

इस दौरान समाधान–प्रहार हमले को हराने हेतु वीरतापूर्वक हमलों को सफल बनाने में शहीद हुए पार्टी, पीएलजीए के वीर योद्धाओं, पिछले सालभर में मुठभेड़ों, झूठी मुठभेडों में, गद्दारी के कारण, दुर्घटनाओं, जेलों में, बीमारियों से और अलग–अलग कारणों से अपने जीवन को कुरबान किये सभी कॉमरेडों को सीएमसी सिर झुकाकर श्रद्धांजलि अर्पित की है.

इस मौके पर सीएमसी ने सभी पार्टी कतारों, पीएलजीए इकाइयों व क्रांतिकारी जनताना सरकारों, जनसंगठनों और क्रांतिकारी जनता का आह्वान किया है कि 2 से 8 दिसंबर तक देशभर के आंदोलन के इलाकों के गांवों और शहरों में पीएलजीए की 21वीं वर्षगांठ को जोश–खरोश के साथ बड़े पैमाने पर मनाए और इस अवसर पर नवजवान महिला–पुरुषों को बड़े पैमाने पर पीएलजीए में भर्ती करे. केंद्र–राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे प्रतिक्रांतिकारी 'समाधान–प्रहार' रणनीतिक हमलों से पार्टी और पीएलजीए को बचा कर और मजबूत करने के लक्ष्य से पिछले सालभर से चल रहे पार्टी, पीएलजीए के संगठितीकरण अभियान की समीक्षा कर नये कर्तव्यों को बनाकर विभिन्न राज्यों की परिस्थिति के अनुसार दिसंबर महीने भर क्रांतिकारी प्रचार, प्रतिरोध और संगठितीकरण कार्यों को समन्वय करते हुए इस पूरे अभियान को सक्षम तरीके से चलाएं.

प्रतिक्रांतिकारी 'समाधान–प्रहार' हमलों को हराने के लिए देशभर में विगत वर्ष चलाए गये राजनीतिक, सामरिक और सांगठनिक कार्य एवं नतीजों के बारे में सीएमसी द्वारा कैडर को अवगत किया गया.

दिसंबर, 2020 से सितंबर, 2021 तक के बीते दस महीनों में हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए ने देशभर में विभिन्न गोरिल्ला जोनों, लाल प्रतिरोध इलाकों में लगभग 350 गोरिल्ला कार्रवाईयों को अंजाम दिया है. इनमें से कुछ बड़ी, कुछ मंझोली और छोटी कारवाईयां हैं. इन कार्रवाईयों में पुलिस, सशस्त्र कमांडो बलों के 66 जवानों को खत्म कर 85 को घायल किया गया. इस दौरान 4 गोपनीय सैनिकों को खत्म किया गया. दुश्मन से 15 आधुनिक हथियार, हजारों कारतूस और अलग–अलग साजो सामान जब्त किया गया. लगभग 30 पुलिस मुखबिरों, 10 जनविरोधियों का सफाया किया गया. कई जगहों पर सरकारी संपत्ति, दलाल नौकरशाही पूंजिपतियों की संपत्ती को ध्वस्त किया गया. लगभग 65 मुठभेड़ों में सशस्त्र कमांडो बलों का हमारी पीएलजीए ने डटकर मुकाबला किया.

दंडकारण्य में जनवरी 2021 से जून तक चलाए गये टीसीओसी में पीएलजीए ने 54 पुलिस, अर्धसैनिक बल और कमांडो बलों का सफाया करके 69 को घायल कर, 15 हथियारों को जब्ता किया. इनमें जीरागुडेम, कडियानार बड़ी कार्रवाइयां हैं. बाकी छोटी और मंझोली हैं. दिसंबर 2020 में, अप्रैल से अगस्त 2021 तक संचालित प्रतिरोध अभियान सफल हुआ है. इसमें पीएलजीए बलों ने और कुछ पुलिस बलों को खत्म किया और घायल भी किया.

वर्ग संघर्ष को तेज व विस्तार करने प्रतिक्रांतिकारी समाधान प्रहार अभियान को हराने का आह्वान देते हुए सीएमसी ने कहा है कि क्रांतिकारी आंदोलन को खत्म करने के लिए केंद्र–राज्य सरकारों द्वारा शुरू किए गए प्रतिक्रांतिकारी समाधान बहुमुखी अभियान के अंतर्गत जनवरी 2020 से प्रहार हमला–1, नवंबर 2020 से जून 2021 तक 10 दांव–पेंचों के साथ निर्णयात्मक प्रहार–2 हमला चलाया गया. इन हमलों को पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए और जनता मुंहतोड़ जवाब देते आ रही है. प्रहार–2 अभियान का देशभर में बड़े पैमाने पर हमारी पीएलजीए और जनता

के द्वारा दृढ़ता के साथ प्रतिरोध करने के कारण जून 2021 तक क्रांतिकारी आंदोलन का निर्मूलन करने के दुश्मन की दुष्ट योजना साकार नहीं हुई. इस स्थिति में केंद्र–राज्य सरकारों ने पिछले 8 महीनों से (नवंबर 2020 से जून 2021 तक) से जारी प्रहार अभियान की 26 सितंबर, 2021 को दिल्ली में अमितशाह के नेतृत्व में समीक्षा कर नीचे दिये गए विषयों को जोड़ा गया.

1. पार्टी के आर्थिक स्रोतों को पूरी तरह नष्ट करना.

2. क्रांतिकारी जन संगठनों के कामकाज को पूरी तरह रोकने के लिए उन संगठनों के कार्यकताओं व नेताओं पर केस लगाकर सजा दिलवाना, आंदोलन के इलाकों की प्राकृतिक संपदाओं को साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीपति वर्ग की कंपनियों को सौंपने के लिए विकास के नाम पर सड़क, रेल, टेलिफोन, बैंक, बिजली, डाकघर जैसी सुविधाओं को बढ़ाना, राज्य स्तर पर मुख्यमंत्रियों द्वारा हर तीन महीने में एक बार समीक्षा करके निचले स्तर के राज्ययंत्र के कामकाज में तेजी लाना, राज्यों के बीच में तथा केंद्र और राज्यों के बीच में समन्वय को और बढ़ाने एवं राज्यों की खुफिया व्यवस्थाओं को मजबूत करना आदि फैसले लिए गए हैं.

प्रहार हमलों में बनाये गए 10 दांव–पेंचों को लागू करते हुए और भी आधुनिक व उन्नत हथियारों और प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए फासीवादी तरीके से देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन पर हमले तेज करके 2022 तक क्रांतिकारी आंदोलन का उन्मूलन करने की क्रूर योजना बनायी गयी.

इस योजना के अंतर्गत कार्पेट–सेक्युरिटी व्यवस्था को और विस्तार कर, खुफिया व्यवस्था को और मजबूत कर, केंद्रीय व राज्य कमेटियों के सदस्यों को नुकसान पहुंचाना, पार्टी, पीएलजीए बलों का बड़े पैमाने पर उन्मूलन करना, स्थानीय नेतृत्व को नष्ट करना, देश भर में खुले व कानूनी जन संगठनों पर हमलें तेज करना प्रस्तावित है.

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर दुश्मन के हमलों को हराते हुए भारत की क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए आगामी समय में राजनीतिक, सामरिक व सांगठनिक क्षेत्रों में हमें उपयुक्त दांव–पेंचों को अपनाकर काम करना चाहिए.

हमारी पार्टी की 15वीं वर्षगांठ के अवसर पर केंद्रीय कमेटी द्वारा दिए गए पार्टी संगठितीकरण अभियान को देशभर में पूरा करने के कर्तव्य को महत्व देना चाहिए. पार्टी को दुश्मन के लिए अभेद्य, मजबूत, गुप्त पार्टी के रूप में तब्दील करना चाहिए.

सीएमसी द्वारा विभिन्न तबकों की जनता का आह्वान किया गया है कि देश के अंदर साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद, सामंतवादी लूट और उत्पीड़न को खत्म करके नवजनवादी भारत का निर्माण करने, फासीवादी ताकतों से देश को बचाने व्यापक पैमाने पर गोलबंद होकर एकजुट–संगठित होने और जुझारू संघर्ष करने, बड़े पैमाने पर पीएलजीए में भर्ती होवें!

मजदूर वर्ग को चाहिए कि वह साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवादी शोषण व उत्पीड़न को बढ़ाने वाले नए मजदूर कानूनो को रद्द करने के लिए लड़ते हुए ही नवजनवादी समाज जिसमें मजदूर वर्ग पर शोषण–उत्पीड़न न हो, के निर्माण के लिए जारी संघर्ष में शामिल होवें.

किसानों का आह्वान किया है कि वे साम्राज्यवादीपरस्त, सीबीबी अनुकूल, देशद्रोही, किसान विरोधी तीन कृषि कानूनों के खिलाफ जारी किसान आंदोलन की सभी मांगों को पूरी करने तक आंदोलन को जारी रखें. कारपोरेट खेती के विरोध में, अपनी जमीनों को बचाने के लिए सशस्त्र किसान संघर्षों के लिए तैयार होवें.

चाहे मोदी सरकार द्वारा बनाए गए नए मजदूर कानून हों, नए कृषि कानून हों, या अन्य कोई कानून या नीतियां हो, वे सभी साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजिपतियों और सामंती वर्गों के हितों की पूर्ति करने वाली ही हैं. भारत की व्यापक जनता को शोषण व उत्पीड़न का शिकार बनाने वाली ही हैं. इसलिए समस्त उत्पीड़ित जनता एक होकर मोदी सरकार के खिलाफ संघर्षों को तेज करें.

नयी शिक्षा नीति के नाम पर गरीब, दलित, आदिवासी, धार्मिक अल्पसंख्यक लोगों को शिक्षा से दूर रखने की ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी मोदी सरकार की षड़यंत्रकारी नीतियों के खिलाफ संघर्ष करते हुए, वैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली एवं सामाजिक बदलाव के लिए जारी आंदोलन में शामिल होने छात्रों का आह्वान किया गया है.

देशभर की उत्पीड़ित जनता, उत्पीड़ित सामाजिक तबकों पर हिंदुत्व फासीवादी ताकतों के हमले बढ़ रहे हैं. इसलिए इन फासीवादी हमलों के खिलाफ दलित, आदिवासी, धार्मिक अल्पसंख्यक समूदायों को एकजुट होकर मिलिटेंट आंदोलन चलाना चाहिए.

साम्राज्यवादी एवं दलाल नौकरशाही पूंजीपति कंपनियां केंद्र–राज्य सरकारों के साथ समझौते कर प्राकृतिक संपदाओं को लूटकर ले जाने के कारण लाखों आदिवासी और किसान जनता विस्थापित हो रही है. पर्यावरण को बहुत नुकसान हो रहा है. इसलिए विस्थापन के शिकार जनता को चाहिए कि वह अपने जंगलों, गांवों, जमीनों और प्राकृतिक संपदाओं को बचाने के लिए हथियारबद्ध संघर्ष के लिए तैयार होवें.

दुनिया भर में साम्राज्यवादी ताकतों और दलाल पूंजिपतियों द्वारा प्रकृतिविरोधी, पर्यावरणविरोधी विध्वंसकारी नीतियों के विरोध में पर्यावरण की परिरक्षा के लिए देश भर

पीएलजीए प्रतिरोध

गलगम–नडमपाड के बीच में पीएलजीए की कार्रवाई

कॉर्पेट सेक्युरिटी का विस्तर करने, नंबीधारा में पर्यटक केंद्र विकसित करने, आवापल्ली–तेलंगाना के रोड का पुनरनिर्माण और वहां निर्मित पुलिया की रक्षा के मकसद से दक्षिण बस्तर डिविजन, पामेड गांव के गलगम गांव में 26 फरवरी, 2021 को नया पुलिस कैंप लगाया गया. इसके बाद आस–पास के गांवों पर पुलिस हमलें बढ़ गए. जनता पर जुल्म बरपाने वाले पुलिस बलों को सबक सिखाने के लिए 13 जुलाई, 2021 को गलगम–नडमपाड के बीच में पुलिया निर्माण की सुरक्षा के लिए तैनात दुश्मन बलों पर पीएलजीए ने हमला किया. 40 मिनट तक जारी इस हमले में पुलिस के 5 जवान मारे गए और 7 जवान घायल हुए. हालांकि पुलिस ने अपने नुकसान को छिपाते हुए एक ही जवान घायल होने की बात कही. चिंताजनक बात यह है कि इस घटना में पीएलजीए के लापरवाही व्यवहार की वजह से एक ग्रामीण गंभीर रूप से घायल हुआ.

दो जवानों का खात्मा

15 अप्रैल, 2021 को दक्षिण बस्तर डिविजन, कोंटा एरिया, भेज्जी थाने के नजदीक एक प्रधान आरक्षक सहित पुलिस के दो जवानों को पीएलजीए ने खतम किया. थाने के नजदीक की गई इस कार्रवाई ने दुश्मन में दहशत पैदा की और जनता का विश्वास बढ़ाया.

सहायक आरक्षक का खात्मा

25 नवंबर, 2021 को भैरमगढ़ थाने में पदस्थ सहायक आरक्षक को पीएलजीए सदस्यों ने खतम कर दिया है.

एक जवान मारा गया

2 सितंबर, 2021 को दक्षिण बस्तर डिविजन, पामेड एरिया, तोंगुडेम–तिप्पुरम के बीच में मिलिशिया द्वारा लगाए गए बूबीट्रैप के विस्फोट होने की वजह से डोंडेर पुलिस कैंप का एक जवान मारा गया.

एक जवान की मौत और दो जवान घायल

25 सितंबर, 2021 को दक्षिण बस्तर डिविजन के धर्माराम कैंप के नजदीक मिलिशिया द्वारा किए गए माईन विस्फोट में पुलिस के एक जवान की मौत हुई और दो जवान घायल हुए.

एक जवान घायल

अक्टूबर, 2021 को माड़ डिविजन के अंतर्गत कोहकामेटा पुलिस कैंप के नजदीक पीएलजीए की एक छोटी टीम द्वारा की गई फायरिंग में आईटीबीपी का एक जवान गंभीर रूप से घायल हुआ.

ग्रेहउंड्स एएसआई घायल

15 दिसंबर, 2021 को तेलंगाना राज्य, चरला मंडल, बत्तेनापल्ली–एर्रामपाडु गांवों के बीच में पीएलजीए बलों द्वारा किए गए लैंड मैन विस्फोट में ग्रेहउंड्स का एएसआई कृष्णाप्रसाद घायल हुआ है.

एक जवान घायल

21 दिसंबर, 2021 को पूर्व बस्तर डिविजन, बोदली गांव के पास एसटीएफ–डीआरजी जवानों पर पीएलजीए द्वारा किए गए विस्फोट में एसटीएफ का एक जवान घायल हुआ है.

एक जवान घायल

31 दिसंबर, 2021 को दक्षिण बस्तर डिविजन, किष्टारम एरिया, पालाचलमा गांव के पास पीएलजीए बलों और पुलिस बलों के बीच में हुई एक मुठभेड़ में कोबरा का एक जवान घायल हुआ.

में समूची भारत की उत्पीड़ित जनता को व्यापक आंदोलन अपनाना चाहिए.

देश के सभी उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित सामाजिक तबकों, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं की जनता को चाहिए कि वे ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी ताकतों द्वारा बनाये जाने वाले नया भारत के विरोध में नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने आगे आएं.

सीएमसी के आह्वान के मुताबिक 2 से 8 दिसंबर तक दंडकारण्य के गांव–गांव में जोश–खरोश के साथ पीएलजीए की 21वीं वर्षगांठ मनायी गई. सीएमसी के संदेश को पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जनताना सरकार, क्रांतिकारी जन संगठनों की सभी स्तरीय कतारों व क्रांतिकारी जनता तक पहुंचाया गया. इस मौके पर सभा, जुलूस व क्रांतिकारी सांस्कृतिक प्रदर्शनों का आयोजन किया गया. युवती–युवकों को पीएलजीए में भर्ती की गई. ❍

मुठभेड़ों के नाम पर निर्मम हत्याएं!

झूठी मुठभेड़ में तीन लोगों की हत्या

15 जुलाई, 2021 को बीजापुर जिले के नीलाम गांव में कामरेड्स ककेम बिडजू, ककेम जग्गू और तेलम सुदरू

ककेम बिडजू | ककेम जग्गू | तेलम सुदरू

को पुलिस बलों ने पकड़ कर बेरहमी से यातनाएं देकर उनकी हत्या की. ये तीनों लोग बीजापुर जिला, भैरमगढ़ एरिया तमोडी गांव वासी थे.

कामरेड ककेम बिडजू मिलिशिया कमांडर थे, कामरेड ककेम जग्गू कृषि शाखा में कार्यरत थे और तेलाम सुदरू डॉक्टर शाख के अध्यक्ष थे. इन तीनों कामरेड पूर्णकालीन कार्यकर्ता नहीं थे. वे अपने–अपने घरों में साधारण जिंदगी बिताते हुए क्रांति के लिए अपना योगदान दे रहे थे. 28 जुलाई से 3 अगस्त तक आयोजित होने वाले शहीद स्मारक सप्ताह के दौरान जब वे गांव–गांव में प्रचार करने गए थे तब पुलिस ने पकड़ कर उनकी निर्मम हत्या की.

पुलिस द्वारा की गई इन हत्याओं के खिलाफ ग्रामीण ने आंदोलन किया.

गोंपाड में झूठी मुठभेड़

दक्षिण बस्तर डिविजन के कोंटा ब्लॉक के गोंपाड़ गांव पर 24 अगस्त, 2021 की अलसुबह 3 बजे डीआरजी, सीआरपीएफ, कोबरा की संयुक्त टीम ने हमला किया. इस दौरान गांव के एक घर में सो रहे जन मिलिशिया के दो निहत्थे साथियों कोवासी उंगा और सोयम बाजार (मंगेश) को पकड़ कर अमानवीय यातनांए देकर बंडा पंचायत के कन्हाईगुडा के पास गोलीमार कर उनकी हत्या की गई. 27 वर्षीय कोवासी उंगा बटेरव गांववासी थे और 26 वर्षीय सोयाम बजार गोंपाड गांववासी थे. पकड़ जाने के वक्त कामरेड मंगेश गंभीर बीमारी की हालत में थे और जड़ी–बुटी का इलाज करवा रहे थे.

तीन महिला कामरेडों की पुलिस द्वारा निर्मम हत्या

दरभा डिविजन कटेकल्याण एरिया आदूम गांव में 31 अक्टूबर, 2021 को जब कामरेड्स गीता, कोसी व ज्योति ने पनाह ली थी, पुलिस ने उन्हें पकड़ कर क्रूर यातनाएं देकर उनकी हत्या की. अपनी निर्मम हत्याओं को पुलिस ने

कामरेड गीता | कामरेड ज्योति | कामरेड कोसी

हमेशा की तरह बेशर्मी से मुठभेड़ का नाम दिया.

कामरेड गीता सुकमा जिला, छिंदगढ़ ब्लॉक, कांगेरघाटी एरिया, मुंडवालपारा गांव वासी थी. 2009 से वह क्रांतिकारी आंदोलन में कार्यरत थी. शहादत के वक्त वह दरभा डिविजन की डीएकेएमएस अध्यक्षा की जिम्मेदारी निभा रही थीं.

कामरेड ज्योति दरभा डिविजन मलिंगेर एरिया के रेवाल गांव वासी थीं. 2010 से वह पीएलजीए में कार्यरत थीं. शहादत के वक्त कटेकल्याण एरिया के चेतना नाट्य मंच की अध्यक्षा व डिविजन सीएनएम कमेटी की सदस्या के रूप में वह अपना दायित्व निभा रही थीं.

कामरेड कोसी सुकमा जिला, दरभा डिविजन, मलिंगेर एरिया के मुरकी गांव में पैदा हुई थीं. 2013 से वह क्रांतिकारी आंदोलन में डटी रही थीं. कटेकल्याण एरिया की केएएमएस कमेटी की सदस्या के रूप में अपनी भूमिका निभाते हुए उन्होंने आखिरी सांस ली.

कामरेड रामसू की हत्या

5 नवंबर, 2021 को दंतेवाडा जिले के ग्राम पंचायत कावुरनार के वेंगुरपारा में डीआरजी और एसटीएफ गुंडों ने एक झूठी मुठभेड़ को अंजाम दिया है. उस दिन जब कामरेड रामसू कुछ काम के लिए सादा कपड़े में और निहत्थे वेंगुरपारा गांव गए थे, उन गुंडों ने उन्हें पकड़ कर बेरहमी से उनकी यातनाएं दीं. उन गुंडों ने इतनी अमानवीयता दिखाई कि कामरेड रामसू के पैरों व चेहरे को काट दिया. बाद में उनकी हत्या की. पुलिस बलों ने अपनी निर्मम हत्या को बेशर्मी से मुठभेड़ का नाम दिया.

कामरेड रामसू के घर का नाम लुदरू कोवाची. उनका जन्म कोंडागांव जिला, पूर्व बस्तर डिविजन, तुमरिवाल गांव के कोटमेट्टा टोले में हुआ था. दिसंबर 2008 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. शहादत के समय वे पीएल–16 के पीपीसीएम थे और सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी निभा रहे थे. ❍

झूठी मुठभेड़ में भीमा की हत्या

26 नवंबर, 2021 को पुलिस द्वारा यह दावा किया गया कि चिंतागुफा थाना क्षेत्र के ताड़मेटला इलाके में माओवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में इनामी माओवादी माडवी भीमा मारा गया और घटनास्थल में भरमार बंदूक समेत विस्फोटक सामग्री बरामद की गई. सुकमा एसपी सुनील शर्मा का कहना था कि माडवी भीमा उर्फ बास्ता एक दुर्दांत नक्सली थी, जो पूर्व में घटित 11 बड़ी नक्सल घटनाओं में शामिल था.

भीमा की हत्या के खिलाफ संघर्षरत जनता

लेकिन बाद में पता चला की पुलिस का यह दावा सरासर गलत है और पुलिस द्वारा हमेशा की तरह और एक झूठी कहानी गढ़ी गई है.

इस झूठी मुठभेड़ के खिलाफ संघर्षरत हो गए ग्रामीणों के मुताबिक माडवी भीमा एक साधारण ग्रामीण था. घर में उसकी पत्नी और बच्चे हैं. उसके दो बच्चे स्कूल में पढ़ रहे हैं. जब माडवी भीमा घर में था, पुलिस के जवान मोटरसाइकिल से सादे कपड़े में आए हैं. जवानों ने उसकी पत्नी से पूछा कि भीमा कहां है? उसकी पत्नी ने बताया तो जवान भीमा को पकड़ कर ले गए. जब पुलिस जवान उसे पकड़ कर ले जा रहे थे, तब उसकी पत्नी सहित ग्रामीणों ने उनका पीछा किया. उस वक्त पुलिस ने सुबह थाने में आने को बताते उन्हें खदेड़ा. कुछ देर बाद पुलिस ने भीमा को पेड़ से बांधकर अंधाधुंध गोली मार कर उसकी निर्मम हत्या की. इस घटना के विरोध में सैकड़ों ग्रामीणों ने आंदोलन करके दोषी जवानों को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग की. इस दौरान ग्रामीणों ने यह भी बताया कि अगर भीमा नक्सली होता तो पकड़कर गिरफ्तार करते, सरेंडर करवाते या जेल भेज देते ऐसा न करके उसे गोली मारकर हत्या करना अपराध है.

❍

गोंवों पर लगातार बढ़ रहे पुलिस हमलें!

नाबालिग लड़की से अत्याचार

कांकेर जिले के भानुप्रतापुर क्षेत्र के भीरागांव में छत्तीसगढ़ आर्म्ड फोर्स की 22वीं बटालियन के जवानों द्वारा अक्टूबर 2021 में घोटियां गांव की नाबालिग से दुष्कर्म किया गया. इस घटना पर आक्रोशित जनता वहां से पुलिस कैंप को हटाने की मांग कर रही है. पुलिस एफआईआर में गलत तारीख लिख कर सबूतों के साथ छेड़छाड़ करने की कोशिश कर रही है.

'पूना नर्कोम' नाम पर ग्रामीणों को दिखाया जा रहा है 'नरक'

कोंटा एरिया कमेटी के अंतर्गत कई गांवों पर 10 सितंबर से 3 अक्टूबर तक पूना नर्कोम (नयी सुबह) नाम पर पुलिस बलों ने एक बड़ा ऑपरेशन चलाया. इस दौरान पुलिस द्वारा कई गांवों पर हमलें किए गए. कई निर्दोष लोगों को गिरफ्तार किया गया. कई लोगों के साथ बेदम पिटाई की गई. कुछ लोगों का जबरन आत्मसमर्पण करवाया गया. शहीदों के स्मारकों को ध्वस्त किया गया. घरों में घुस कर जनता के धन–माल लूट ली गई. कुछ घरों को तोड़–फोड़ कर दिया गया. इस तरह गांवों में आतंक मचाने वाली पुलिस ने ऑपरेशन में बड़ी सफलता मिलने का दावा बेशर्मी से किया.

गांवों पर हमलें और निर्दोषियों की गिरफ्तारी

4 अक्टूबर, 2021 को पश्चिम बस्तर डिविजन के भैरमगढ़ एरिया के तोयनार गांव पर हमला करने वाले पुलिस बलों ने ग्रामीणों के साथ मारपीट करके मुन्ना कडती नामक ग्रामीण को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया है. 5 अक्टूबर, 2021 को तुगाली गांव में घुस कर तीन ग्रामीणों के साथ बेदम मारपीट करके बुधराम नामक ग्रामीण को जेल में डाल दिया. इस तरह अक्सर दिन–रात गांवों पर हमला करके पुलिस दहशत फैला रही है. ❍

नगालैंड में और एक नरसंहार व जनता का प्रतिरोध!

पूर्वोत्तर क्षेत्र में सेना व सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा जारी हत्याकांड व अत्याचारों की खबरें अक्सर आती हैं. नगालैंड में 5 दिसंबर, 2021 को और एक बार सेना ने आम जनता पर कहर बरपाया. जब कोयला खदान के मजदूर पिकअप ट्रक में मोन जिले की तिरु–ओटिंग सड़क पर जा रहे थे, सेना उस वाहन पर अंधाधुंध गोलीबारी की, जिसमें छह मजदूरों की मौत हुई. जब ये मजदूर अपने घर नहीं लौटे थे, स्थानीय लोगों ने प्रशासन को सूचित किया और करीब तीन घंटे खुद ही तलाशी अभियान शुरू किया. खाली पिकअप ट्रक पर गोलियों के निशान देख कर जवानों के तीन वाहनों की तलाश की, तब जाकर नरसंहार का खुलासा हुआ.

इससे आक्रोशित जनता ने तलवार और डंडें लेकर सेना पर हमला किया और सेना की दो गाड़ियों को आग के हवाले कर दिया. जनता के प्रतिरोध का सहन न कर सकने वाली सेना ने आंदोलनकारियों पर और एक बार अंधाधुंध गोलीबारी की, जिसमें 8 लोगों की मौत हुई और 11 लोग घायल हुए. घायलों में दो लोगों की हालत बेहद नाजूक बन गई. स्थानीय लोगों का कहना है कि इन दोनों गोलीबारियों में 17 लोग मारे गए और दो लोग लापता हुए. सेना के अधिकारियों के मुताबिक जनता के प्रतिरोध में एक जवान मारा गया और कई जवान घायल हुए.

इसके बाद दोषी सैनिकों को कड़ी सजा देने की मांग को लेकर नगालैंड की जनता बड़े पैमाने पर आंदोलनरत हो गई. मृतकों के परिवार के सदस्यों ने जब तक न्याय

नरसंहार के खिलाफ जनता का प्रतिरोध

मिलेगा, तब तक अपनों की लाश लेने से इनकार कर दिया. यह आंदोलन पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में फैल गया. पूर्वोत्तर क्षेत्र में सशस्त्र बल विशेषधिकार अधिनियम (अफस्पा) को खत्म करने और सेना को हटाने की मांग को लेकर जनता जोर–शोर से आंदोलनरत हो गई. इन आंदोलनों के बारे में बाहरी दुनिया को जानकारी नहीं हो, इसके लिए सरकार ने इंटरनेट के अलावा पूरी समाचार व्यवस्था पर प्रतिबंध लगाया.

सरकारी सशस्त्र बलों के अत्याचारों और अफस्पा के खिलाफ लड़ रही पूर्वोत्तर क्षेत्र की जनता के समर्थन में हर किसी को आवाज उठानी चाहिए. भारत देश से अलग होने सहित उनकी तमाम राष्ट्रीयता आकांक्षाओं को ऊंचा उठाना चाहिए.

सहायक शिक्षकों का आंदोलन

छत्तीसगढ़ सहायक शिक्षक फेडरेशन के नेतृत्व में सहायक शिक्षक की वेतन विसंगति को दूर करने की एक सुत्रीय मांग को लेकर स्थानीय स्तर पर 11 दिसंबर, 2021 से धरना प्रदर्शन शुरू किया गया. स्थानीय स्तर पर धरना प्रदर्शन के बाद 13 दिसंबर को प्रदेशभर के हजारों सहायक शिक्षक राजधानी रायपुर के बुढ़ापारा धरनास्थल पर एकत्रित हो गए. उसके बाद उन्होंने विधानसभा को घेरने का प्रयास किया. लेकिन पुलिस ने बीच रास्ते में बैरिकेड लगाकर उन्हें रोक दिया. प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने लाठीचार्ज भी किया. सरकार के इस अड़ियल रवैये के खिलाफ सहायक शिक्षकों ने रायपुर में अनिश्चितकालीन हड़ताल शुरू की.

शासन–प्रशासन द्वारा विचार विमर्श कर समस्या का समाधान निकालने के बजाय आंदोलनकारियों को नोटिस दिया जा रहा है. गौरतलब है कि कई बार वेतन विसंगति के निदान की मांग को लेकर सहायक शिक्षकों द्वारा ज्ञापन सौंपा गया किंतु शासन–प्रशासन द्वारा कोई ध्यान नहीं

दिया गया जिससे आक्रोशित होकर सहायक शिक्षक आंदोलन कर रहे हैं.

इस दौरान फेडरेशन के सदस्यों ने कहा है कि विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस ने रेगुलर शिक्षाकर्मी की तरह सहायक शिक्षकों को भी वेतन देने की बात कही थी, लेकिन आज तक इस दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं किया गया है.

सहायक शिक्षकों द्वारा किए गए इस आंदोलन का प्रदेशभर में व्यापक समर्थन मिला. रेगुलर शिक्षक ने जगह–जगह शाला का बहिष्कार कर अपना समर्थन दिया.

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी के प्रवक्ता कामरेड अभय द्वारा दी गई प्रेस विज्ञप्ति

19 नवंबर, 2021

भाकपा (माओवादी) से कोबाड घैंडी के बहिष्कार पर

2019 में जेल से जमानत पर रिहा होने के बाद से अपने परिवार के साथ रहते हुए कोबाड घैंडी ने 'फ्राक्चर्ड् फ्रीडम ए प्रिजन मेमोयर' नामक किताब लिखकर 2021 में प्रकाशित किया है. इस किताब के जरिए यह स्पष्ट हो गया है कि उन्होंने मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद के सिद्धांत से पूरी तरह संबंध विच्छेद कर लिया है. जेल में रहते समय ही उन्होंने 2010 में इस किताब के प्रधान प्रस्तावनाओं को मेइन स्ट्रीम पत्रिका में ''क्वश्चन आफ फ्रीडम पीपुल्स एमान्सिपेशन'' शीर्षक से 6 लेख लिखे थे. उन लेखों ने मानवतावाद, आध्यात्मवाद को ऊंचा उठाते हुए विचारधारा के तौर पर बुर्जुआ सिद्धांत को प्रस्तुत किया. उनकी वर्तमान किताब 'फ्राक्चर्ड् फ्रीडम ए प्रिजन मेमोयर' द्वारा उनके विचार घनीभूत होकर और स्पष्ट तौर पर सामने आए हैं. तीहाड़ जेल में पेड़ों के नीचे बैठकर लंबे समय विचार करने वाले कोबाड अब यह कह रहे हैं कि अपने 40 साल के क्रांतिकारी जीवन के प्रतिफलन में दुनिया को बदलने के कार्य में सबसे पहले समाज में स्वेच्छा, अच्छे मूल्य, आनंद की जरूरत है और आनंद को हासिल करने के गोल पोस्ट के तौर पर हमारा व्यवहार जारी रहना चाहिए. नीति कथाओं का सारांश ग्रहण करने की भी बात कह रहे हैं. इस तरह आध्यात्म का रास्ता चुनने वाले कोबाड यह कह रहे हैं कि मार्क्सवादी व्यवहार में स्वेच्छा, अच्छे मूल्य व आनंद नहीं हैं और इसके फलस्वरूप मार्क्सवाद अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर सका. परंतु यहां असल बात यह है कि वे मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद की गलत व्याख्या कर रहे हैं. मार्क्सवाद यह कहता है कि वर्ग संघर्ष, उत्पादन, वैज्ञानिक शोध के जरिए ही समाज में सही विचार उत्पन्न होते हैं. कॉमरेड् मार्क्स ने अपनी पुस्तक पूंजी में लिखा – ''बाहरी दुनिया पर प्रतिचर्या करते हुए, उसे बदलने के जरिए वह उसी समय अपने स्वयं के चरित्र को ही बदलता है. वह अपने भीतर छुपी हुई शक्ति व क्षमताओं को विकसित कर, इन आंतरिक शक्तियों को अपने अधीन कर लेता है.'' दुनिया में बदलाव के लिए क्रांतिकारी प्रतिचर्या के बिना मनुष्य में भी बदलाव की आशा नहीं कर सकते हैं. आध्यात्मिक विचार एवं मार्ग सामंती, बुर्जुआई भाववादी विचारधारा से संबंधित सोच–विचार के सिवाय और कुछ नहीं. उनका मार्क्सवाद जोकि अत्यंत वैज्ञानिक, दार्शनिक व चिंतनयुक्त है, से कोई नाता नहीं है. द्वंद्वात्मक व ऐतिहासिक भौतिकवाद, मार्क्सवाद के बुनियादी उसूलों व वर्ग संघर्ष को छोड़कर भाववादी विचारों के साथ समाज में आनंद को हासिल करने के आध्यात्म के रास्ते को कोबाड ने चुना है.

50 साल से भी अधिक समय से नक्सलबाड़ी की राजनीति का अनुसारण करते हुए पूर्व की सीपीआई(एम–एल)(पीपुल्सवार) की केंद्रीय कमेटी के सदस्य, महाराष्ट्र राज्य कमेटी के नेता, बाद में एकीकृत पार्टी भाकपा(माओवादी) की केंद्रीय कमेटी के पोलित ब्यूरो सदस्य के तौर पर वे अपनी गिरफ्तारी के समय तक कार्य करते रहे. वे 2009 में गिरफ्तार होकर जेल गए. जेल में रहते समय एवं दस साल बाद जेल से रिहा होने के बाद भी इस पूरी समयावधि के दौरान वे यही कहते आए कि वो माओवादी पार्टी के सदस्य नहीं हैं, पुलिस उन पर माओवादी होने का आरोप लगा रही है, उन्हें कई माओवादी केसों में फंसाया गया है. इस बात को उन्होंने न सिर्फ अपनी किताब में लिखा बल्कि विगत में पत्रकार वार्ताओं में भी वे कहते आए. एक क्रांतिकारी पार्टी की सर्वोच्च कमेटी में काम करने वाले, गिरफ्तार होते ही सच को दबाते हुए शासक वर्गों की शाबासी पाने के लिए उनके द्वारा जो उतावलेपन दिखाया जा रहा है, उससे यह स्पष्ट हो रहा है कि उन्होंने ईमानदारी खो दी है. बेईमान व्यक्ति समाज के लिए क्या संदेश दे सकते हैं? उसका क्या मूल्य रहेगा?

जेल से बाहर आने के बाद उन्होंने पार्टी के साथ संपर्क नहीं किया. उतना ही नहीं, पार्टी के साथ चर्चा किए बगैर ही पार्टी के सिद्धांत और राजनीति के खिलाफ एवं पार्टी संविधान और जनवादी केंद्रीयता के उसूल व अनुशासन का उल्लंघन कर, इस किताब को प्रकाशित किया और विमोचन किया. अच्छे मूल्यों के बारे में बताने वाले कोबाड के भीतर के अराजकतावादी रुझानों का यह खुलासा करता है. एक ऐसे समय में जब मोदी के नेतृत्व में ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी भाजपा सरकार समाधान–प्रहार के क्रूर हमलों के जरिए माओवादी पार्टी का सफाया करने गंभीर प्रयास कर रही है, इस किताब के जरिए कोबाड जनता के बीच में निराशा पैदा कर, शासक वर्गों की सेवा में डूबे रहना चाहते हैं. इसके साथ ही स्वयं के बचाव में उन्होंने उक्त किताब में माओवादी पार्टी पर कई झूठे आरोप लगाए. जब तक जेल में थे, अपराधजगत व जेल

अधिकारियों के साथ कंधे पर कंधा डालकर सुविधाभोगी जीवन बिताकर, बेशर्मी के साथ अपनी किताब में उनका गुणगान किया. पार्टी पर कोबाड यह बेबुनियाद आरोप लगा रहे हैं कि जेलों में बंद माओवादी कैदी माफियाओं के साथ मिले हुए हैं, कुछेक बार उनका नेतृत्व भी करते हैं. नक्सलबाड़ी के जमाने से जेलों में क्रांतिकारियों द्वारा स्थापित संघर्ष की परंपराओं, बलिदानों को लज्जित करते हुए पार्टी पर नीच हमले कर रहे हैं. कोबाड ने जेल में निस्वार्थ भाव से साधारण कैदियों के हकों के लिए जेल अधिकारियों के खिलाफ कोई एक दिन भी आंदोलन नहीं किया. ऊपर से उनके द्वारा व्यक्तिगत तौर पर कई रियायतें प्राप्त की. क्या ऐसे व्यक्ति को माओवादी कैदियों के बारे में बात करने का हक भी रहेगा? वो माओवादी पार्टी पर यह निंदापूर्वक आरोप लगा रहे हैं कि उसे जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है, पार्टी घूमंतू दस्तों के रूप में काम कर रही है. यह शासक वर्गों के सुर में सुर मिलाने के सिवाय और कुछ नहीं है.

कोबाड घैंडी ने अपनी किताब में मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद के सिद्धांत और राजनीतिक व्यवहार पर अपनी आलोचना का निशाना साधा है. मार्क्स, लेनिन, स्तालिन, माओ के नेतृत्व में समाजवाद के लिए जारी संघर्ष क्यों हार गया? चीन में माओ के निधन के बाद सांस्कृतिक क्रांति के विफल होने के कारण क्या हैं? मार्क्स की शुरुआती सैद्धांतिक रचनाओं में मानवतावादी मूल्य प्रकट हुए थे परंतु बाद के समय में आचरणात्मक आंदोलनों के आगे आने के कारण वे दब गए. कोबाड ने अपनी पुस्तक में लिखा कि लेनिन, स्तालिन, माओ के नेतृत्व में स्थापित समाजवादी राज्यों में इन मानवतावादी मूल्यों को महत्व नहीं दिया गया, आर्थिक निर्णायकवादी सिद्धांतों का ही प्रभुत्व रहा, कम्युनिस्ट पार्टियों में भी जनवादी केंद्रीयता के जरिए तानाशाही का ही प्रभुत्व रहा, इसी कारण से समाजवाद पीछे हट की स्थिति में पहुंच गया. उन्होंने यह कहते हुए कि विश्व युद्ध के समय में ही क्रांतियां सफल हुईं, शांतिकाल में क्रांतियां सफल नहीं हुईं, इतिहास को तोड़–मरोड़कर पेश कर रहे हैं. जबकि मार्क्सवाद ने यह बताया कि सत्ता और मुद्रा से पिंड छुड़ाना साम्यवादी समाज में ही संभव है. उसने यह भी बताया कि उस हेतु कौनसा रास्ता अपनाया जाए. फिर भी कोबाड यह कहते हुए कि समाज में सत्ता और मुद्रा ही प्रधान समस्याएं हैं, उन्हीं के कारण कई अनहोनियां घट रही हैं, जनता को सत्ता के लिए संघर्ष से दूर करने का प्रयास कर रहे हैं. इस तरह वे मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद के बुनियादी उसूलों का ही विरोध कर रहे हैं. करीबन 175 सालों से मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद ने बुर्जुआ सिद्धांत पर जो सैद्धांतिक–राजनीतिक हमलें किए, व्यवहार में जो जीतें हासिल की, उन सबसे इनकार करते हुए सर्वहारा वर्ग एवं समस्त उत्पीड़ित जनता के साथ वे गद्दारी कर रहे हैं.

कोबाड यह आलोचना कर रहे हैं कि भारत देश में जब से कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ, तबसे अब तक उसने क्या हासिल किया? देश का क्रांतिकारी आंदोलन क्यों पिछड़ गया है? क्रांतिकारी पार्टियां जांच–पड़ताल किए बगैर निश्चयवाद के साथ यह कहती हैं कि देश में क्रांति अवश्यंभावी है. वो पुराने समय में कम्युनिस्टों की जो आलोचना की जाती थी, उसी को दोहरा रहे हैं कि वे मजदूर वर्ग के भीतर इस दौरान हुए बदलावों को नजर में नहीं रखते हैं, जाति सवाल को वर्ग विभाजन के दायरे में समेटकर औद्योगीकरण के जरिए, क्रांति के जरिए जातीय भेदभाव स्वयमेव समाप्त हो जाने की बात कहते हैं. दरअसल देश की ठोस समस्याओं का ठोस विश्लेषण कर, वैज्ञानिक तौर पर जब का तब समझ को बेहतर बनाते हुए पार्टी आवश्यक दस्तावेज तैयार करती आ रही है. कोबाड ने जिन मुद्दों को उठाया है, उन सभी के जवाब पार्टी दस्तावेजों में मौजूद हैं. माओवादी पार्टी में लंबे समय तक एक नेता के तौर पर कार्य करने एवं इन दस्तावेजों को तैयार करने के लिए आयोजित चर्चाओं में शामिल होने के बावजूद सच्चाई पर परदा डालना उनके अधःपतित होने का सबूत है.

हमें यह देखना होगा कि क्रांतिकारी राजनीति को तिलांजलि देकर बुर्जुआई कीचड़ में अब कोबाड क्यों उतरे हैं? कोबाड संपन्न मध्य वर्गीय परिवार से आए. वे वर्गीय चरित्र के मुताबिक राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग से पार्टी में भर्ती हुए. कॉरपोरेट दुनिया में पले–बढ़े. डून स्कूल में उनकी पढ़ाई हुई. कुछ समय के लिए उन्होंने लंदन में शिक्षा ग्रहण की. लंदन में पढ़ते समय ही भारत में बसंत के वज्रनाथ से प्रभावित होकर वे क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हुए. महाराष्ट्र में क्रांतिकारी पार्टी के निर्माताओं में से एक के तौर पर वे आगे आए. लंदन के उस ग्रंथालय में जहां मार्क्स ने अध्ययन किया था, कोबाड ने मार्क्सवाद–लेनिनवाद –माओवाद के सिद्धांत का अध्ययन किया. परंतु ठोस परिस्थितियों का ठोस विश्लेषण करने के मामले में जोकि मार्क्सवाद के बुनियादी उसूलों का हिस्सा है, उनके भीतर दार्शनिक तौर पर द्वंद्वात्मक पद्धति की जगह कठमुल्लावादी विचार हावी रहे. ये विचार उनके द्वारा राजनीतिक तौर पर अक्सर कथनी में वामपंथी एवं करनी में दक्षिणपंथी भटकावपूर्ण विचारों के रूप में अभिव्यक्त होते थे. ये विचार पार्टी में गुटबाजी के लिए रास्ता बनाते थे. आंतरिक संघर्ष के जरिए कोबाड को सुधारने के लिए पार्टी ने गंभीर प्रयास किए. किंतु सैद्धांतिक, राजनीतिक भटकावों से वे स्वेच्छापूर्वक बाहर नहीं आ सके. देश में माओवादी पार्टी की स्थापना के साथ ही शासक वर्गों द्वारा तीव्र दमन का प्रयोग जिसके

तहत गिरफ्तार हो जाने के बाद उनके भीतर घर कर गए गलत विचार उनके लेखों में व्यक्त हो गए थे. स्वयं को सुधारने के लिए किसी व्यक्ति के लिए यह जरूरी है कि वह वर्ग संघर्ष और जनयुद्ध में शामिल होवें व ठोस परिस्थितियों का अध्ययन करें, तद्वारा मनोगतवादी विचारों में मौजूद कठमुल्लावादी गलत विचारों को सुधारे. कोबाड ने अपने 40 साल के क्रांतिकारी जीवन में इस कार्य को कम महत्व दिया. कोबाड, जैसा कि उन्होंने कहा, अंतरमुखी स्वभाव के हैं. इस कारण किसी भी विषय पर साथी कॉमरेडों के साथ विस्तृत रूप से चर्चा करने, विचारों का आदान–प्रदान करने में उन्होंने रुचि नहीं दिखायी. अपने लंबे क्रांतिकारी जीवन को वे सर्वहारा वर्गीय विचारों के अनुरूप बदल न सके. तथापि क्रांतिकारी आंदोलनों में उत्पन्न होने वाले ज्वार–भाटे का मार्क्सवादी पद्धति के मुताबिक विश्लेषण नहीं कर सके. ऐसे मौकों पर अक्सर निराशावाद का शिकार होना, पार्टी गलतियों का एकांगी ढंग से अति आकलन करने की वजह से मन में पार्टी के प्रति विद्वेष बढ़ाना, इस तरह के भटकाव कई बार प्रस्फुटित हुए जो उनके अंदर के पेट्टी बुर्जुआ घमंड को दर्शाते हैं. आखिर उन्हीं का शिकार होकर मार्क्सवाद–लेनिनवाद –माओवाद के सिद्धांत का विरोध करने के हद् तक वे चले गये. जेल जीवन के बाद वे फिर से कॉरपोरेट दुनिया में चले गए. इसीलिए 50 साल बाद सड़ी–गली साम्राज्यवादी, अर्ध–औपनिवेशिक व अर्ध–सामंती व्यवस्था में अपनी वापसी की वे बढ़ाई कर रहे हैं. क्रांतिकारी आंदोलन में सृजनात्मकता के खत्म होने का उन्होंने रोना रोया. वे गर्व के साथ यह कह रहे हैं कि कॉरपोरेट दुनिया ही उनके विचारों को गतिशीलता प्रदान करेगी. यह सच है कि पहाड़ से लुढ़का पत्थर पाताल पहुंचने तक सफर करता है.

कोबाड द्वारा प्रस्तुत विचार इतिहास में कोई नए नहीं हैं. मार्क्सवाद को स्वीकार करते हुए ही मार्क्सवाद के बुनियादी उसूलों को खारिज करने वाले बेर्नस्टीन, मानवतावादी मार्क्सवादियों तथा डांगे के बगल में ही कोबाड पहुंच गए. मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद के बुनियादी उसूलों को पलटने, शासक वर्गों के पैरों में गिरकर पार्टी पर कीचड़ उछालने, वर्ग संघर्ष की जगह वर्गसमरसता के विचारों का विकल्प चुनकर भाववादी आध्यात्मिक गुरू बन जाने, पार्टी अनुशासन का घोर उल्लंघन करने की वजह से पार्टी संविधान के मुताबिक केंद्रीय कमेटी कोबाड घैंडी की पार्टी सदस्यता रद्द कर उन्हें पार्टी से बहिष्कार करती है.

प्यारे लोगों!

हमारी पार्टी जनता, जनवादियों, बुद्धिजीवियों व क्रांति के हमदर्दों से अपील करती है कि वे कोबाड द्वारा प्रस्तुत क्रांतिविरोधी, निरा अवसरवादी राजनीति, विचारों व प्रस्तावनाओं को खारिज करें. निराशावाद से ग्रसित, क्रांतिकारी स्फूर्ति के समाप्त होकर शासक वर्गों की विचारधारा के बगल में बैठने वाले कोबाड की अवसरवादी राजनीति को खारिज करते हुए उसका भंडाफोड़ करने केंद्रीय कमेटी पार्टी कतारों का आह्वान करती है. चरम स्वार्थ के साथ क्रांतिकारी आंदोलन से भागकर सड़े–गले समाज का हिस्सा बनने वालों में कोबाड कोई पहला व्यक्ति नहीं हैं. ऐसे लोगों को इतिहास के कूढ़ेदान में फेंककर क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ता आया है. साम्यवादी समाज की स्थापना के लक्ष्य के साथ मजदूर वर्ग के नेतृत्व में तमाम उत्पीडित जनता को गोलबंद करते हुए हमारी पार्टी विजय की ओर सीढ़ी–दर–सीढ़ी आगे बढ़ती रहेगी.

नोटः कोबाड घैंडी की किताब ''फ्राक्चर्ड् फ्रीडम ए जेल मेमोयर'' का विस्तारपूर्वक जवाब हम जल्द प्रकाशित करेंगे.

सिलगेर आंदोलनकारियों की गिरफ्तारी

विदित हो कि सिलगेर में 12 मई, 2021 से कैंप विरोधी आंदोलन लगातार जारी है. इस आंदोलन को रोकने के लिए शासन–प्रशासन कई तरह कोशिश कर रहा है. आंदोलनरत जनता पर दमन का इस्तेमाल कर रहा है. छत्तीसगढ़ राज्य के 21वें स्थापना दिवस के मौके पर सिलगेर में मूलवासी बचाओ मंच ने 1 नवंबर, 2021 को सभा का आयोजन किया था. इस सभा की जानकारी सोशल मीडिया में पहले से ही वायरल कर दिया गया था. सभा और रैली की जानकारी आम लोगों को भी थी. कई बड़े शहरों से वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता, वकील और नागरिकों ने इस सभा में भाग लिया. सुकमा जिले के दूरदराज गांवों से भी कई लोग इस सभा में शामिल हुए थे. सभा के समाप्त होने के बाद 2 नवंबर की सुबह 9 बजे लगभग 55 की संख्या में साइकिल से वापस लौटते ग्रामीणों को पुलिस बलों ने मोरपल्ली के जंगलों में रोक लिया. वहां से उन्हें जबरन चिंतलनार ले गए. वहां उनकी फोटो ली गई. पूछताछ के बाद 3 नवंबर को 43 लोगों को छोड़ दिया गया. 1 महिला, 3 नाबालिग समेत कुल 12 लोगों को सुकमा ले जाया गया. इनमें से 8 लोगों को नक्सली बताकर उनके पास से विस्फोटक व विस्फोटक बनाने में उपयोग होने वाली सामग्री बरामद होने का झूठा केस बनाकर उन्हें जेल भेज दिया. जेल भेजने से पहले किसी को भी मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश नहीं किया गया.

इस तरह निर्दोष ग्रामीणों को गिरफ्तार करने के विरोध में बेला भाटिया सहित कई सामाजिक कार्यकर्ताओं व संगठनों ने आवाज उठायी और जनता ने आंदोलन किया.

पुलिस बलों और उनके परिजनों का जबर्दस्त आंदोलन!

आमतौर पर अपनी समस्याओं के हल के मकसद से आंदोलनरत लोगों का दमन करने के लिए सरकार पुलिस का सहारा लेती है. हालांकि निचले स्तर के पुलिस बल भी कई समस्याओं को झेल रहे हैं. अपने आला आधिकारियों की प्रताड़ना और अन्य समस्याओं को लेकर कई बार निचले स्तर के पुलिस जवान आवाज उठा रहे हैं. अपनी समस्याओं से परेशान पुलिस के कई कर्मचारी मानसिक संतुलन खोकर आत्महत्याएं कर रहे हैं और अपने साथियों को गोलियों से भून रहे हैं. ऐसे पुलिस बल आज आंदोलनरत हो गए.

ज्ञात हो कि जुलाई, 2018 में छत्तीसगढ़ राज्य में पुलिस परिवारजनों ने अपनी कई मांगों को लेकर आंदोलन किया. लेकिन सरकार ने पुलिस परिवारजनों पर जुल्म बरपाया और आंदोलन के जिम्मेदार ठहराते हुए कई पुलिस वालों को गिरफ्तार व निलंबन किया. इस तरह दमन करने के साथ–साथ तत्कालीन भाजपा सरकार ने कुछ वादें भी किए. हालांकि तीन साल पूरे हो गए उनकी समस्याओं का कोई हल नहीं मिला. लगातार ज्ञापन, निवेदन करने के बाद भी सारी मांगें लंबित हैं. ऐसी हालत में 7 दिसंबर, 2021 को पुलिस परिवार के सदस्य फिर एक बार आंदोलनरत हो गए. महिलाओं व बच्चों समेत लगभग तीन हजार लोगों ने रायपुर पहुंच कर आंदोलन शुरू किया. इस दौरान उन्होंने निचले स्तर के पुलिसवालों पर शोषण बंद होने, उनसे पुलिस अधिकारियों द्वारा किए जा रहे घरेलू तथा अपने निजी कार्य पर रोक लगाने, वेतन विसंगतियों को दूर करने, अन्य सरकारी विभाग के कर्मचारियों की तरह सुविधाएं देने, पुलिसवालों को भी साप्ताहिक अवकाश देने के साथ काम का समय निर्धारित करने आदि मांगों को लेकर जंगी प्रदर्शन किया. इस दौरान जब वे पुलिस मुख्यालय और मंत्रालय घेरने जा रहे थे, पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया. इस दौरान पुलिस बलों ने महिलाओं के साथ मारपीट की जिसमें कई महिलाओं को चोट आईं. इसके बावजूद महिलाएं आंदोलन पर अड़िग रहीं. देर रात तक आंदोलन कर रही महिलाओं और बच्चों को न पानी मिला और न ही खाना मिला. इसके बावजूद वे आंदोलन करते रहे.

अपने परिजनों के साथ किए गए अत्याचार के खिलाफ और अपने मांगों को लेकर 8 दिसंबर, 2021 को सहायक आरक्षक, गोपनीय सैनिक व होमगार्ड के जवानों ने अपने हथियार, कैंप व थाने छोड़ कर आंदोलन शुरू किया. दो दिन के आंदोलन के बाद अपनी मांगों को पूरी करने के लिए एक महीने का अल्टीमेटम देकर उनके आंदोलन को समाप्त कर दिया.

सिर्फ छत्तीसगढ़ में ही नहीं बल्कि झारखंड व उत्तर प्रदेश में भी हाल ही में सहायक आरक्षक व पुलिस जवानों द्वारा आंदोलन किए गए हैं और उन पर सरकार द्वारा कहर बरपाया गया है.

इन आंदोलनों के परिप्रेक्ष्य में निचले स्तर के पुलिस बलों और उनके परिजनों को समझना चाहिए कि उनकी समस्याओं के प्रति सरकार कितनी असंवेदनशील है. लुटेरे शासक वर्ग अपने शोषण–उत्पीड़न को बनाए रखने के लिए ही पुलिस व अन्य सरकारी सशस्त्र बलों का सिर्फ एक औजार के रूप में इस्तेमाल करते हैं. आला अधिकारियों की प्रताड़ना, सरकार के नजरंदाज और जनता की नफरत को झेलते हुए गुलामी व तनावपूर्ण जिंदगी जीने के बजाए आत्मसम्मान के साथ जीने के रोजगार के लिए उन्हें संघर्ष करना चाहिए.

सीआरपीएफ जवान ने अपने ही 4 साथियों को मार डाला!

सुकमा जिले के कोंटा विकासखंड के लिंगनपल्ली स्थित सीआरपीएफ के 217 बटालियन कैंप में 7 नवंबर, 2021 को एक जवान ने अपने साथियों पर एके–47 से फायरिंग कर दी. इसमें 4 जवानों की मौत हो गई, जबकि 3 जवान घायल हुए.

आरक्षक की खुदकुशी

कांकेर जिले के सिंगारभाट स्थित पुलिस लाइन में पुलिस आरक्षक खेमन मंडावी (36) ने अपने शासकीय आवास में फांसी लगाकर अत्माहत्या कर ली. उसकी पत्नी और 8 माह का बच्चा है.

जवानों को दिया जा रहा है घटिया खाना!

कांकेर में पदस्थ छत्तीसगढ़ आर्म्ड फोर्स के जवान बुटू सांडे का एक वीडियो 6 दिसंबर से वायरल हुआ है. इसमें जवान यह कहता नजर आ रहा है कि दाल और सब्जी पानी की तरह मिल रही है. इंसानों को जानवरों की तरह खाना दिया जा रहा है. जवान यह भी कहा है कि उसने कई बार अधिकारियों को इसकी शिकायत की लेकिन किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया.

लेकिन इस वीडियो के बारे में पूछे जाने पर सीएएफ के अधिकारी ने कहा कि जवानों से भोजन की गुणवत्ता को लेकर किसी प्रकार की शिकायत अभी तक नहीं मिली जोकि कोरा झूठ है.

दरअसल निचले स्तर के सरकारी सशस्त्र बलों को दिए जाने वाले खराब खाने के बारे में इसके पहले भी कई जवानों ने आवाज उठायी थी. ❍

कांकेर जिले में जनसंघर्ष!

स्वास्थ्य सुविधा व अन्य मांगों को लेकर जनता ने की रैली

कांकेर जिला, कोयलीबेड़ा ब्लॉक के पानीडोबीर, आलपरस और केसेकोडी पंचायतों की जनता ने स्वास्थ्य सुविधा, वनोपजों का समर्थन मूल्य बढ़ाने और कोयलीबेड़ा विकासखंड के 18 पंचायतो के 68 गांवों को सुखाग्रस्त घोषित करने आदि मांगों को लेकर 4 अक्टूबर को पानीडोबीर बाजार में और 10 अक्टूबर को केसेकोडी बाजार में रैलियां निकाल कर आम सभाओं को आयोजित किया.

सिलगेर आंदोलन के समर्थन में मशाल जुलूस

विगत 5 महीनों से लगातार जारी सिलगेर आंदोलन के समर्थन में उत्तर बस्तर डिविजन, रावघाट एरिया की क्रांतिकारी जनता ने 3 अक्टूबर से 11 अक्टूबर, 2021 तक पंचायत स्तर के 3 और गांव स्तर के 5 मशाल जुलूस निकाले. इस मौके पर सिलगेर हत्याकांड की घोर निंदा करते हुए अपराधी अधिकारियों को कड़ी सजा देने की मांग की गई.

शिक्षा व बेरोजगारी समस्या को लेकर आंदोलन

शिक्षा क्षेत्र से संबंधित और बेरोजगारी समस्या को लेकर 20 अक्टूबर, 2021 को कोयलीबेड़ा ब्लॉक में पालक–बालक संघर्ष समिति और बेरोजगार संगठन के नेतृत्व में आमसभा व रैली का संचालन किया गया.

इस आमसभा व रैली में 2000 से अधिक बेरोजगार, छात्र नवजवान, महिला व पुरुष ने जोरशोर व उत्साह के साथ शिरकत की.

इस दौरान कॉलेजों व छात्रवासों में सीटें बढ़ा दी जाए, 33 प्रतिशत से 100 प्रतिशत अंक लाने छात्र–छात्राओं को रेगुलर कॉलेजों में भर्ती किया जाए, अनियमित कर्मचारियों को नियमित किया जाए व वेतन बढ़ाया जाए, नये स्कूल व कॉलेज खोले जाए, उच्च शिक्षा में फीस शासन ही वहन करें, वैज्ञानिक शिक्षा नीति पर अमल किया जाए, नयी शिक्षा नीति को रद्द किया जाए, सभी भर्तियां रोजगार कार्यालय द्वारा की जाए, सभी युवाओं को रोजगार दिया जाए, सभी बेरोजगारों को न्यूनतम वेतन 20 हजार दिया जाए आदि मांगों को आंदोलनकारियों ने उठाया.

इन मांगो को लेकर कलेक्टर व राज्यपाल के नाम पर तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा गया. इन मांगों को तत्काल पूरा नहीं करने पर उग्र आंदोलन करने की चेतावनी दी गई.

लखिमपुर में किसानों की निर्मम हत्या का विरोध!

उत्तर बस्तर डिविजन, कांकेर जिला, कोयलीबेड़ा ब्लॉक के परलकोट क्षेत्र के चितरम में अखिल भारतीय किसान मोर्चा के आह्वान के अनुसार 15 अक्टूबर, 2021 को मोदी, अमितशाह, योगी के पुतलें दहन किए गए. इस मौके पर रावण के पुतले दहन को बंद करने की मांग भी उठायी गई.

छोटेबेठिया समेत 68 गांवों ने किया प्रदर्शन

कांकेर के भानुप्रतापुर, अंतागढ़ व पखांजुर को जिला बनाने के विरोध में कोयलीबेड़ा ब्लॉक के ग्राम छोटेबेठिया में रैली निकाली गई. इस रैली व सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि पखांजुर को जिला बनाने के नाम पर आदिवासियों को गुमराह किया जा रहा है. इसके जिम्मेदार पूर्व विधायक मंगतु पवार व सुखरंजन उसेंडी अपनी राजनीतिक रोटी सेंकने पर तुले हुए हैं. इस रैली प्रदर्शन में परलकोट क्षेत्र के 68 गांवों के ग्रामीणों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया. इन 4 सूत्रीय मांगो को लेकर राज्यपाल के नाम तहसीलदार को ज्ञापन सौंप दिया गया.

आदिवासियों को अलग धर्म कोड देने की मांग!

कांकेर जिला, कोयलीबेड़ा ब्लॉक, परलकोट क्षेत्र के सर्व आदिवासी समाज की छोटेबेठिया इकाई के नेतृत्व में 18 नवंबर को माचपल्ली गांव में और 26 नवंबर, 2021 को भारतीय संविधान दिवस के अवसर पर संगम गांव में आमसभाओं व विशाल रैलियों को आयोजित किया गया. इस दौरान घोषणा की गई है कि आदिवासी समुदाय ब्राह्मणीय हिंदुत्व की जाति व्यवस्था का हिस्सा नहीं है. आदिवासी हिंदू नहीं है.

इसलिए 2022 में होने वाली जनगणना में अलग से आदिवासी/मूलनिवासियों के लिए धर्म कोड़ देने की मांग की गई. इस मांग को लेकर जुझारू व व्यापक आंदोलन करने का एलान किया गया. आम सभा व रैली में 3000 से अधिक जनता शामिल हुई है. ❍

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं का आंदोलन

प्रदेशभर की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाएं भी और एक बार आंदोलनरत हो गईं. उन्होंने 6 सूत्रीय मांगों को 10 से 14 दिसंबर, 2021 तक 5 दिवसीय अपने–अपने परियोजना स्थल पर धरना प्रदर्शन किया. बाद में 15 व 16 दिसंबर को राजधानी रायपुर में महारैली का आयोजन किया.

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति अंतर्राष्ट्रीय भाईचारा!

24 नवंबर, 2021 को अंतर्राष्ट्रीय कमेटी (ICSPWI) द्वारा मनाया गया वैश्विक कार्य दिवस!

हमारे भारत के क्रांतिकारी आंदोलन पर शासक वर्गों द्वारा चलाए जा रहे सिलसिलेवार प्रतिक्रांतिकारी अभियानों के तहत हाल ही में शुरू किए गए नये 'निर्णायक हमला समाधान–प्रहार–3' की निंदा करते हुए और भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के समर्थन में 'इंटरनेशनल कमेटी टु सपोर्ट पीपुल्सवार इन इंडिया' (आईसीएसपीडब्ल्यूआई–भारत के जनयुद्ध का समर्थन करने वाली अंतर्राष्ट्रीय कमेटी) ने हमारे प्यारे नेता अमर शहीद कामरेड मल्लोजुला कोटेश्वरलु की शहादत की 10वीं बरसी और नीलंबूर में शहीद हुए कामरेड्स कुप्पु देवराज व अजिता की 5वीं बरसी के अवसर पर 24 नवंबर को विश्वभर में 'इंटरनेशनल डे आफ एक्शन' (अंतर्राष्ट्रीय कार्य दिवस) का आह्वान किया. उस आह्वान के तहत कई देशों ने सर्वहारा वर्ग की अंतर्राष्ट्रीयता को ऊंचा उठाते हुए अपने–अपने देशों में बहुत ही सक्रिय रूप से विरोध कार्यक्रम चलाए. विश्व में इटली से लेकर ट्युनीशिया तक, इक्वडार से लेकर कनाडा तक, अमेरिका से लेकर जर्मनी तक, ब्राजील से लेकर डेनमार्क तक, कोलंबिया से लेकर नार्वे तक, स्पेइन से लेकर स्विट्जरलैंड तक, आइरलैंड से लेकर मेक्सिको तक, फिलीपींस से लेकर अफ्गानिस्तान तक, तुर्की से लेकर फ्रांस व ऑस्ट्रेलिया तक कई देशों में भारत के जनयुद्ध व जनसंघर्ष के समर्थन में विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन हुआ. इस अवसर पर यूरोपीय देशों के माओवादी पार्टियों व संस्थाओं द्वारा भारत के जनयुद्ध को ऊंचा उठाते हुए अपनी–अपनी भाषाओं में प्रचार सामग्री का प्रकाशन–प्रसारण किया गया. कई देशों ने घोषणाएं की हैं कि वे भारत के जनयुद्ध के समर्थन में खड़े हेंगे. विभिन्न देशों में संचालित इस कार्य दिवस का ब्योरा 15 दिसंबर को आईसीएसपीडब्ल्यूआई द्वारा प्रकाशित किया गया. उसे 'प्रभात' पाठकों के लिए संक्षिप्त रूप से पेश कर रहे हैं.

15 दिसंबर को आईसीएसपीडब्ल्यूआई द्वारा प्रकाशित रिपोर्टः

नये हत्यारे ऑपरेशन 'प्रहार–3' के खिलाफ भारत के जनयुद्ध और भाकपा (माओवादी) के समर्थन में विश्वभर में संचालित अंतर्राष्ट्रीय कार्य दिवस सफलतापूर्वक संपन्न हुआ.

गेलीसिया व इटली की आईसीएसपीडब्ल्यूआई कमेटियों द्वारा संयुक्त रूप से जारी किए गए एक्शन डे की अपील का स्वागत करते हुए, कई देशों की क्रांतिकारी शक्तियों ने जहां–तहां विभिन्न रूपों में भाईचारा कार्यक्रमों का आयोजन किया. कुछ देशों में 24 नवंबर के बाद भी भारत के जनयुद्ध के प्रति भाईचारा प्रकट करते हुए कार्यक्रम जारी किए गए.

इटली की राजधानी रोम नगर में स्थित भारतीय दूतावास कार्यालय के सामने और मिलन शहर में स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास के सामने रैलियां की गईं. इनमें कई प्रवासी भारतीय शामिल हुए. सर्वहारा यूनियन के सदस्य के रूप में संगठित हुए भारतीय सर्वहारा के प्रतिनिधियों ने एक बैठक का आयोजन करके भारत देश की परिस्थिति के बारे में चर्चा की. भारत देश में विगत एक साल से लड़ रही किसान जनता और भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में सशस्त्र संघर्ष कर रही क्रांतिकारी जनता के प्रति उन्होंने अपना भाईचारा प्रकट किया.

खास बात यह है कि एक साम्राज्यवादी देश में पहली बार सर्वहारा यूनियन के 'स्लाय कोबास' मजदूरों ने 24 नवंबर को कई बैठकों को आयोजित करके भारत के जनयुद्ध के समर्थन में अपना भाईचारा प्रकट किया. इसके पहले ही इटली में यह अभियान जी 20 शिखर सम्मेलन के विरोध में किए गए प्रदर्शनों के साथ–साथ शुरू हुआ. 27 नवंबर को जब मोदी ने रोम नगर का दौरा किया था, लाखों महिलाओं द्वारा प्रहार हमले के विरोध में भारी प्रदर्शन भी किया गया.

गेलीसिया में कमेटी द्वारा चलाये गये आंदोलन कार्यक्रम में सभी शहरों ने हिस्सा लिया.

उसी तरह स्पेइन में पहली बार इस आह्वान को लेकर विभिन्न शहरों की मार्क्सवादी–लेनिनवादी–माओवादी युवा ताकतों ने विरोध कार्यक्रम को आयोजित किया. जर्मनी में कई नगरों में सभाओं, बड़े पैमाने पर दीवार लेखनों व बैनरों द्वारा प्रचार किया गया.

आइरलैंड, ग्रेट ब्रिटेन, डेनमार्क, फिनलैंड, स्वीडन, नार्वे, आस्ट्रिया, फ्रांस व कनाड़ा में भी इसी तरह कार्यक्रमों का आयोजन हुआ. स्विट्जरलैंड में एक फाइटिंग एक्शन भी किया गया. इसका कमेटी जोश–खरोश के साथ स्वागत करती है.

तुर्की कामरेडों ने भारत के जनयुद्ध और फिलीपिनो कामरेडों का तहेदिल से अभिवादन किया. विश्व क्रांति का एक लाल केंद्र माने जाने वाले ब्राजील से लातीन अमेरिका तक भाईचारा प्रकट किया गया. कोलंबिया, मेक्सिको, चिली व इक्वडार में विभिन्न तरीकों में भाईचारा कार्यक्रम हुए.

अफ्रीका के ट्युनीशिया में जनयुद्ध के समर्थन में लाल झंडा लहर गया. उस महाद्वीप में जनयुद्ध के समर्थन

में रास्ता खुल गया. एशिया में अफ्गानिस्तान व नेपाल में अंतर्राष्ट्रीय भाईचारा की हवा फैल गई है. यह कई अन्य देशों में विभिन्न रूपों में पहुंच गयी है. मोदी को मजबूत समर्थन देने वाले अमेरिकी साम्राज्यवाद के गर्भ में, विभिन्न राज्यों में भारत व अन्य देशों के जनयुद्धों के प्रति भाईचारा प्रकट किया गया.

यह एक महत्वपूर्ण दिवस है. भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी द्वारा 24 नवंबर को अंतर्राष्ट्रीय अभियान को बड़े पैमाने पर सफल बनाने की अपील करते हुए प्रेस विज्ञप्ति दी गई, जिससे इस कार्यक्रम को और प्रेरणा मिली. अंतर्राष्ट्रीय कमेटी द्वारा पिछले 10 वर्षों में दिए गए समर्थन और 24 नवंबर को एक व्यापक संघर्षरत दिन बनाने वाले इस आह्वान को ऊंचा उठाया गया. क्रांतिकारी हमदर्दों, वामपंथी, जनवादी, देशभक्त संस्थाओं, हिंदुत्व–विरोधी धर्मनिरपेक्ष शक्तियों को, मजदूर वर्ग, किसानों, छात्रों, बुद्धिजीवियों, महिलाओं, दलितों व आदिवासियों को भाकपा (माओवादी) द्वारा यह आह्वान दोबारा पहुंचाया गया.

यह भारत के जनयुद्ध के हित के लिए ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से जुड़ा हुआ है. भारत में जारी वर्ग संघर्ष में भारत की जनता एक ऐतिहासिक अध्याय लिख रही है. भारत देश के जनयुद्ध का विकास यह साबित कर रहा है कि साम्राज्यवादी उत्पीड़न से त्रस्त तमाम देशों में भी यह मार्ग संभव है, विश्व सर्वहारा वर्ग यह समझ रहा है कि भारत देश में और अन्य देशों में भी विभिन्न चरणों में बढ़ रहे जनयुद्ध से दक्षिण एशिया में ही नहीं, बल्कि तमाम वैश्विक साम्राज्यवादी व्यवस्था में शक्ति–संतुलन को बदला जा सकता है.

इस विश्वास के साथ ही, परिस्थिति का सावधानी से विश्लेषण कर, इस अभियान में भाग लेने वाले देशों के प्रतिनिधियों को यथासंभव एकत्रित करके जनवरी 2022 के अंत में एक अंतर्राष्ट्रीय बैठक होने वाली है. यह बैठक नए संघर्षरत दिवसों व नए भाईचारा रूपों को निर्धारित करेगी. विभिन्न देशों में गठित होने वाली कमेटियों व माओवादियों के नेतृत्व में जारी जनयुद्धों के बीच में संबंधों को मजबूत करेगी.

– फासीवादी व हत्यारा प्रहार–3 सैनिक अभियान बंद करो!
– भारत देश की संघर्षरत जनता और सशस्त्र संघर्ष में शामिल जनता का समर्थन करो!
– जनयुद्ध जिंदाबाद!
– भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिंदाबाद!
– भारतीय कामरेडों के साथ मिलकर – 'अंतिम सांस तक संघर्ष करेंगे, अंतिम जीत हासिल करेंगे'!
– सर्वहारा वर्ग की अंतर्राष्ट्रीयता जिंदाबाद!

भारत के जनयुद्ध का समर्थन करने वाली अंतर्राष्ट्रीय कमेटी

दिसंबर 2021

विभिन्न देशों के संदेश

फिलीपींस की कम्युनिस्ट पार्टी

23 नवंबर, 2021 को सीपीपी द्वारा दिए गए वक्तव्य में कहा गया है कि नरेंद्र मोदी की फासीवादी सरकार द्वारा संचालित प्रहार सैनिक अभियान के विरोध में लिए गए अंतर्राष्ट्रीय कार्य दिवस के प्रति फिलीपींस की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीपी) और न्यू पीपुल्स आर्मी (एनपीए) अपना भाईचारा प्रकट करती हैं. भारत देश की पीड़ित–दमित जनता और क्रांतिकारी शक्तियों जिनका भाकपा (माओवादी) नेतृत्व कर रही है, का फिलीपीनो जनता समर्थन करती है.

विगत के सलवा जुडुम (2005–2009), ऑपरेशन ग्रीन हंट (2009–2017), समाधान (2017) जैसे प्रतिक्रांतिकारी क्रूर अभियानों की तरह ही ऑपरेशन प्रहार भी एक दमन अभियान है. ये भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में जारी क्रांतिकारी आंदोलन का उन्मूलन करने की नाकाम कोशिशें हैं.

सरकारी हमलें तेज होने के बावजूद भारत की शोषित–उत्पीड़ित जनता अडिग रही है और राज्य के आतंक का धिक्कार कर रही है.

भारत के प्रतिघाती राज्य की क्रूरता और हमलें फिलीपींस की प्रतिघाती फासीवादी रोड्रिगो डुटर्टे सरकार द्वारा जारी आतंकी कार्यक्रम एक ही जैसे हैं. दोनों देशों की जनता पर शोषण तेज कर, अकूत संसाधनों को लूटने के लिए साम्राज्यवादी बड़े कार्पोरेटों के हितों के लिए मोदी व डुटर्टे जनता के सशस्त्र प्रतिरोध का 2022 तक उन्मूलन करने के लिए कोशिश कर रहे हैं. भारत की जनता की तरह फिलीपींस देश की उत्पीड़ित व शोषित वर्ग व तबकें राष्ट्रीय व सामाजिक मुक्ति की अपेक्षा कर रहे हैं.

भारत की जनता के आंदोलनों से फिलीपिनो जनता प्रेरणा ले रही है. डुटर्टे सरकार द्वारा अमल किए जा रहे फासीवादी हमले का सामना कर रही है.

हमारा विश्वास है कि भारत की जनता व क्रांतिकारी ताकतें अपने अधिकारों व हितों की रक्षा कर सकती हैं और फासीवादी मोदी सरकार के क्रूरतापूर्ण ऑपरेशन प्रहार को हरा सकती हैं.

कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ तुर्की–मार्क्सवादी–लेनिनवादी (टीकेपी–एमएल)

प्रहार–3 अभियान के दौरान हिंदुत्व शासक शक्तियों द्वारा भाकपा (माओवादी) पर हमलें बढ़ गए हैं. 13 नवंबर, 2021, महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिले के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में अत्यंत विषाद दिवस है. उस दिन छत्तीसगढ़ की सीमा स्थित धनोरा तहसील में एक घोर मुठभेड़ हुई. इस मुठभेड़ में पार्टी के केंद्रीय कमेटी सदस्य कामरेड दीपक और अन्य 26 कामरेड्स शहीद हुए. भाकपा (माओवादी) और शहीद हुए कामरेडों के परिवारों के प्रति टीकेपी–एमएल दुख व्यक्त करती है.

तुर्की में जनवादी अधिकारों के लिए जारी क्रांतिकारी संघर्ष में, अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग, विश्व की उत्पीड़ित जनता के जनवादी जन क्रांति और समाजवादी क्रांति में शहीद हुए कामरेडों की क्रांतिकारी स्मृतियों को जीवंत रखेंगे।

11 नवंबर को भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी (सीसी) सदस्य कामरेड किशन दा (प्रशांत बोस) और अन्य सीसी सदस्या कामरेड शीला मरांडी को झारखंड के सराईकेला शहर में गिरफ्तार किया गया. 76 वर्षीय कामरेड किशन दा आंखों की समस्याएं, प्रोस्टेट व मधुमेह बीमारियों का इलाज करवा रहे हैं. इन कामरेडों की गिरफ्तारी की टीकेपी–एमएल तीव्र निंदा करती है. हमारे कामरेडों को फौरन रिहा कर चिकित्सा उपलब्ध कराना चाहिए.

पिछले 50 वर्षों से ब्राह्मणीय हिंदुत्व शक्तियों के क्रूर हत्याकांडों का प्रतिरोध करते हुए ही भारतीय क्रांति आगे बढ़ रही है. यह अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा को, विश्व के उत्पीड़ित वर्ग को, विशेषकर भारत की जनता को ताकत व आशा दे रही है. हमारा विश्वास है कि भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में क्रांतिकारी शक्तियां इन प्रतिक्रांतिकारी हमलों का माकूल जवाब देंगी.

इटली देश के रोम नगर में 27 नवंबर को महिलाओं ने बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन को संचालित किया. इस अवसर पर ये नारें दिए गए हैं –

- **किशनजी अमर रहें!**
- **भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिंदाबाद!**
- **जनयुद्ध जिंदाबाद!**
- **आईसीएसपीडब्ल्युआई जिंदाबाद!**
- **मोदी मुर्दाबाद!**
- **साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!**

गेलीसिया में 24 नवंबर के कार्यक्रम के अनुसार व्यापक प्रचार किया गया. वीगो, एकोरुना, औरेंस, कंपोस्टेल्ला, लुगो शहरों में पोस्टर लगाए गए. सीआईजी सर्वीसेस कांग्रेस में प्रचार कार्यक्रम किया गया. 'ईस्ट्रेल्लेरा प्रोजेक्ट' में, लुगो में यह अभियान 24 नवंबर को संपन्न हुआ. वीगो में मोदी के पुतले को एक पुलिया पर लटकाया गया. गेलीसिया में संचालित इस अभियान द्वारा भारत के जनयुद्ध के समर्थन का अन्य क्षेत्रों में विस्तार हुआ और अधिक समर्थन हासिल हुआ. तथा विभिन्न सामाजिक केंद्रों में अधिवेशनों का संचालन हुआ.

आस्ट्रिया के लिंज शहर में 24 नवंबर को भाईचारा कार्यक्रम हुए. 25 नवंबर, महिलाओं पर जारी हिंसा के विरोध में अंतर्राष्ट्रीय दिवस के मौके पर मोदी सरकार के खूनी अभियान के बारे में प्रचार किया गया – इस मौके पर एक कार्यकर्ता ने लिखा है 'विशेषकर ऐसे दिवस के मौके पर विश्वभर में महिलाओं व उत्पीड़ितों के प्रति भाईचारा प्रकट किया जा रहा है. महिलाओं पर सामूहिक हिंसा, अधिक संख्या में महिलाओं व बच्चियों की हत्याएं होने वाले देशों में से भारत देश एक है. इसलिए हमने सोचा कि मोदी सरकार के अत्याचारों को पर्दाफाश करने, हमारा भाईचारा प्रकट करने और प्रहार सैनिक अभियान के खिलाफ निश्चित रवैया अपनाने के लिए यह सही अवसर है'.

चीन के एक नागरिक ने लिखा है कि अंतर्राष्ट्रीय माओवादी आंदोलन का मैं एक हमदर्द हूं. भारत के जनयुद्ध के प्रति दिलचस्पी दिखाने वाले चीनी लोगों को और अधिक समाचार देने के लिए मैं ने भाकपा (माओवादी) द्वारा कामरेड चिंतन दा का स्मरण करते हुए जारी किए गए वक्तव्य का अनुवाद किया. मेरा विश्वास है कि सारांश में मेरा अनुवाद सही ही होगा.

लाल सलाम के साथ,

चीनी मित्र

माड डिविजन में किसानों का आंदोलन

धान का समर्थन मूल्य 3200 रुपये करने, कर्ज माफ करने, फसल के नुकसान पर उचित मुआवजा देने, पूंजीपति–व्यापारियों की चीजों में बढ़ोत्तरी कम करने, सभी वनोपज के मूल्यों को बढ़ाने आदि छह सुत्रीय मांगों को लेकर माड़ क्षेत्र के 25 गांवों के हजारों ग्रामीणों ने 21 नवंबर, 2021 को ओरछा नारायणपुर मार्ग पर चक्काजाम व धरना दिया. भूमकाल सर्व आदिवासी किसान मोर्चा के बैनर तले यह आंदोलन किया गया. इस आंदोलन में सुबह 5 बजे से ही कड़ाके की ठंड में हजारों ग्रामीण अपने पारंपरिक हथियार तीर–धनुष, कुल्हाड़ी लेकर शामिल हुए. अपने दुधमुंहे बच्चों को लेकर महिलाओं ने भी जोर–शोर इस आंदोलन में भाग लिया.

भारत के जनयुद्ध के प्रति अंतर्राष्ट्रीय भाईचारा!